FOREWORD

I have seen Dr. Samadi's book on Iranian Culture. That he should have written this book in Hindi is, in itself, very creditable. This is perhaps the first book on the subject in Hindi. Now that the History and Culture of the Asian Peoples has come in as a subject of study in the University of Lucknow, students will naturally look for text-books. As Hindi is increasingly becoming the medium of instruction and examination in the University of Lucknow and elsewhere, the demand of good text-books in Hindi on all subjects is also increasing. Dr. Samadi's book has come at the right time. It is, of course, not easy to have in one single book an exposition of the history and culture of all the Asian peoples. The work has to be done in parts. Dr. Samadi has taken up Iran for treatment and with his knowledge of Persian and Arabic and an inside understanding of Islam, he is eminently fit to expound Iranian Culture to University students.

Dr. Samadi has taken a wide view of his subject. Among the topics included in his book are the physical features and the flora

and fauna of Iran, the ethnic elements in the population, influence of foreign countries such as Egypt, Phoenicia, and Assyria on Iran, the arts and crafts of Persia, her myths and legends, the organization of the Persian empire under the *Achaemenian dynasty, the Parthian rule* and its effects, comparison between the Parthian and Sassanian regimes, progress during the Sassanian rule, Iranian architecture and so on All topics are treated with understanding and sympathy and in a judicious spirit

In conclusion, I would like to say that the book will be useful not only to University students but also to the general public whose attention has recently been directed towards Iran for various reasons. Dr Samadi is to be congratulated on bringing out a book which has got a cultural as well as a general interest

K A Subramania Iyer,
Head of the Deptt of Sanskrit
& Dean, Faculty of Arts,
Dec 14 1951 Lucknow UNIVERSITY

भूमिका

एशियन कल्चर का मजमून कुछ दिन हुये लखनऊ यूनीवर्सिटी में बी० ए० के कोर्स में दाखिल किया गया है, इसी के मातहत एक पर्चा जेनरल कल्चरल हिस्ट्री आफ़ दि ओरियन्ट (General Cultural History of the Orient) का है जिसमें ईरान की सल्तनत का कयाम (Rise of the Persian Empire) का भी एक विषय है। इस पर हिन्दी या उर्दू में अभी तक कोई किताब नहीं लिखी गई है। सिर्फ अंग्रेज़ी जबान में ही इस पर बहुत कुछ लिखा गया है। विद्यार्थियों की जरूरतों का ख्याल रखते हुये और खासकर जबकि शिक्षा देने का ज़रिया हिन्दी मातृ भाषा हो गई है यह किताब तैयार की जा रही है और बहुत मुमकिन है कि दूसरे लोगों को भी इसमें दिलचस्पी का सामान मिल जाय। बहर हाल अपने विषय पर यह पहली किताब होगी क्योंकि ईरान की प्राचीन संस्कृति के बारे में बहुत कम लिखा गया है। इस किताब की तैयारी में काफी वक्त सर्फ हुआ है। किताब लिखने का इरादा तो सन् ५० की गर्मियों से हो गया था। सब मसाला इकट्ठा करने के बाद इसको हिन्दी ज़बान में लिखने में अनेक कठनाईयों का सामना करना पड़ा।

इस पूरी किताब को लिखने में दो अंग्रेज़ी किताबों से ज़्यादा मदद ली गई है। जिनके नाम यह हैं।

1. Sykes : History of Persia.

2. Huart : Ancient Persia & Iranian Civilization.

यह दोनो बहुत ही मोतबर पुस्तकें हैं और इनके लिखने वाले मशहूर तारीख़ दाँ हैं। इन्होंने बहुत छान बीन करने के बाद और मोतबर सूत्र से यह सब हालात इकट्ठा किये हैं और इन पुस्तकों को लिखने में बहुत से मैनुस्क्रिप्ट तथा बहुत सी दूसरी पुस्तकों की सहायता ली है जो सब एक जगह मिलती भी नहीं हैं। इसलिये किसी एक आदमी का इन सब को अब पढ़ना नामुमकिन है। बहरहाल

यह किताब जो पेश की जा रही है इसमें बहुत छान बीन करने के बाद प्राचीन ईरान और उसकी सभ्यता के बारे में लिखा गया है।

इस किताब की तैयारी में मुझे अपने वृद्ध अज़ीज़ों, दोस्तों और विद्यार्थियों से बहुत मदद मिली जिनमें पहला नाम मेरी बीबी श्रीमती आमना समदी का आता है जिनकी मदद के बगैर मैं यह किताब नहीं लिख सकता था। फिर मेरे उस्ताद और दोस्त डाक्टर मोहम्मद वहीद मिर्ज़ा साहिब, अध्यक्ष अरबी विभाग, लखनऊ यूनीवर्सिटी, ने बहुत प्रेम के साथ इस किताब की तैयारी में दिलचस्पी ली और मैं उनका शुक्रिया किसी तरह अदा नहीं कर सकता हूँ। मेरी पुत्री दुर्दाना समदी (दबीरे माहिर) और मेरे पुत्र नज्म समदी व मंसूर समदी ने भी इस काम में ख़ास कर पुरूफ़ पढ़ने में मेरा बहुत हाथ बटाया और मेरे विद्यार्थियों में जिन लोगों ने इस काम में मेरी मदद की उनके नाम यह हैं:—श्री अली अब्बास एम० ए०, श्री महमूद अली फ़ारूक़ी बी० ए०, श्री एम. एम. सिन्हा और श्री सुरेश चन्द्र श्रीवास्तव और सबसे ज़्यादा मेहनत श्री मोहम्मद अब्दुल वहीद बी० ए० ने इस किताब का शुरू का हिस्सा तैयार करके की। मैं इन सबका बहुत शुक्रिया अदा करता हूँ।

उम्मीद है यह किताब लाभदायक साबित होगी और जो बातें ठीक करने की हों या जो कमी रह गई हो इसको आगे के एडीशन में ठीक कर दिया जायगा, अगर विद्यार्थी और मित्र मुझे अपनी राय भेजेंगे।

अन्त में मैं अपने बुज़ुर्ग उस्ताद और डीन फ़ैकल्टी आफ़ आर्टस्, प्रोफ़ेसर के० ए० एस० अइय्यर साहिब को धन्यवाद देता हूँ और उनका बहुत मम्नून हूँ कि उन्होंने इस किताब का बड़ा सुन्दर फ़ोर्वर्ड लिखा।

लखनऊ यूनीवर्सिटी
२१, दिसम्बर १९५१

एस. बी. समदी

विषय सूची

भौगोलिक वर्णन

शब्द परशिया (Persia) जो ईरान का पुराना नाम है, एक दूसरे प्राचीन शब्द 'पार्स' या जिसे 'फार्स' भी कहते हैं, उसकी बिगड़ी हुई सूरत है और यह शब्द अपनी जगह एक और प्राचीन शब्द 'पर्सिस' से निकला है, जिसके अनुसार यहाँ की राजधानी का नाम भी 'परसीपोलिस' (Persepolis) पड़ा और जिसे अरबों ने 'इस्तख़' के नाम से पुकारा। पर इस देश के रहनेवालों ने अपने को आर्यन ही कहलाना अधिक पसन्द किया। शब्द ईरान, मशहूर शब्द आर्यन (Aryan) या आर्या का एक बिगड़ा हुआ रूप है। शब्द ईरानी और आर्या के असली माने 'नामवर' तथा 'ख़ास' के हैं। चूंकि ईरानी और आर्य ,जाति की संस्कृति बहुत ख़ास है और आज कल योरप में जो संस्कृति फैली है वह वास्तव में ईरानी ही संस्कृति का एक रूप है, इसलिये इसका जानना बहुत ही ज़रूरी है।

ईरानी तथा प्राचीन पार्स की सबसे शानदार सल्तनत पेशदादियान या हुख़ामनशियान वंश ने स्थापित की। यह ख़ानदान आर्यों का था। बहुत पुराने ज़माने से इस मुल्क में उत्तर से आर्य और दक्खिन से सामी क़ौम के लोग आते रहे हैं, जिनमें आपस में बराबर झगड़े होते रहे। यहाँ तक कि आख़िर में आर्यों की जीत हुई और

उन्होंने एक बड़ी सल्तनत हुक्मनशी नाम से बनायी। इस ज़माने को ईरान का सुनहरा ज़माना या वीर-काल कहते हैं।

इसके पहले कि ईरान की संस्कृति के बारे में कुछ कहा जाय, यह अच्छा होगा कि स्थिति (Site), आबोहवा और ज़मीन की बनावट के बारे में कुछ बताया जाय।

स्थिति—ईरान का इलाक़ा एशिया में पश्चिम से पूर्व की तरफ़ जाग्रस पहाड़ों से शुरू होकर सुलेमान पहाड़ तक फैला हुआ है। दक्खिन में फ़ार्स की खाड़ी और उत्तर में कोहक़ाफ़ का इलाक़ा, कैस्पियन सागर और आमू नदी पाई जाती है। इसके एक तरफ़ दजला और फ़ुरात की घाटी है और दूसरी तरफ़ सिन्ध की घाटी है।

ईरान का प्रेटो ऐसी जगह पर है जिसके चारों ओर बड़े ऊँचे ऊँचे पहाड़ तथा मैदान हैं। पश्चिम में दजले का मैदान फैला है और पूरब में सिन्ध का मैदान है। इस प्रेटो का पश्चिमी भाग पर्शिया के नाम से मशहूर है और इसके पूर्वी हिस्से में अफ़ग़ानिस्तान और बिलोचिस्तान के देश पाये जाते हैं, जिनके चारों ओर बड़े-बड़े पहाड़ हैं, जो कहीं-कहीं बहुत ऊँचे हो गये हैं। उत्तर में अलबुर्ज़ पहाड़ आरमीनिया के पहाड़ों से अलग होता हुआ कैस्पियन के दक्खिनी किनारे तक फैला हुआ है। अलबुर्ज़ की सबसे ऊँची चोटी दामावन्द १८,७४० फ़ीट ऊँची है और कोहेबाबा की १६,८८० फ़ीट की ऊँचाई पर हमेशा बर्फ़ जमी रहती है। यह सिलसिला हिन्दुकुश से मिल जाता है जो हिमालय पर जाकर खतम होता है। दक्खिन में कुर्दिस्तान (Zagros) के पहाड़ हैं जो पूर्व की तरफ़ हिन्द महासागर के साथ-साथ सिन्धु नदी के दहाने तक चले गये हैं। यह प्रेटो पूर्व में तीन पहाड़ी सिलसिलों पर जाकर खतम होता है, जो एक दूसरे के बराबर-बराबर उत्तर से दक्खिन में फैले हुए हैं, यह पहाड़ सुलेमान कहलाते हैं। इस प्रेटो का रक़बा (Area)

१०,०४,००० इस्कवायर मील है। जिसके आधे से ज़्यादा हिस्से पर जो ६,३७,००० इस्कवायर मील है मौजूदा ईरान का राज्य क़ायम है जिसमें बहुत से सूबे शामिल हैं और उसके कुछ सूबे अब ईरान से बाहर भी समझे जाते हैं जैसे—अफ़गानिस्तान, बिलोचिस्तान और शीरवान।

ईरान के इस प्लेटो की ऊँचाई समुद्र की सतह से किर्मान में ५,००० फीट से अधिक, शीराज़ में ५,००० फीट, इस्फ़हान और यज़्द में ५,००० तथा ४,००० फीट से अधिक, तबरेज़ में ४,००० फीट, तेहरान और मशहद में ३,००० फीट है। यह बहुत ही दिलचस्प बात है कि आबाद हिस्से इतने ऊँचे पर हैं और सहराई (रेगिस्तानी) इलाका जो बीच में है, उसकी ऊँचाई २,००० फीट से कुछ कम है।

ईरान की आबोहवा और कुछ आम हालात

ईरान और स्पेन देश आपस में बहुत कुछ मिलते जुलते हैं। अगर कोई आदमी इन दोनों देशों में जाकर यहाँ की बातें मालूम करे तो उसे बहुत सी बातें एक दूसरे देश से आपस में मिलती-जुलती मिलेंगी। जैसे—आबोहवा, रीति-रिवाज, रहन-सहन तथा आदत (स्वभाव) वग़ैरह।

ईरान की आबोहवा उतनी ही विचित्र है जितनी कि उसकी बनावट। दुनिया के गर्म हिस्से में होते हुये भी वहाँ ठंडक रहती है क्योंकि यह जगह समुद्र से बहुत ऊंचाई पर है। इस देश में जगह-जगह पहाड़ों पर बर्फ की चोटियाँ हैं और जहाँ भी नदियाँ बहती हैं वह हिस्सा उपजाऊ है और वहाँ बहुत हरियाली होती है। इन जगहों पर रातें ठंडी होती हैं और दिन में धूप ख़ूब फैली होती है। जिससे वहाँ पर हर तरह के पेड़ पौदे, चिड़ियें और फल-फूल सब-के-सब बहुत बहार पर होते हैं और भले लगते हैं। इस देश में गुलाब और

१०,०४,००० इस्क्वायर मील है। जिसके आधे से ज़्यादा हिस्से पर जो ६,३७,००० इस्क्वायर मील है मौजूदा ईरान का राज्य क़ायम है जिसमें बहुत से सूबे शामिल हैं और उसके कुछ सूबे अब ईरान से बाहर भी समझे जाते हैं जैसे—अफ़ग़ानिस्तान, बिलोचिस्तान और शीरवान।

ईरान के इस प्लेटो की ऊँचाई समुद्र की सतह से किर्मान में ५,००० फीट से अधिक, शीराज़ में ५,००० फीट, इस्फहान और यज़्द में ५,००० तथा ४,००० फीट से अधिक, तबरेज़ में ४,००० फीट, तेहरान और मशहद में ३,००० फीट है। यह बहुत ही दिलचस्प बात है कि आबाद हिस्से इतने ऊँचे पर हैं और सहराई (रेगिस्तानी) इलाका जो बीच में है, उसकी ऊँचाई २,००० फीट से कुछ कम है।

ईरान की आबोहवा और कुछ आम हालात

ईरान और स्पेन देश आपस में बहुत कुछ मिलते जुलते हैं। अगर कोई आदमी इन दोनों देशों में जाकर वहाँ की बातें मालूम करे तो उसे बहुत सी बातें एक दूसरे देश से आपस में मिलती-जुलती मिलेंगी। जैसे—आबोहवा, रीति-रिवाज, रहन-सहन तथा आदत (स्वभाव) वग़ैरह।

ईरान की आबोहवा उतनी ही विचित्र है जितनी कि उसकी बनावट। दुनिया के गर्म हिस्से में होने हुये भी वहाँ ठंडक रहती है क्योंकि यह जगह समुद्र से बहुत ऊँचाई पर है। इस देश में जगह-जगह पहाड़ों पर बर्फ़ की चोटियाँ हैं और जहाँ भी नदियाँ बहती हैं वह हिस्सा उपजाऊ है और वहाँ बहुत हरियाली होती है। इन जगहों पर रातें ठंडी होती हैं और दिन में धूप ख़ूब फैली होती है। जिससे वहाँ पर हर तरह के पेड़ पौदे, चिड़ियें और फल-फूल सब-के-सब बहुत बहार पर होते हैं और भले लगते हैं। इस देश में गुलाब और

गुलबुल यानी गुगनू और गानों की कोई कमी नहीं। यहाँ के बाग बहिश्त मालूम होते हैं। मगर यह कहना एक हद तक सच न होगा कि ईरान के बाग और जगहों के बागों के मुकाबले में अच्छे होते हैं। बल्कि बात यह है कि जहाँ कहीं भी बाग होते हैं उनके चारों तरफ़ दूर दूर तक खुश्क जमीन पाई जाती है या बगैर हरियाली वाले पहाड़ पाये जाते हैं और इसलिये यह हिस्सा जहाँ बाग और हरियाली होती है भला लगता है। ईरानी तहज़ीब पर इन बातों का बहुत असर पड़ा है और यहाँ के बंजर पहाड़ों में बसने वाले आदमियों को बहादुर और अच्छे चाल चलन वाला बना दिया है। ईरान देश ने पुराने काल में दुनिया की सभ्यता में बड़ा हिस्सा लिया। आज ईरान इस मामले में पीछे जा पड़ा है। लेकिन एक ज़माना था जब कि यह देश पूरब और पच्छिम के बीच एक कड़ी का काम करता था। यहाँ लोग दूर दूर के मुल्कों से आते रहे, फिर बड़ी-बड़ी फौजें इस देश से गुज़रीं। यह वह जगह है जहाँ पर बहुत से रास्ते भिन्न-भिन्न कौमों के आने के थे और जहाँ बहुत सी सस्कृतियाँ आकर मिली हैं।

ईरान का प्लेटो बहुत ऊँचा है और यहाँ की आबोहवा बहुत खुश्क है। बीच का रेगिस्तान तमाम दुनियाँ में सबसे ज्यादा खुश्क जगह है यहाँ बारिश बहुत कम होती है। तेहरान और मशहद में ६ इंच के करीब, मगर पानी को पहुँचाने के लिये बहुत कोशिश करके नहरें वगैरह बहुत पुराने जमाने से काम में लाई जाती हैं और बहुत से चश्मों का पानी ज़मीन के नीचे बहने वाली नालियों के जरिये जिन्हें कनात या Kariz कहते हैं दूर दूर से खेतों तक लाया जाता है— बारह बारह गज़ के फ़ासले पर इन नालियों को साफ करने के लिये जमीन में बड़े-बड़े सूराख बना देते हैं। अगर ये नालियाँ बन्द हो जांय तो खेत सूख जांय और किसान तबाह हो जांय। यहाँ बहुत सर्दी

और बहुत गर्मी भी पड़ती है,, जाड़ों में थर्मामीटर ज़ीरो के नीचे चला जाता है। आदमी और जानवर जाड़े से मर जाते हैं और बर्फ के तूफ़ानों में घिर जाते हैं। कुछ ज़िलों में बर्फ बहुत पड़ती है। चार पाँच महीनों तक बर्फ रास्तों में जम जाती है और राह रुक जाता है। गर्मियों में भी रातें ठण्डी होती हैं, इसलिये क़ाफ़िले रातों को चलते हैं, गर्मी के मौसम में लोग पहाड़ों पर आबाद गाँवों में चले जाते हैं—उत्तर-पच्छिम या दक्खिन-पूर्व में तेज़ हवायें चलती हैं। पच्छिमी हवायें तूफ़ान लाती हैं। पतझड़ और जाड़े के मौसम में उत्तरी पच्छिमी हवायें चलती हैं। और गर्मी के मौसम में दक्खिनी-पूर्वी सूबों में बहुत तेज़ हवायें चलती हैं खासकर सिजिस्तान में। बीच का बड़ा रेगिस्तान लूत या कवीर कहलाता है। कवीर के माने हैं वह जगह जहाँ पानी धूप से जल जाये और उसके ऊपर नमक की पपड़ी जमी हो। यहाँ रेत की पहाड़ियाँ बन जाती हैं और सहरा की तरह हो जाता है। क़ाफ़िलों का यहाँ से गुज़रना मुश्किल होता है और तूफ़ानों में फँस जाना आसान। सिन्धु और दजले के बीच में कारून के सिवा और कोई बड़ा दरिया नहीं है और यह भी ईरानी प्लेटो पर से नहीं गुज़रता बल्कि अरेबिस्तान के नशेब (Slopes) वाले मैदानों से बहता है जिसे पहले ज़माने में सूसियाना कहते थे। दूसरा दरिया ज़िंदारूद है जो दूसरी तरफ़ से उत्तर को जाता है और इस्फ़हान के मैदानों से गुज़रता है। इस्फ़हान के पुल बहुत मशहूर हैं। सबसे लम्बा दरिया क़िज़िलऊज़न है। इसका एक और नाम सफ़ीदरूद है, यह उर्मिया झील से निकला है।

यहाँ की झीलें जो सब नमक की हैं मशहूर हैं जिनमें सबसे ज़्यादा मशहूर उर्मिया झील है जो समुद्र की सतह से ४१०० फीट ऊँची है। उत्तर से दक्खिन को ८० मील लम्बी है और पूर्व से पच्छिम २० मील चौड़ी है और ५० फीट गहरी है।

(Flora) फलफूल—ईरान के प्लेटो में बहुत कम सासब्ज़ी पाई जाती है। ज़मीन पीली पड़ी हुई है। जहाँ जहाँ पानी पहुँच जाता है वहाँ वहाँ पेड़ ख़ूब पैदा होते हैं घास बहुत कम उगती है। झाड़ियों में फूल लगते हैं और पहाड़ों पर बहुत से पहाड़ी पौदे (Alpine) उगते हैं। मगर जैसे ही गरमी शुरू होती है सब सूख जाते हैं। फूल भी होते हैं—चमेली और लाल गुलाब जिनमें मोहमदी नाम का गुलाब इत्र के लिये ख़ास है, काफ़ी पैदा होता है। फलों के दरख़्त बहुत ज्यादा होते हैं। जिनमें नाशपाती, सेब, बिही, ख़ूबानी, काले और सफ़ेद अंगूर आड़ू, नेक्ट्रीन (Nectrine), चेरी, सफ़ेद और काले शहतूत हर जगह मिलते हैं। अंजीर, अनार, बादाम, पिस्ता गर्म इलाक़ों में होते हैं, खजूर और संतरे भी होते हैं। अंगूर और ख़रबूज़े ख़ास फल हैं। माज़न्दरान (Mazandaran) में सबसे पहले अंगूर की बेल फैली और आड़ू, अनार, चमेली वग़ैरह भी। यहाँ से पहले गुलाब के लिये लफ़्ज़ वर्द Vardah, 'ज़िन्द' भाषा से निकला है जिसके माने हैं दरख़्त। यहाँ पर सब तरह के जानवर भी पाये जाते हैं, शेर, रीछ, भेड़िये, चीते वग़ैरह। हिरन भी होता है—जंगली सुअर, गीदड़, लोमड़ी वग़ैरह भी पाई जाती हैं। जंगली गदहा या गोरख़र भी आम हैं। मीडिया (Media) के मुल्क में घोड़े पाले जाते थे और नस्लकशी (Breeding) बहुत ज्यादा की जाती थी। ख़ुरासान के घोड़े बहुत मशहूर होते थे। आज भी अरब, तुर्कमान और ईरानी या परशियन घोड़े मशहूर हैं। सब तरह की चिड़ियाँ, गिद्ध से लेकर हुमा तक का होना मशहूर है। हुमा का साया पड़ने से कहते हैं इंसान बादशाह हो जाता है। बुलबुल शायरों की चिड़िया समझी जाती है, जिसे गुलाब से मुहब्बत होती है। मुर्ग़ ईरान से ईजिप्ट (Egypt) तक पहुँचा।

ईरान में अब खानें (mines) बहुत कम हैं। मगर प्राचीन काल में

पैसा न था। लाजवर्द (Lapis lazuli) की बहुत सी खानें दामांवन्द पहाड़ में पाई जाती थीं, चाँदी की खानें भी थीं, मगर इनसे लाभ नहीं होता था। कोयला भी तेहरान के पास निकलता था और तांबा भी सब्ज़वार के ज़िले में। पेट्रोल काकेशस से फ़ार्स की खाड़ी तक फैला हुआ है मगर इसे पहले की निस्बत अब ज़्यादा निकाला जाने लगा है। आज़रबाईजान में लोहा, सीसा और तांबा पाया जाता है।

तिजारती रास्ते

यहाँ की सड़कें ख़च्चरों के चलने के कच्चे रास्ते हैं, जो कहीं चौड़े और कहीं पतले हैं और जानवरों के खुरों से उनके निशान मिटे मिटे हैं मगर इन रास्तों से सब तरह का काम लिया जाता है यहाँ तक कि ज़रूरत के वक्त फ़ौजें भी इन रास्तों से ले जाते हैं। हमदान और सूसियाना के बीच में सड़कें थीं। बन्दर अब्बास से चलकर सड़क दराबजीर्द (Darabjird) तक आती है, यहाँ से सड़क दो हिस्सों में बँट जाती है और दोनों सड़कें दो मुख्तलिफ तरफ़ से होती हुई शीराज़ तक आती हैं। उनमें से एक आगे जाकर पुलवार की घाटी में से गुज़रती है जहाँ परसीपोलिस के खण्डहर हैं और इस्फ़हान तक चली जाती है। रै (Ray) से एक सड़क क़ज़वीन होती हुई आज़रबाइजान तक आई है। ख़ुरासान के बाहर एक सड़क मशहद से निशापुर तक गई है और आगे अलबुर्ज़ के नीचे नीचे होती हुई दमगान (Damghan) और समनान (Samnan) तक गई है और यहाँ से फिर आगे तबरिस्तान (Tabaristan) तक चली गई है। यह सड़कें बहुत पुरानी हैं और बहुत से जीतने वाले लश्करों ने इनको अपना रास्ता बनाया है।

यह जो बातें ईरान के बारे में ऊपर बताई गई हैं, इनके संबंध में कुछ और बातें भी ज़्यादा तफ़सील से आगे आयेंगी, जिनसे यहाँ की

पैदावार और जमीन की बनावट, दरिया, पहाड़, पेड़ पौदे और दूसरी चीजों का पूरा पूरा हाल मालूम होगा। यह सब बातें आगे एक दूसरी जगह दी गई हैं।

ईरान के सूबे

१. खुरासान २. बीच के सूबे ३. आजरबाइजान ४. पारशिया ५. अरबिस्तान ६. दक्खिनी सूबे ७. सीसतान।

१. खुरासान—पूर्वी सूबा है, खुरासान के जिलों में कोचान और गुर्गान बहुत मशहूर हैं। गुर्गान बहुत उपजाऊ हिस्सा है। इसका पुराना नाम हिरकैनिया (Hyrcania) है। कहा जाता है कि "यहाँ हर एक अंगूर की बेल से सात गैलन शराब तथा हर एक अंजीर के पेड़ से नब्बे बुशल (Bushel=8 gallons—measure of capacity) फल मिलते हैं। बालियों से जो अनाज ज़मीन पर गिर जाता है, उससे दूसरे आने वाले साल का अनाज मिलता है। शहद के छत्तों से पेड़ भरे पड़े हैं तथा पत्ते पत्ते से शहद टपकता है।

२. बीच के सूबे—माज़िन्दरान और गीलान बीच के सूबे हैं। यह इलाक़ा अलबुर्ज पहाड़ और बहरे ख़ुज़र के बीच में पाया जाता है। यह अपनी ख़ास बातों की वजह से दूसरे भागों से अलग है। यहाँ बारिस बहुत होती है। आबोहवा न बहुत गर्म है और न बहुत ठण्डी। जंगल घने हैं। गीलान के पच्छिम में रूस का इलाका है। उत्तरी-पच्छिमी कोने में अरारात के पहाड़ हैं। जहाँ रूस, तुर्की व ईरान के इलाक़े आपस में मिलते हैं।

३. आजरबाइजान—यह ईरान का उत्तरी-पच्छिमी प्रांत है, जिसकी ख़ास जगह तबरेज़ है जो पारशिया का सबसे बड़ा शहर है। यहाँ बारिश खूब होती है जिसके कारण यह हिस्सा बहुत उपजाऊ है। यह जगह तारीख़ी है और इसकी बड़ाई हर तरह साबित है, जैसा कि आगे मालूम होगा।

४. परशिया—पश्चिम की ओर दजला और फ़ुरात की घाटियों से घिरा है। इस भाग में पानी बहुत है। अगरचे भीतरी ज़िले कुम, काशान और असफहान खुश्क और बिना पानी के हैं। इसी जगह मीडिया (Media) और परशिया की पुरानी राजधानियाँ बनाई गईं।

५. अरबिस्तान—पश्चिम में कारून की उपजाऊ घाटी है, जिसे अरबिस्तान भी कहते हैं। किसी समय यही सूबा एलम (Elam= Mountain) के नाम से आर्यों के आने से पहले मशहूर था और ईरान में सबसे ज़्यादा उन्नति पाया हुआ हिस्सा समझा जाता था।

६. दक्षिणी सूबे—दक्षिण में फ़ार्स और किर्मान के सूबे हैं जिनका सिलसिला फ़ार्स की खाड़ी तक फैला है। यहाँ के कुछ हिस्सों को 'गर्म सीर' कहते हैं, जो आबोहवा के ख्याल से बहुत गर्म हैं और रहने लायक़ नहीं हैं। इसका असर यह हुआ कि ईरानी अच्छे इंजीनियर कभी न बन सके और सदा समुद्र से डरते रहे। यहाँ तक कि एक आदमी का कहना है कि एक बार जहाज़ को देखकर एक ईरानी बेहोश हो गया था, जो समुद्र के डरावने सीन के सिर्फ़ ख्याल का नतीजा था, वह आदमी तीन दिन तक बेहोश रहा। फ़ार्स का सूबा बहुत खुश्क और कम उपजाऊ है। यज़्द का हिस्सा तो बिलकुल रेगिस्तानी सहरा है। किर्मान और ईरानी बिलोचिस्तान का बहुत कुछ हिस्सा सहरा है।

७. सीसतान—सीसतान के हिस्से में कोहे ख्वाजा नाम का एक पहाड़ है। जहाँ Sir Aurel Stein ने एक बुद्ध मन्दिर के खंडहरों का पता लगाया है। यह पूजा की जगह ईरान में सबसे पुरानी समझी जाती है।

ईरान में बारिश बहुत कम होती है और गर्मी और सर्दी दोनों ही बहुत अधिक होती हैं, हवायें एक रफ़्तार के साथ अमूमन चलती रहती हैं। कहीं कहीं तेज़ हवायें भी चलती हैं ख़ास तौर से

किर्मान की घाटी में। पर सीसतान की आंधियाँ बहुत ज़ोरदार होती हैं। वहाँ की हवा का नाम एक सौ बीस दिन की हवा या आंधी है। जिसकी रफ्तार बहत्तर मील फी घंटे तक होती है जो बढ़ कर कभी कभी एक सौ बीस मील फी घंटे तक हो जाती है। इन्हीं हवाओं का ज़ोर और तेज़ी देखते हुए ईरान में हवा की चक्की का ख्याल पैदा हुआ। जो वहाँ अरबों के जीत के पहले चालू थीं। और आज भी परशियन व्हील (Persian Wheel or wind mill) मशहूर ईरानी ईजाद हैं। (मसऊदी ने हजरत उमर के क़ातिल फ़ीरोज़ का ज़िक्र करते हुए जो कि एक ईरानी गुलाम था, लिखा है कि वह हवा की चक्कियाँ बना लेने में माहिर था आज भी ईरान में हवा की ऐसी चक्कियाँ उन जगहों पर पाई जाती हैं जहाँ हवा तेज चलती है।

आबादी

इस समय ईरान की आबादी एक करोड़ है। जिनमें ६० लाख शिया हैं। ६ लाख सुन्नी, ८० हज़ार साई, ३६ हज़ार यहूदी और १० हज़ार मजूसी या ज़र्तुश्ती हैं। लगभग बीस लाख ईरानी रूस, तुर्की और भारत के देशों में आबाद हैं।

समुद्री व्यापार के बढ़ने से पहले ईरान के शहर बहुत आबाद और बड़े बड़े हुआ करते थे क्योंकि इन शहरों में अक्सर खुश्की के रास्ते से बड़े बड़े क़ाफ़िले गुज़रा करते थे। जिनकी वजह से वहाँ बड़ी आबादी और रौनक रहा करती थी।

प्राकृतिक भूगोल

ईरान के रेगिस्तान, नदियाँ, पेड़ पौंदे, जानवर और खानों की पैदावार।

रेगिस्तान—ईरान के रेगिस्तान का नाम लूत है। कहीं कहीं नमक के मैदान हैं जो कवीर कहलाते हैं। इस शब्द का मतलब

है 'नमक मिला रेगिस्तान या झील'। ऐसी जगहों पर ज़मीन सफेद और रेतीली होती है और यहाँ से पार होना बहुत कठिन होता है। कभी कभी तो सतह टूट जाती है और इंसान दलदल में फस जाता है। यहां बराबर पानी कहीं से पहुँचता रहता है। अगर पानी पहुँचना बन्द हो जाय तो रेगिस्तान लूत में बदल जाता है। ईरान की हर नदी के किनारे सफेद बिल्लोरी पत्थर बहुत पाये जाते हैं। जिसके अन्दर भिन्न भिन्न ज़र्रे मिले होते हैं जैसे अलकाली वग़ैरह। यहां पानी की कमी और नमी न होने से मुसाफिरों को बहुत तकलीफ़ होती है। यहां के तूफ़ान तबाह करने वाले होते हैं। जो गर्मी और सर्दी दोनों मौसमों में एक सी बरबादी लाते हैं।

जब किसी देश में कुछ उगता न हो और हवा में नमी की कमी हो तो वहां कीमियावी तब्दीलियां बहुत तेज़ी से होती रहती हैं। दर्जायहरारत बहुत तेजी से बढ़ता घटता रहता है। जिसका नतीजा रहने वालों पर कुछ ज़्यादा अच्छा नहीं पड़ता है। ईरान में भिन्न भिन्न इलाके और ज़िले ऐसे दूर दूर आबाद हैं जिसकी वजह से कभी कोई अच्छे ढंग से (बाक़ायदा) हुकूमत मुश्किल ही से क़ायम हो सकी है। दूसरा ख़ास नतीजा यह निकला कि यहां की अच्छाई बुराई को देखते हुए धर्म के अन्दर अच्छाई और बुराई की अलग अलग ताक़तों को मानने लगे, जो कि ज़रतुश्ती मज़हब का सबसे बड़ा उसूल है। इन चीज़ों ने यहां के लोगों की आदत, विचार बल्कि बदन की बनावट पर भी गहरा असर डाला। ईरान के मशहूर शहर जो इस इलाक़े के चारों तरफ पाये जाते हैं उनके नाम नीचे दिये हैं—

उत्तर में—	तेहरान और मशहद
पच्छिम में—	क़ुम, और काशान
दक्खिन में—	यज्द और किर्मान
पूरब में—	क़ाइन और बरजन्द

मुख़्तसर यह है कि यह रेगिस्तान ईरान का मुर्दा दिल कहलाता है। यानी सब कुछ इसी से है। लेकिन जो भी है इसमें ज़िन्दगी के आसार ज़ाहिर नहीं।

दरिया—ईरान में कोई भी नदी ऐसी नहीं है जिसके बारे में कुछ कहा जाय, फिर भी कारून ज़िन्दारूद, कज़ल-अज़न या सफ़ेद रूद, तेज़न या हरीरूद, जैहून या आमू दरिया, सैहून या सीर दरिया के नाम लिये जा सकते हैं। अगरचे यह आख़िरी दो नदियां ऐसी हैं जिनका ज़्यादा लगाव सेंट्रल एशिया से रहा और उनकी बड़ाई मगोल लोगों की आमद के साथ साथ बढ़ी।

झीलें—उर्मिया, शीराज़ की नमक की झीलें या सीसतान में हामू झील के नाम इस सिलसिले में लिये जा सकते हैं। उर्मिया झील के पास इसी नाम की एक जगह भी है, जहां ज़र्तुश्त पैग़म्बर का जन्म हुआ था।

फ़ारस की खाड़ी—ईरान के दक्षिणी किनारों पर फ़ार्स की खाड़ी है। इसकी लम्बाई कहीं ७०० मील और कहीं १५० मील है। यह खाड़ी प्राचीन काल से सभ्यता का केन्द्र (तमद्दुन का मरकज़) रही है। और सबसे पहली बार यहीं आदमी ने जहाज़ चलाने की कोशिश की थी। मिसरियों ने बहरे अहमर (लाल सागर) में सुमालीलैन्ड जाने के लिये २,७०० बी० सी० में जहाज चलाये और बहरे रूम (रूम सागर) में ३,००० बी० सी० में जहाज चलाये गये और इसके बाद बराबर मुख़्तलिफ़ ज़मानों में हर क़ौम के लोगों ने इस पानी के हिस्से को अपने अपने फ़ायदे के लिये इस्तेमाल किया। यहां पर बहुत बड़े बड़े समुद्री डाकू भी हुये जिनको जीतने के लिये दौलत का लालच और ख़ूनी लड़ाइयां भी काफ़ी न हुईं।

जुर्जान सागर—दुनियाँ में इस सागर से ज्यादा दिलचस्प बहुत कम पानी की सतहें होंगी। यह ईरान के उत्तर में है। उत्तर से दक्षिण

में इसकी लम्बाई ६०० मील और उत्तरी हिस्से मे इसकी चौड़ाई इसके आधे के क़रीब है। इसको बहुत से नामों से पुकारा जाता है। जिनमें एक नाम Zrayah Vonru Kasha है जिसका मतलब है चौड़ी खाड़ियों का सागर और यह नाम ज़र्तुश्त के ज़माने का है। अविस्ता में इसका ज़िक्र इन नामों से आया है— "पानी के जमा होने को जगह" या "तमाम समुद्रों से उस पार" और इसमें कोई शक नहीं कि आर्यों ने अपनी आँखों से इससे बड़ा समुद्र नहीं देखा था। आज कल के जमाने में इसका नाम कैस्पियन सागर इसलिये पड़ा कि उसके पास कैसपी (Caspu) नाम का क़बीला आबाद था। ईरान वाले इसको बहरे गिज़्र भी कहते हैं। मध्यकाल में गिज़्र एक उत्तरी सल्तनत का नाम था। जुर्जान सागर को जीलानी समुद्र भी कहते हैं। Herodotus ने इसे एक समुन्द्र कहा है। इन बातों को देखते हुए कहा जा सकता है कि यह एक ख़ास मशहूर समुद्र था। और इसका असर बहुत तरह से ईरान के देश पर पड़ा जिससे इसकी बड़ाई का अन्दाजा होता है।

आने जाने के जरिये

"Means of Communications"

रसल व रसायल (आने जाने की सहूलतों) का सवाल बहुत मुख्य है मगर एक अर्से तक इतिहास के लेखक इस पर बहुत कम ध्यान देते रहे हैं। हाल ही मे लोगों ने इसकी विशेषता और बड़ाई समझी है। और इसके बारे में लिखा है। सबसे पुराना रास्ता ईरान में बाबुल से चलकर—करमानशाह और हमदान तक आता है। हुखमन्शियों के जमाने मे यह शाही सड़क सारडीज़ (Sardes) से हमदान तक फिर रै तक और वहा से पूरब की ओर दूर दराज़ बखतर (Bactria) तक आती थी। यह वही रास्ता है जिसपर

दारा सिकन्दर से हार कर भागा था। बहुत दिनों तक बल्कि आदमी की याद से बहुत पहले यह रास्ता पूरब और पच्छिम के बीच आने-जाने का अकेला ज़रिया था। दक्षिण में बहुत बड़ा सहरा पाया जाता है। और ऐलबुर्ज़ और ज़ुर्गान के पहाड़ी टाखों के बीच में जो रास्ता जाता है वह बहुत कठिन है। मध्य काल में योरप की सब तिजारत तबरेज़ के ज़रिये होती थी, जिसको मारकोपोलो ने टारिस (Tauris) कहा है। यह तिजारत हिन्दुस्तान से ख़ास सम्बन्ध रखती थी। यह तमाम रास्ते हिन्दुस्तान तक चले आये थे और यहाँ की सरहदों से मिले हुये थे।

ईरान में दाख़िला हर तरफ़ से कठिन था असल में बहुत कम देश इस प्रकार के होते हैं। इसके अलावा 'लूत' की वजह से पूरा देश छोटे-छोटे हिस्सों में बटा हुआ था। पर फिर भी अन्दर जाने का रास्ता उत्तरी पच्छिमी तरफ़ से पाया जाता है और तिजारती रास्ते Tribizond और Tiflis से चलकर तबरेज़ से मिल जाते थे। एक जगह से दूसरी जगह जाने के रास्ते मुल्क की उन्नति को देखते हुये, बहुत कम तरक़्क़ी पर थे। और Hogarth ने क्या ही अच्छा इस बारे में कहा है 'इनके ज़राये इसी तरह से ख़राब होते चले गये, जिस तरह से उन्होंने दूसरी बातों में गलती की।' और यह बात ईरान के लिये वाक़ई इलज़ाम के क़ाबिल है कि इन का सामाने तिजारत अब भी ऊटों, खच्चरों और गधों पर लादा जाता है। और वह गाढ़ी जो अब से लगभग २,००० साल पहले चालू थी आज भी लद्दू जानवरों का बोझ ख़ास ख़ास सड़कों पर बटाती है।

नबातात—(फूल-पौदे) ईरान की पैदावार बहुत ही कम है। कुछ ज़िलों में ज़रूर पेड़ पौदे होते हैं। और जहां-जहां सिंचाई के ज़रिये मौजूद हैं हरियाली भी पाई जाती है नहीं तो आम-तौर से ज़मीन सूखी और बंजर है। घास का नामोनिशान भी नहीं

मिलता सिवाय उन जगहों के जहां दलदलें हैं और कहीं भी झाड़ियां नहीं फैलतीं। जिसकी ख़ास वजह खुश्की है। थोड़े दिनों के लिये मौसमे बहार (बसंत) में झाड़ियां फूल से लद जाती है और पहाड़ों जगहों में हजारों जंगली पौदे उग आते हैं। पर जैसे ही गर्मी का मौसम शुरू होता है हर पौदा जल जाता है, और इसका उगना और बढ़ना खतम हो जाता है। कहीं-कहीं पिस्तों और सनोवर की झाड़ियों की अधिकता है। कुछ पेड़ों से खुशबूदार गोंद भी निकलता है। शीराज़ के क़रीब में छोटे क़द के ओक के पेड़ २०० मील तक फैले हुए हैं। ज्यादातर पेड़ उन्हीं जगहों में उगते हैं जहां सिंचाई होती है। या पास ही में कोई नदी हो, आमतौर से सफेदे या हबूद के पेड़ बहुत पाये जाते हैं। उसके बाद ख़ेज़रान, ऐल्म, ऐश और अख़रोट के पेड़ भी होते हैं। पर सर्व या सनोवर के पेड़ बहुत कम होते हैं। हूर के पेड़ की लकड़ी मकान बनाने के काम में आती है, और एल्म की लकड़ी के हल बनते हैं। अखरोट की लकड़ी बहुत सख्त होती है। सर्व, बबूल और तुर्किस्तानी एल्म के पेड़ ज्यादातर खूबसूरती और साये के लिये लगाये जाते हैं। बागों में चमेली, बन्फ़शा और लाल गुलाब बहुत पाया जाता है। पहाडी जगहों में और पहाड़ की घाटियों में हाथार्न की झाड़ियां बहुत होती हैं जिनसे टोकरियां बनाते हैं।

फलः—ईरान में फल बहुत होते हैं और कारत का काम अच्छा न होते हुये भी अच्छे-अच्छे फल पैदा होते है। नाशपाती, सेब, बिही, ख़ूबानी, काले और पीले आलूचे, आड़ू, शफ़्तालू, चेरी, काले और सफेद शहतूत बहुत ज्यादती से हर जगह पाये जाते हैं। अंजीर अनार बादाम और पिस्ते ज्यादातर गर्म आबोहवा में होते हैं। खजूर, संतरे और नीबू गर्म आबोहवा में खूब होते हैं। ईरान के अंगूर और ख़रबूज़े बहुत मशहूर हैं।

फसलेंः—ख़ास-ख़ास फसलें गेहूँ, जौ (यह घोड़ों का ख़ास दाना

है) बाजरा, मेम-तोथियां, रुई, अफ़ीम, लूर्सन की घास और तम्बाकू होती है तिल और दूसरे तेल देने वाले बीज हर जगह पैदा होते हैं। प्याज़ चुकन्दर और शलजम भी आम है। चावल और मक्का सिर्फ़ गर्म हिस्सों में होते हैं या गुज़ांन के सूबे में। आलू, बन्दगोभी, गोभी, हाथी चक, टिमाटर, खीरे, पालक, बैंगन, सलाद और मूलियां ख़ास तरकारियां हैं। पर इनमें बहुत सी तरकारियां बाक़ायदे नहीं बोई जातीं। साईक्स (Sykes) का बयान है कि जब मैं पहली बार किरमान में था आलू बहुत मुश्किल से मिलते थे और गोभी और टिमाटर को तो कोई जानता भी न था लेकिन वहां इन चीज़ों को योरोपियन लोगों ने बहुत उन्नति दी है। ईरान की पहाड़ी जगहों में तरह तरह के खानेकी चीजें मिलती हैं जैसे विसिल (एक तरह के गोन्द) रेवेन्द चीनी (Rhubarb), मशरूम, समारुग, मन्ना (जो पेड़ से मिलता है) वग़ैरा वग़ैरा। मन्ना इल्दी के पेड़ से भी मिलता है। (Carraway) के बीज किरमान के सूबे में इतने ज्यादा पैदा होते हैं कि यह कहावत मशहूर है "इन बीजों को क़िमान ले जाना एक बेफायदा बात है। जुर्जान के सूबे की आबोहवा हरियाली के लिये बहुत अच्छा है इस लिये वहां पर हर तरह की हरियाली पाई जाती है। जंगली अंगूर की बेलें पेड़ों पर चढ़ जाती हैं और हर तरफ हरियाली ही हरियाली दिखाई देती है और इस हरियाली पर ओस की बूदें बहुत बहार देती हैं।

ईरान की संस्कृति

ईरान की संस्कृति जिसके बारे में अब हमको यह सब कुछ जानने के बाद कि ईरान का देश क्या और कैसा है ज़रा तफसील से लिखना है। यह सांस्कृति बहुत पुरानी सांस्कृति है। जिसे बढ़ाने में बहुत सी ऐसी कौमों ने मदद दी खुद जिनकी सभ्यता बहुत बढ़ी हुई थी इस सिलसिले में सबसे पहला नाम सुमेरियनस का आता है जिनका सम्बन्ध बाबुल से था। सुमेरी सभ्यता से मिलती जुलती सभ्यता सिन्धु की भी थी और इसका पता यों चला कि सिन्ध की घाटी में खुदाई से जो चीजें निकलीं वह सुमेरी चीजों से जो बाबुल में मिलीं, बहुत मिलती जुलती थीं। सभ्यता की यह समानता और मुनासिबत ज्यादातर मिट्टी के बर्तनों में पाई गई जो दोनों जगह पर एक से निकले। यह सभ्यता लगभग ३,००० बी. सी. या इनसे भी पहले की है इस ज़माने में धातु में सिर्फ तांबा पाया जाता था, जो उमान की खानों से मिलता था और फिर लाजवर्द था जो बदख्शा से आता था। इन बातों की खोज लगाने में Woolley ने बहुत काम किया है। सुमर के बाद जिस सांस्कृति का ज्यादा असर ईरान पर पड़ा वह एलम की थी, यह सांस्कृति भी बहुत पुरानी थी। एलम की राज धानी सूसा थी और उसका राज्य क़ारून की घाटी में फैला हुआ था। एलम शब्द के माने पहाड़ के हैं और इस हुकूमत का इलाक़ा ज्यादातर पहाड़ी था बहुत सदियों तक एलम वाले बाबुल वालों पर कामयाब हमले करते रहे।

इसी ज़माने में एक और राज्य असीरिया का भी था। सातवीं सदी बी० सी० में असीरिया ने एलम पर हमला किया और वहां की

राजधानी सूसा को तबाह और बर्बाद कर दिया जिससे एलम की हुकूमत खतम हो गई। इसके खण्डहरों का पता १८५० ई० में (Loftus) ने चलाया और बहुत सी अच्छी और काम की बातें मालूम कीं। एलम की हुकूमत के बाद मीडिया की हुकूमत क़ायम हुई जिसे आर्यों के क़बीले मीड्स (Medes) ने क़ायम किया। मीडिया वालों के बाद या उन्हीं में से हुखमन्शी बादशाह हुये जिनको ऐक्मीनियन्स (Achaemenians) भी कहते हैं। इनका ही नाम पेशदादियान भी है यानी सबसे पहले क़ानून बनाने वाले (The First Law Givers)। इन्होंने ईरान में सबसे ज़्यादा अपने खानदान की सल्तनत को बढ़ाया और बाद में भी जितने और खानदान ईरान में हुये वह सब अपने को इन्हीं हुखमन्शियों की औलाद में से बताते हैं। प्राचीन ईरान की सबसे बड़ी और सबसे पुरानी हुकूमत और सल्तनत इनकी ही थी।

मीडियों या मीड्स (Medes) की शुरुआत यों हुई कि उत्तर के आर्यों और दक्खिन के सामियों के बीच बराबर लड़ाई होती रहती थी, यहाँ तक कि आख़िर में आर्यों की जीत हुई और इन्होंने ईरान के देश को अपना वतन २,००० बी० सी० से बनाना शुरू किया।

दूसरा कहना यह है कि दक्खिणी एशिया के सामी (Semites) और मिश्र के मिश्री (Egyptians) दुनियाँ में एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश कर रहे थे। उस वक्त ईरान में कुछ ऐसे हमला करने वाले आये, जिनके बहुत से क़बीले थे और इनमें ख़ास क़बीले का नाम मीड्स (Medes) था और दूसरे लोग परशियन थे, जिन्होंने ईरान के पुराने वासियों को अपने में ले लिया, या उनको निकाल बाहर किया। फिर उनके पड़ोसी सामी आये और उन्होंने मीड्स और परशियन पर अधिकार पाकर अपनी सांस्कृति फैलाई जो ज़्यादा बढ़ी-चढ़ी थी। मगर थोड़े दिनों बाद ईरान वाले आगे बढ़ गये और इन्होंने

एक अपनी ऐसी बड़ी सल्तनत खड़ी की कि जिससे बड़ी सल्तनत उससे पहले दुनियाँ में नहीं हुई थी।

इन लोगों ने अपनी जो राजधानी ज़ायम की इसका पुराना नाम इनके ज़माने में अमादाना (Amadana) था। यह शब्द हगमताना (Hangmatana) से निकला है। इसके माने हैं मिलने की जगह यह नाम इसलिये पड़ा होगा कि बहुत से क़बीले जो अलग अलग रहे होंगे यहाँ पर आकर मिल गये होंगे। ग्रीक ज़बान में इसको एकबटाना (Ecbatana) कहते हैं और आजकल इसका नाम हमदान (Hamadan) है।

यह आर्य लोग जिनका कबीला मीडस (Medes) कहलाता था बहुत मामूली और शुरू वाली तहज़ीब की हालत में थे यानी इनकी सभ्यता बहुत ही शुरू की हालत में थी। यह लोग पेशे के एतबार से गड़रिये थे और मवेशियों को पालकर गुज़र औक़ात करते थे। इनके पास घोड़े-गाय-बैल-भेड़ बकरियाँ और गल्लेवान कुत्ते हुआ करते थे। वह ऐसी भद्दी और भोंडी गाड़ियाँ इस्तेमाल करते थे जिनके धुरे और पहिये किसी एक बड़े दरख़्त के तने से पूरे के पूरे काट लिये जाते थे। यह लोग बहुत सी बीबियाँ रखते थे और औरतों को हमला करके दूसरे कबीलों से पकड़ लाते थे। ख़ानदान बाप की तरफ़ से चलता था जिसे Patriarchal Stage कहते हैं। सोना काला इनके यहां पाया जाता था। मगर दस्तकारी नहीं जानते थे यह लोग पढ़े लिखे नहीं थे बल्कि कहा जाता है कि जो कुछ भी पढ़ना लिखना इन्होंने बाद में सीखा, उसमें सामियों की कोशिश बहुत ज़्यादा थी। यह आर्य लोग जो ईरान आये यहां अलग अलग गाँव बसाकर आबाद हुये और अपने ख़ानदान अलग अलग रक्खे यानी गावों के अन्दर एक ख़ानदान वाले एक जगह बसते थे। शुरू ज़माने में यह लोग नेचर यानी पेड़, दरिया, पहाड़ वग़ैरा की पूजा करते थे और इनका

मज़हब हिन्दुओं से बहुत मिलता था। बहुत से संस्कृत शब्द इनके यहाँ ज़रा बदले हुये पाये जाते हैं जैसे संस्कृत का असुर Asura इनके यहाँ आकर अहोरा (Ahura) हो गया जिसके माने खुदा के हैं और इससे अहोरामाज़्दा (Ahuramazda) निकला जो खुदा का एक नाम है। और इसके माने हैं पाक रब या पालने वाला। इसी तरह दूसरा लफ़्ज़ Daiva या Deva से Daeva बन गया। पुराना ईरानी मज़हब हिन्दुओं के मज़हब से बहुत मिलता है इसका हाल उस वक्त ज़्यादा तफ़सील से मालूम होगा जबकि ईरानके ज़र्तुश्ती मज़हब से बहस की जावेगी।

जब मीडस (Medes) की सल्तनत क़ायम हुई तो रफ़्ता रफ़्ता यहाँ बाबुल और असीरिया का असर पड़ना शुरू हुआ इसके बाद दक्षिण की सामी क़ौमें बढ़ी और इन्होंने उत्तर के आर्यों पर इतना ज्यादा असर डाला कि एक हद तक इनको अपने रंग में रंग लिया। इसके बाद असीरिया वालों का क़ब्ज़ा मीडिया के सूबों पर हो गया। इसलिये ईरान की सभ्यता बहुत सी तहज़ीबों से मिलकर बनी है।

दरअसल ईरान की संस्कृति में कई वंशों ने हिस्सा लिया है उनमें से एक वंश ईरान से बाहर का भी था। इन वंशों के नाम यह हैं:— मीडस—हुख़ामंसी —पारथियन और सासानी। इन सबका हाल आगे आयेगा। मीडस का ऐसा वंश था जिनमें से बाद को हुख़ामंसी वंश निकला। इन वंशों ने जब ईरान की संस्कृति की उन्नति चाही तो उसके अन्दर मिश्र, फ़ुनेशिया, असीरिया, कलदानी, यूनानी, संस्कृतियों को जो कि एशिया-अफ़्रीका और योरप की मुख्य संस्कृतियां थीं उनको आपस में मिला कर एक नया रूप दिया जिसके अन्दर इन सब संस्कृतियों के रंग झलकते हैं मगर साथ ही साथ यह सब रंग ईरान में आकर एक हो गये और इन पर एक ईरानी रंग चढ़ गया। इस ईरानी संस्कृति में बाहर से बहुत कुछ लिया गया है। मगर ईरान की सभ्यता

अपने असली रंग रूप में पाई जाती है। ईरान वाले चाहे जीत में हों चाहे हार में उनकी सभ्यता दूसरों पर छा रही हो या उन पर दूसरे लोग असर डाल रहे हों हर हाल में ईरान की अपनी अच्छाई और स्वभाव का प्रभाव हर ईरानी बात मे पाया जाता है। अगर ईरान के बारे में जानकारी हासिल करना हो तो इस्लाम के बाद वाले ईरान तक के दौर में हम ईरान की असली सभ्यता को तभी समझ सकते हैं जब उसके असली रूप को जान लें इस लिये ईरान को समझने के लिये सबसे पहले 'मीडिस' और फिर परशियन को समझना जरूरी है।

ईरानी कला कौशल
Arts and crafts

इस पर मुख्य प्रभाव मेसोपटामिया का पड़ा। जब तक वहाँ असीरिया का असर रहा। यह उनकी सभ्यता से लाभ उठाते रहे और खुद असीरिया कलदानी असर के मातहत आता था इसलिए वहा का भी असर पडा। बाबुल में सब प्राचीन पूर्वी कलाएँ बढ़ीं, मगर ईरान पर हर जगह की कला का असर पडा— परसीपोलिस के खंडहर हमको मिली जुली कला की तरफ़ ध्यान दिलाते हैं जिसमें शाही भावना ने एक विचित्र रूप धारण किया— असीरिया, मिश्र और एशियाई यूनान के खुदमुख़्तार सम्राटों ने सबसे पहले बड़े पैमाने पर बड़ी बड़ी आलीशान इमारतें बनाना शुरू कीं, जिनमे तेज़ रंग भरे होते थे और बड़ी शान शौकत और चमक दमक होती थी। यह चीज़ पूर्व की ख़ास चीज़ है। कला के सम्बन्ध में ईरान मे कुछ अनोखी बातें पाई जाती हैं—सबसे पहली चीज़ यह है कि इन इमारतों की कला में खूब चमक दमक है। दूसरी चीज यह है कि ईरानी इमारतों मे खम्भे ज्यादा होते थे जिसको इन्होने मिश्र की कला से लिया है। इमारत हालांकि बड़ी और भद्दी होती थी परन्तु यह खम्भे पतले और लम्बे होते थे, ईरानी अपनी इमारतों मे ऐसे रंगों

को बहुत इस्तेमाल करने के शौकीन होते थे जो कि सुन्दर और चमकदार हों। ईरानियों ने नीला रंग आसमान के रंग से ऐसे ही लिया जैसे इन्होंने गुलाब से ख़ुशबू निकाली थी। यह रंग बिल्कुल आसमान के रंग से मिलता जुलता था। इनकी कलायें सब प्राचीन पूर्वी थीं और साथ ही साथ यूनान से इन्होंने मूर्ती कला को लिया जिसमें हर हिस्से का सिडौल और तरतीब से होना जरूरी है—ईरानियों ने इस विषय में अरबों पर असर डाला और अरबों के द्वारा यह चीज़ मध्यकाल के पच्छिमी यूरोपीयन देशों की कलाओं में चली गई। कला कौशल के साथ साथ ईरान वालों ने अख़लाक़ और मज़हब के सिलसिले में अपने दूसरे एशियाई पड़ोसियों से बहुत ज़्यादा तरक्की की। जब ईरान में लोग चरवाहे की ख़ानाबदोश ज़िन्दगी को छोड़कर खेती बाड़ी करने और एक जगह जमकर रहने लगे और उन्होंने सल्तनतें क़ायम कीं तो वहाँ एक ज़बरदस्त समाज पैदा हो गया जिसके मातहत संस्कृति की बहुत सी बातें फैलीं जिन्होंने आगे चलकर एक ऐसा रूप धारण किया जिसका असर बहुत समय तक रहा, बल्कि आजकल भी पाया जाता है। इन बातों से यह फ़ायदा हुआ कि लोग बिला वजह लूट मार करने और ख़ून बहाने से रुके।

हमने ईरान का इतिहास बताते हुये ऊपर कहा है कि मीडस क़ौम पर असीरिया वालों ने अपना असर डाला और असीरिया वालों का क़ब्ज़ा मीडिया के सूबों पर हो गया। कुछ दिनों के बाद जब असीरिया की शक्ति कमज़ोर पड़ गई तो मीडिया के सरदार केकाऊस (Huvakshatara or Cyaxares) ने बाबुल के बादशाह की मदद से ६१६ बी सी में असीरिया को बिलकुल मिटा दिया। इसके बाद मीडिया वालों ने बहुत उन्नति की और एशियाए कोचक तक बढ़ गये, जहाँ उनको लीडिया वालों से वास्ता पड़ा। अब उनकी सल्तनत हर तरह लीडिया के बिल्कुल बराबर थी। इन दोनों सल्तनतों में यानी

मीडिया और लीडिया मे बहुत सी लड़ाईयाँ हुईं। यहाँ तक कि ८८५ बी. सी में आख़िरी लड़ाई हुई। जिसके बारे में कहा जाता है कि यह ६ साल तक होती रही यहाँ तक कि सूरज को ग्रहण लग गया जो कि घमसान लड़ाई का चिन्ह था, उसके बाद फिर सुलह हो गई।

मीडिया के हाकिम होवकस्त्रो ने अपनी लड़की का ब्याह लीडिया के राजकुमार से कर दिया। (Huvakshatra or Cyaxavas) होवकस्त्रा के ज़माने में मीडिया बहुत उन्नति पर था। और सामी सभ्यता की जगह ईरानी सभ्यता बढ़ गई थी। होवकस्त्रा के बाद उसका लड़का अशतूवेगू (Astyges) हुआ जिसका चाल-चलन अच्छा न था। उसके पास धन बहुत था। और मीडिया वालों की रोज़ाना की ज़िन्दगी में बहुत सी तकल्लुफ़ की बातें आ गईं, ख़ास कर दरबारी हल्क़ों में। इसके बाद मीडिया की सल्तनत ख़तम हो गई। और इस जगह पर परशिया वालों का अधिकार हो गया। जिनका सरदार सरूस (Cyrus) था। यूनान वाले इस तबदीली को एक भीतरी तबदीली बताते हैं और गालिबन ऐसा ही हुआ है। जिसका मतलब यह होते हैं कि उनके कहने के मुताबिक़ मीडिया वालों की सल्तनत मिटी नहीं बल्कि उसमें कुछ तब्दीली हो गई।

——

पराशिया का राज्य

"हुखमंशियान"

सरस या करूश जो पेशदादियों का बानी (Founder) हुआ है उसके बारे में यूनानी इतिहास लिखने वाले हैरोडोटस (Herodotus) का कहना है कि वह एक फ़ार्सी अमीर और अस्तूवेग़ (Astyges) की लड़की की औलाद था। दूसरी रवायत यह है कि वह अनशान जो कि एक छोटा राज्य था उसका बादशाह था। और उसने अस्तूवेग़ को हरा कर ५५० बी० सी० में हमदान पर कब्ज़ा कर लिया और उसका नाम शाहफ़ार्स पड़ गया।

अनशान और हुखमंशियान ख़ानदान आपस में मिला जुला चला गया है। इसका पता यूं चलता है कि जब दारा का बाप हस्तास्प किसी वजह से फ़ार्स का बादशाह न हो सका तो सरस ही को अनशान और फ़ार्स पर हुकूमत करने का अवसर मिल गया। दारा ने कोहे-वेहिसतून में जो कतबे (Basreliefs) थोड़े हैं इनके देखने से ऊपर दी हुई बातें साफ़ हो जाती हैं। ईरानी रवायतों के मुताबिक़ हुखमंशियान या पेशदादियों ख़ानदान का मूरिसेआला या पुरखा क्यूमर्स (Keomarth) माना जाता है। उसको ज़रतुश्ती आदम भी कहते हैं। लफ़्ज़ पेशदादियों का मतलब समझाने के लिये इतना कहना ज़रूरी है कि इस ख़ानदान ने सबसे पहली बार क़ानून बनाये। जिसकी वजह से यह लोग पेशदादिया यानी सबसे पहले क़ानून बनाने वाले (The Early Law Givers) कहलाये।

ईरानी लीजेन्ड

ईरान में एक पुरानी रवायत या कहानी ईरानी लीजेन्ड ग्राम तौर से मशहूर है। जिसमें क्यूमर्स को पेशदादियों का पुरखा मानते हुए इससे नसब या पीढ़ियां चलाई गई हैं। इसके जानशीन होशंग और तैहमूरस हुए और उन्हीं लोगों ने ईरान की तहज़ीब की बुनियाद रक्खी। उसके बाद जमशेद और ज़ोहहाक हुए। जमशेद का तख़्त मशहूर है जो उसने इस्तख़र यानी परसीपोलिस (Persepolis) में क़ायम किया। यह राजधानी पसरगदई (Pasargadae) के नाम से भी मशहूर है।

"जम" का शब्द "यम" से मिलता है। "यम" संस्कृत का लफ़्ज़ है जिसके माने मौत के फ़रिश्ते के हैं। डूबते हुए सूरज का भी एक नाम "यम" है। इस का मतलब यह भी है कि ऐसी हस्ती जो औरों को रास्ता दिखलाए। यम के बारे में कहा जाता है कि वह मौत की वादी में सबसे पहले पहुँचा और इस वजह से मलेकुल मौत कहलाया। यम के साथ दो कुत्तों का होना माना गया है। इनमें से एक पीला होता है और दूसरा सफ़ेद। एक रस्म पारसियों में "सग-दीदन" के नाम से होती है जिसके अनुसार मुर्दे के ऊपर रोटी रख कर कुत्ते को खिलाते हैं। अगर कुत्ता खा ले तो मुर्दे को मुर्दा समझ लेते हैं और फिर दख़मे में ले जाते हैं जो मुर्दा उठाते हैं वह नीच ज़ात के होते हैं, जिस तरह लखनऊ में "शोहदे" होते हैं। इसी तरह बहुत सी पारसीयों और लखनऊ के शियों की रस्में मिलती-जुलती हैं।

जमशेद ने शमसी साल (Solar Calendar) को शुरु किया जो नौरोज़ से शुरू होता है। २१ मार्च को सूरज बुर्जे हमल या मेख

राम (Zodic Sign of Ram) में जाता है और यही नौरोज़ है। जिससे ईरानी साल शुरू होता है। जमशेद ही के ज़माने में शराब निकाली गई। कुछ अंगूरों का रस इत्तिफ़ाक़ से रक्खा रह गया और इसमें ख़मीर उठ आया। एक लौंडी ने उसे ज़हर समझ कर पिया मगर मरी नहीं। इसका दूसरा नाम मीठा ज़हर पड़ गया। जमशेद ने इतनी तरक़्क़ी की कि अपने लिये ख़ुदा का दर्जा चाहा। उसके बाद ही शाम के एक अमीर ज़ोहहाक ने बग़ावत की। और जमशेद को मार डाला। लफ़्ज़ ज़ोहहाक शायद एक दूसरे लफ़्ज़ आज़ीदहाक (Ajidahak) (अज़दहा) से निकला मालूम होता है जो प्राचीन काल के एक साँप का नाम है। ईरानी रवायत में है कि ज़ोहहाक एक अरब अमीर था जिसके कन्धों पर दो साँप लहराते थे और उनको रोज़ाना दो आदमियों का भेजा खिलाया जाता था। जब कावा के लड़कों को मारकर इनका भेजा इन साँपों को खिलाया जाने लगा तो उसने इस ज़ुल्म के विरोध में आवाज़ उठाई और उसने फ़रीदूँ को ढूंढ करके जो शाही ख़ानदान का एक आदमी था बग़ावत का झण्डा ऊंचा किया। और अपने कुरते का काला दामन फाड़ कर झण्डा बनाया जो दुरफ़्शेकावयानी कहलाया और बादमें जिसे बहुत से बादशाहों ने जवाहरात से लेस दिया। यह झण्डा ईरान का ख़ास क़ौमी झण्डा समझा गया। बाद में यह झण्डा बहुत बड़ा हो गया था और हर सासानी बादशाह ने इसको बढ़ाने में हिस्सा लिया और इसमें अपनी बड़ाई समझी। कहा जाता है कि यह २२ फीट लम्बा और १५ फीट चौड़ा हो गया था। क़ादसिया की लड़ाई में यह झण्डा मुसलमानों के हाथ लगा और उन्होंने उसे टुकड़े करके मदीने में बेच डाला।

फ़रीदूँ और ज़ोहहाक की लड़ाई में ज़ोहहाक मारा गया। एक और तरीक़े से हिन्दू रवायात भी यहाँ आकर मिल जाती हैं। मुमकिन है, फ़रीदूँ हिन्दू वेदों का तरेतना (Traitna) हो जिसने एक देव को

मारा था। फरीदूं के तीन लडके हुए। सेलम (Selm) तूर (Tur) और एरिज (Erij)। एरिज को उसके भाइयों ने मार डाला और एरिज का बाप फरीदूं उसको बहुत चाहता था। इसलिए एरिज का सर उसके पास भेजा गया। एरिज का लडका मनोचिहर (Manuchehr) हुआ। उसने अपने बाप के भाइयो से बदला लिया। उसका ख़ास सलाहकार साम था, जो सीसतान का अमीर था। उसका लडका ज़ाल हुआ जिसके बाल सफेद थे। बचपन से सीमुर्ग ने उसको अलबुर्ज़ पहाड पर पाला था। इसके बाद उसने अफ़गानिस्तान के इलाक़े में ख़ूबसूरत शाहजादी रूदाबा (Rudabah) को देखा जो काबुल के बादशाह मेहराब (Mehrab) की लडकी थी। रूदाबा और ज़ाल में बहुत प्रेम हो गया और जब वह एक दूसरे से मिले तो रूदाबा तक पहुँचना ज़ाल के लिये इसलिये कठिन हुआ कि वह अपने महल में ऊपर थी–यह देखकर रूदाबा ने अपने बालों को जो बहुत लम्बे थे रस्सी की तरह नीचे लटका दिया–मगर ज़ाल ने प्रेम से बालों को चूमकर छोड दिया और अपनी कमन्द फेंककर ऊपर चढ गया–उसका लड़का रुस्तम हुआ जो बहुत मशहूर है और तूरान और ईरान (Tur & Erij) की लडाइयों में इसका बहुत नाम हुआ 'रक्श' रुस्तम का घोड़ा था, जिसकी लम्बाई इतनी थी कि घोडे की अगाड़ी और पिछाडी बांधने के जो निशानात सीसतान में हैं, वह एक मील की दूरी पर है। तूरान का सरदार अफ़रासियाब था। उसके बाद पेशदादियां ख़तम हुए और कियानियाँ ख़ानदान शुरु हुआ। आज भी सीसतान में अमीरों का एक ख़ानदान अपने को कियान की औलाद बताता है। मगर यह लोग दरअसल सफ़ारिया ख़ानदान के हैं। कियानियों में सबसे पहला बादशाह कैक़ुबाद हुआ जो मनोचिहर की औलाद में था। रुस्तम ने अफ़रासियाब को हराकर उसे बादशाहत दिलाई। कैक़ुबाद के

बाद कैकाऊस हुआ उसके बाद अफ़रासियाब ने फिर हमला किया। और इस बार अफ़रासियाब के साथ रुस्तम का लड़का सोहराब था। बाप बेटों में जंग हुई। Matthew Arnold ने फ़िरदौसी के शाहनामे से इस कहानी को लेकर अंग्रेज़ी में खूब अच्छा नज़्म किया है। कैकाउस के बाद सेयाऊस बादशाह हुआ। जो किसी वजह से अपने बाप के यहाँ से चला गया और अफ़रासियाब के पास पहुँचा जिसने उसे फ़रेब से क़त्ल करा दिया। इसमें एक औरत का हाथ था जैसे यूसुफ़ और जुलैख़ा में हुआ। उसका लड़का कैख़ुसरो हुआ जिसे परशिया का तख़्त मिल गया। कैख़ुसरो (Cyrus the Great) ने अफ़रासियाब को रुस्तम की मदद से हराया। और अफ़रासियाब सेयाऊस के क़त्ल के जुर्म में मार डाला गया। कैख़ुसरो बहुत दिनों ज़िन्दा रहा। फिर लहरास्प (Lahrasp) और गुश्तास्प (Gushtasp) बादशाह हुए। गुश्तास्प का लड़का असफ़न्दयार था। जो रुस्तम के हाथों मारा गया। और फिर रुस्तम भी एक फ़रेब से मार डाला गया। असफन्दियार का लड़का और गुश्तास्प का पोता—बहमन बादशाह हुआ। जो तारीख़ में बहमन अर्दशार दराज़दस्त (लम्बे हाथों वाला) (Vahuman Artaxerxes Longimannus) कहलाता है। आज भी ईरान के हर फ़िरक़े और दर्जे में यह रवायत तारीख़ की हद तक मानी जाती है और उनकी सभ्यता और तमद्दुन के अन्दर यह नाम इस तरह दाख़िल हो गये हैं कि बग़ैर इन नामों के ज़िक्र के उनकी तारीख़ का कोई हिस्सा पूरा नहीं हो सकता।

इस ज़माने के बाद जिसको वीरकाल या सूरमाई ज़माना (Heroic age) भी कहते हैं जो ज़माना आता है वह तारीख़ी हैसियत से साबित है। मगर इस पर भी कुछ न कुछ रवायत और ख़याली बातों (Myth) का असर ज़रूर पड़ा। मगर यहाँ सिर्फ़ ऐसी हस्तियों से बहस करना है जिनकी हैसियत खुली है और जिनको सब

जानते हैं। रुस्तम ने जब असफ़ंदियार को मारा तो उसका लड़का बहमन अर्दशीर बादशाह हुआ। जिसको बहुमन आर्टा ज़रज़ेक्स दराज़ दस्त (Vahuman Artaxerxes Longimannus) भी कहते हैं दराज़दस्त के माने हैं लम्बे हाथों वाला। यह एक हुख़मंशी बादशाह हुआ है। और सासानी ख़ानदान के बादशाह अपने को इसी की औलाद बताते हैं। उनका ज़िक्र आगे आएगा।

मीड्स और परशियन क़बीले जब ईरान में आबाद होना शुरू हुए तो उन्होंने यहाँ के पुराने रहने वालों को भी अपने में ले लिया। Herodotus का कहना है कि परशिया में आने वाले आर्यों के कई ख़ानदान थे जिनमें "पसरगदई" (Pasar gadae) ख़ानदान सबसे शरीफ़ था और इन्हीं में से हुख़मंशियाँन भी हुए। दूसरे ख़ानदान यह थे Maraphians (Maraphii), Maspians (Maspii), Panthialaeans (Panthialaii), Derusiaeans (Derusiaeii), Germanians (Germanii) यह सब खेती बाड़ी करने वाले थे और उनके बरख़िलाफ़ Daans (Dai), Mardians (Mardi). Dropicans (Dropici) Sagartians (Sagartii) ख़ानाबदोश थे। इनमें शाही ख़ानदान के लोग पसरगदई ख़ानदान में से हुए जो आगे चलकर हुख़ामंशियान कहलाये। उनकी बड़ाई सब मानते थे। यह राजा थे और दूसरे ख़ानदान वाले उनकी प्रजा। उन्होंने दूसरे ख़ानदानों से सरदार चुने और उनसे एक सलाहकार कौंसिल बनाई। उन लोगों को यह हक़ हासिल था कि जब चाहते बिला वास्ता बादशाह तक पहुँच सकते थे।

हुख़मंशी राज्य

हुखमंशी खानदान कैसे चला इसका पता नीचे दी हुई वंशावली (शजरे) से चलता है:—

(1) Achaemene (हुखमंश) ६५० बी. सी. के लगभग

(2) Tiespes (चिश्पैश)

Anshan line | Persian line

(3) Cyrus I (सहस) | (5) Ariaramnes about ६०० बी. सी.

(4) Cambyses I (कम्बूजा, कैकाउस) | (6) Arsames

Hystaspes

(7) Cyrus the Great (सहस आज़म या कैखुसरो) ५५८ से ५२६ बी.सी. | (9) Darius I (दाराए अव्वल या दारा आज़म) ५२१ से ४८५ बी.सी.

(8) Cambyses II (कम्बूजा या कैकाउस) ५२६ से ५२१ बी.सी.

(10) Xerxes (खशायारशा) ४८५ से ४६६ बी. सी.

|
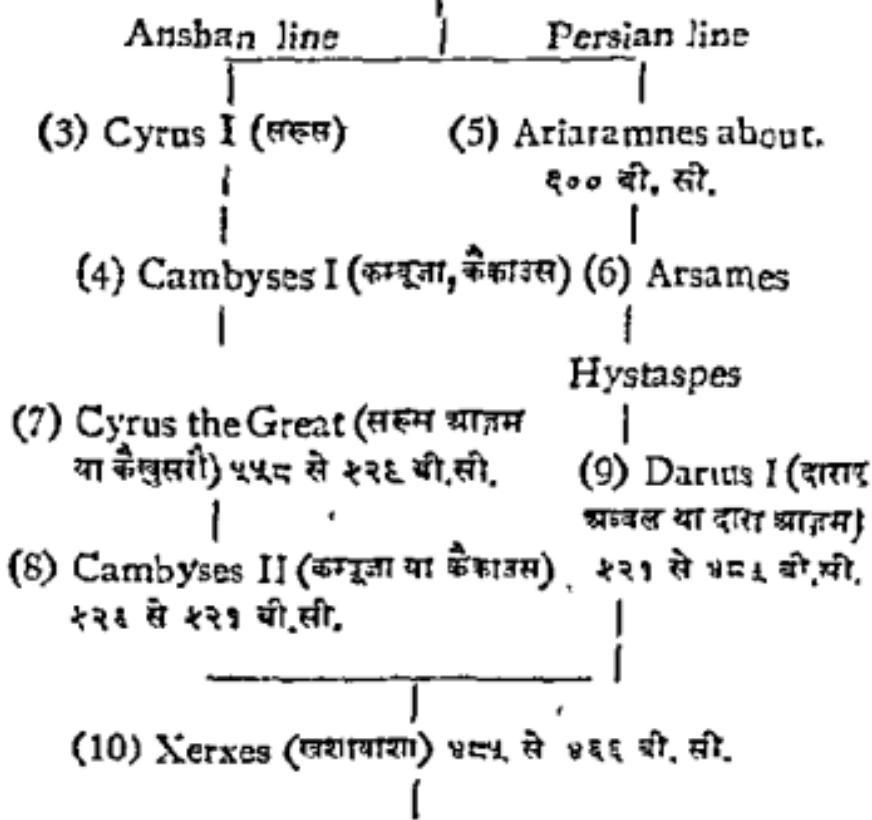
(11) Artaxerxes (Longimannus) ४६६ से ४२५ बी.सी.
(बहमन अर्दशीर दराज़दस्त)

|

(12) Darius Nothus (दारा दोयम) या (दारांन) ४२५ से ४०५ बी. सी.

|

Cyrus the Younger

|

(13) Aartaxerxes II (Mnemon) (अर्दशीर दोयम) ४०५ से ३२८ बी. सी.

|

(14) Artaxerxes III (अर्दशीर सोयम) ३२८ से ३३८ बी. सी.

|

(15) Darius Codomannus (दारा सोयम) ३३८ से ३३० बी. सी.

यह आख़िरी हुख़मंशी बादशाह हुआ है।

ईरानी सल्तनत का बानी हुख़मंश (Achaemenes) हुआ है। उसकी याद अब भी ईरान में लोग मनाते हैं उसी ने ईरान की क़ौम को बनाया।

उसका लड़का "चिश्पैश" हुआ है जिसने एलम से अनशान का सूबा लेकर उस पर भी क़ब्ज़ा जमाया। उसकी औलाद में कमबूजा (Cambyses) हुआ और उसकी औलाद में साइरस (Cyrus) या सरूस-आज़म हुआ उसके बारे में बताया जा चुका है कि मीड्स के बादशाह अस्तूवेगू की लड़की मानदेन (Mandane) से पैदा था।

और उसके बाद फ़ार्स और अंशान के ख़ानदान जो अलग अलग थे मिल गये। सरूस सबसे बड़ा बादशाह हुआ है। जिसे कैख़ुसरो भी कहते हैं। इस ख़ानदान का सिलसिला ईरानी रवायत में यूँ है।

फ़रीदूं (हुख़मंश)
|
एरिज
|
मनूचिहर
|
कैक़ुबाद (कियान)
|
कैकाउस (कमबूजा) Cambyses I
|
सेश्राउस
|
कैख़ुसरो आज़म (Cyrus the Great) ५५८ से ५२६ बी.सी.
|
कैकाउस (Cambyses II) ५२९ से ५२१ बी. सी.
|
दारा (Darius I) ५२१ से ४८५ बी. सी.
|
ख़शायारशा (Xerxes) ४८५ से ४६६ बी.सी.
|
बहमन अर्दशीर दराज़दस्त (Artaxerxes Longimannus) ४६६ से ४२५ बी. सी.

इन बादशाहों के यहाँ बहुत ज़्यादा तहज़ीब फैली और ईरानी
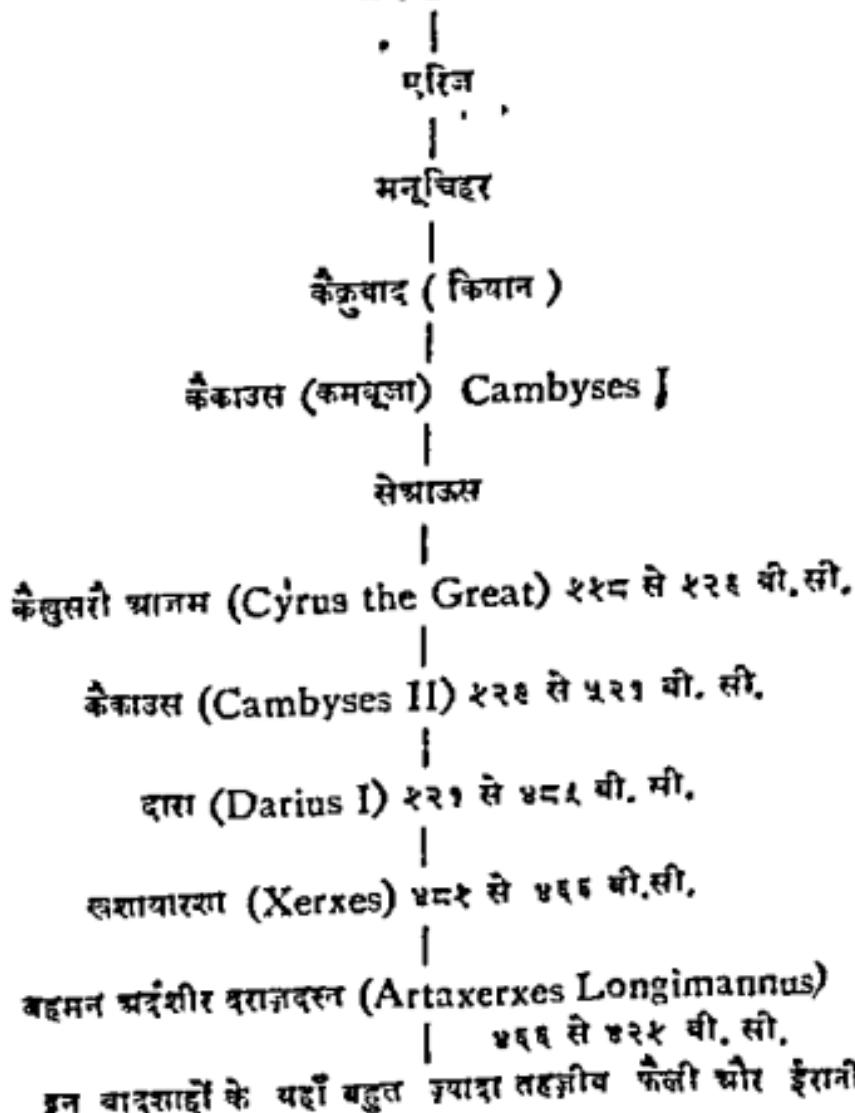
इन्हीं को अपना पुरखा मानते हैं और इस खानदान के खतम होने के बाद भी ईरानियों को इनसे इतनी मोहब्बत रही कि बीच की तारीख़ को खतम करके जिसमें ३३० बी. सी से लेकर २२६ ईसवी का ज़माना आ जाता है यह अपने एक नये ईरानी खानदान को मानते हैं जो सासानियों के नाम से २२६ ई० में शुरू हुआ और ६५१ ई० तक आखिरी बादशाह ज़िन्दा रहा। इस खानदान में २६ बादशाह हुये जिनको बहमन अर्दशीर-दराज़दस्त हुखमंशी बादशाह की औलाद में समझा जाता है। इनका हाल आगे आयगा।

ईरान की यह शानदार सल्तनत और वहां की तहज़ीब

यह आम बात है कि तहज़ीब या सांस्कृति हमेशा पहले दुनिया की उपजाऊ ज़मीनों या बड़े दरियाओं की घाटियों में फैलती है। फिर आसपास के पहाड़ों पर। जैसे ईरान में "कोहेबाबा" या हिन्दूकुश पहाड़ है जिसे "बामे दुनियाँ" यानी दुनियाँ की छत कहते हैं। इन जगहों पर नाज बहुत अधिक होता है क्योंकि यहाँ खेती बाड़ी खूब हो सकती है। दरिया के द्वारा आने जाने की और चीज़ें लाने और ले जाने की आसानी होती है। चरागाह और चरवाहे, मवेशी पालने के ज़माने या पास्टोरल स्टेज से ताल्लुक़ रखते हैं जिसमें भेड़, बकरियों और मवेशियों के गल्ले चलते फिरते नज़र आते हैं। आज भी सीसतान में ऐसा होता है। ईरान के पच्छिम में दजला और फुरात की घाटियाँ हैं मोडया और परशिया, की सल्तनतें यहीं क़ायम हुईं। यहाँ पानी बहुत है। और ज़मीन उपजाऊ है। इसके दक्षिणी हिस्से के पच्छिम में क़ारून की घाटी है इसको ऐलम भी कहते हैं और आजकल इसको अरबिस्तान कहते हैं यहीं सबसे पहले संस्कृति फैली। क़ारून दरिया के किनारे ऐलम सल्तनत के अन्दर संस्कृति की बहुत उन्नति हुई लफ़्ज़ ऐलम के माने पहाड़ के हैं। सूसा इस सल्तनत की राजधानी थी। ऐहवाज़ और शूस्तर दूसरे बड़े शहर थे। यहाँ की तहज़ीब बहुत

की सहज़ीब के मानइन्द थी जो सामी थी, फिर आर्या अमर फैज़ा १,५०० बी० सी० के क़रीब पैदा हुआ। यहाँ की खुदाई में ८,००० बी० सी० के मिट्टी के बर्तन निकले जो बहुत ही अच्छी क़िस्म के थे। इन बर्तनों पर पुराने ज़माने के हिन्दसों के निशान हैं जिनको तारीख़ से पहले का कहा जा सकता है। इनके अलावा मिट्टी की बनी हुई चीज़ें भी मिलीं जिनमें छेद बने हुये हैं यह छेद पकाये जाने या जलाये जाने से पड़ गये हैं। फिर ईंटें मिली हैं जो बहुत बुरी तरह से पकाई गई हैं और जिनकी शक्ल आधी गोलाई लिये हुये है।

यह प्राचीन संस्कृति हख़ामनेशियान (Achaemenian) के ज़माने में सरूस (Cyrus) यानी क़ैख़ुसरो और कैकाउस (Cambyses II) यानी कम्बूजा दोयम के समय में बहुत तरक्की पर थी। सरूस (Cyrus) ने दुनिया में शासन प्रबन्ध और क़ौमों के मिलाप के सिलसिले में बहुत काम किया। इतिहास में उसका दर्जा बहुत ऊँचा है। उसके ज़माने में ख़ुशहाली, अमन और चैन हर तरफ़ था— और इन्साफ़ और न्याय में वह बहुत मशहूर है। उसके बाद आने वाले बादशाहों ने भी उससे बहुत कुछ सीखा। सरूस, कम्बूजा और दारा के ज़माने में इतनी तरक्की हुई और उन्होंने इतनी अच्छी बातें फैलाईं जिनसे रोम वालों को भी ताज्जुब हुआ। इस आर्य सल्तनत की उन्नति को देखकर सिकन्दर भी हैरान रहा। सिकन्दर और सरूस में बहुत समानता है। जो बात सरूस पूरब से पच्छिम की तरफ़ फैलाना चाहता था वही बात सिकन्दर ने पच्छिम से पूरब की तरफ़ फैलाई और सिकन्दर के दिल में इस ईरानी बादशाह सरूस की बहुत इज़्ज़त थी और वह इसकी वजह से ईरान वालों की बहुत क़द्र और उनका बहुत ख़्याल करता था। उसने ईरानी और यूनानी समाजी धाराओं को मिलाया और यूनान में ईरान की सभ्यता फैलाई इसलिये कहा जाता है कि सिकन्दर के ज़माने का इतिहास ईरानी इतिहास से

मिला हुआ है। सिकन्दर के बारे में यहाँ ज्यादा लिखना उचित नहीं है मगर चूंकि उसका सरूस से मुक़ाबिला करना था ताकि सरुस का हाल अच्छी तरह जाना जाये इसलिये सिकन्दर का हाल यहाँ लिखना ज़रूरी हो गया। जहाँ तक खुद सरुस की बड़ाई का सम्बन्ध है इसका अन्दाजा सरुस की क़ब्र को देखने से होता है जो पसरगद्दई में मौजूद है और जिसको देखने से उस समय की संस्कृति की बड़ाई का पता चलता है। सरूस के बाद कम्बूजा हुआ जिसने ५२१ बी.सी. में आत्म हत्या कर ली, इसके बाद एक और आदमी ने राज्य पाने का अधिकार जताया वह वास्तव में मजूसी (Magian) था मगर उसका कहना था कि वह कम्बूजा का भाई "बारदिया" है। इसके बाद दारा ने जो मिश्र में था वापस आकर इस झूटे आदमी को जिसका नाम गौमाता था और जिसने सलतनत हड़प कर ली थी मार डाला। इसके बाद एक आम बग़ावत फैली जिसका असर ऐलम, बाबुल, मीडिया और फ़ार्स हर जगह हुआ। इसकी वजह यह थी कि गौमाता ने बहुत से कर माफ करके रियाया को अपना लिया था।

उसके बाद दारा बहुत ठाटबाट और शान से सरूस (कैखुसरौ) के तख्त पर बैठा। एक चरखा या पत्थर में खुदी तस्वीर (Basrelief) बेहिसतून पहाड़ में एक चट्टान पर उभरा हुआ पाया गया है जिसमें दिखाया गया है कि कैसे दारा का बायां पांव गौमाता के मरे हुये बदन पर है और बहुत से दुश्मन सामने बंधे हुये खड़े हैं।

बेहिसतून के और भी बहुत से चरखों से दारा की शान और शौकत जाहिर होती है।

दारा से पहले सरस ने बेहिसतून पहाड़ में बहुत से शिलालेख (Basreliefs) खोदे हैं जिनके देखने से बहुत सी बातें मालूम हो जाती हैं। सरस ने बहुत ही अक़्लमन्दी से राज्य किया उसके समय के दूसरे बादशाह बाबुल में Nodonidius और लीडिया में

कम्बूजा के बाद दारा बादशाह हुआ और जिस तरह महस एक बहुत बड़ा विजय पाने वाला बादशाह हुआ है इसी तरह दारा एक बहुत बड़ा शासक (Administrator) था। इसने अपनी बड़ी सल्तनत को बहुत से हिस्सों में बाँट दिया था और हर हिस्से पर सतरप (Satrap) मुकर्रर किया जिसको बहुत ज्यादा अधिकार दिया गया था। इसके साथ दो अफ़सर और होते थे। एक जनरल और दूसरा सेक्रेटरी और यह तीनों मिलकर बादशाह के सामने हर बात का जवाब देने के जिम्मेदार होते थे। हर बड़े से बड़े अफ़सर की जाँच हो सकती थी। सतरप से नक़्द और जिन्स दोनों तरह का टैक्स लिया जा सकता था। इन बातों को देखते हुये हम कह सकते हैं कि दारा का ज़माना बहुत शानदार था। वह दराय आज़म कहलाता था। मिश्र के अलावा पंजाब और सिन्ध के इलाक़े भी इसकी सल्तनत में शामिल थे और मक्दूनिया (Macedonia) भी। इस वक्त की सभ्य और मोहज़्ज़ब और जानी हुई दुनियाँ का ज़्यादा हिस्सा इसके पास था। अफ्रीका की जलती रेत से लेकर चीन की सीमा तक इसमें सम्मिलित थी। दारा के ज़माने में कुल आमदनी का अन्दाज़ा साढ़े तीन मिलियन पौंड के लगभग किया जाता है। सही रक़म ३,७०८,२८० पौंड थी यानी ५२,५००,००० रु० के बराबर थी और आज कल के ज़माने को देखते हुये यह रक़म बड़ी थी। अभाग्य से पेशदादियान या हुख़मंशियान (Achaemenians) ख़ानदान के राजाओं ने बहुत दौलत जमा की जो सोने की शक्ल में थी जिससे तिजारत पर बहुत बुरा असर पड़ा। दारा ने पहली बार सोने और चाँदी के सिक्के बनाये जो डैरिक (Daric) (१) और

---

(१)--Daric डैरिक एक यूनानी लफ़्ज़ से निकला है, जो (Nabonidiuse) के समय एक लफ़्ज़ दारीकूह था जो इस लफ़्ज़

सिडलाय (Sidlioi) कहलाते थे। डेरिक का वज़न १३० ग्रेन सोना होता था, और इसका सोना बिल्कुल शुद्ध सोना होता था। यह बहुत दिलचस्प बात है कि अंग्रेज़ी सिक्का पौंड और शिलिंग दोनों ही इस ज़माने के सिक्कों की नकल हैं। डेरिक से दीनार(१) बना। जो चाँदी का एक सिक्का बाद में होने लगा था। बाद के रोमन साम्राज्य में डिनेरियस (Denarius) एक छोटा चाँदी का सिक्का होता था। यह सिक्का आजकल के चार आने के बराबर था। इसका चलन रसूलअल्लाह (Prophet of Islam) के ज़माने में अरब और शाम के मुल्कों में आम था। यही वह सिक्का है जिसे इंजील में पेनी कहा गया है (Matt. 22, 19)। इसी वजह से इसे अंग्रेज़ी लिपि के अक्षर 'd' से लिखते हैं जो डिनेरियस का संक्षिप्त रूप है। इसके बाद इसी को देखकर बनी उमय्या ने अरबी सिक्का दीनार निकाला जो सोने का था। यह बाज़िनतीनी दीनार (Danarius Aurus) की नक़ल में था। इसका वज़न लगभग ६६'३४६ ग्रेन्स ट्रायें (Grains Troy) यानी आधी सावरेन से ज़रा कुछ ज़्यादा होता था।

के लिये आया है इसके माने नहीं मालूम है। सिडलाय (Sidlioi) इमानी लफ़्ज़ Sheklet से बना है। Reference Hill Notes on the Imperial Persian Coinage Vide journal of Hellenic Studies Volume 39 1919. cf. Sykes History of Persia, Vol. I Page 163—

(१)—दीनार शब्द कैसे बना यह बात बताना ज़रा कठिन है, क़ुरान में इसका हवाला यूं है। "व मिन अहलिल किताबे मन इन तामन हो बे क़िन्तारिन योअद्दही इलैका व मिन्हम मन इन तामनहो बे दीनारिन ला योअद्देहो इलैका इल्ला मा दुमता अलैहे क़ायमन"—सूरा आले इमरान रुकू आठ आयत ७२ cf. यूसुफ़ अली क़ुरान का अनुवाद Page 142. Vol. I Foot Note 410.

हुखमन्शी सल्तनत का निज़ाम (Organization)

इस ज़माने में पूरी हुकूमत की बुनियाद बादशाह के ख़ानदान से वफ़ादारी के जज़्बे पर रक्खी हुई थी। इस ख़ानदान के ख़ास आदमी यानी बादशाह को ख़ुदा का दर्जा हासिल था और उसकी शानोशौकत बहुत ज़्यादा होती थी। इस ख़ानदान की शुरुआत सरूस और दारा अव्वल ने की और उनके समय में जो शानदार कामयाबियाँ हुईं उनकी वजह से एक आसमानी और कभी न मिटने वाली शोहरत इन दोनों बादशाहों को मिली। इन बादशाहों के चेहरे के चारों तरफ़ एक नूरानी हाला (Auroel) तस्वीर में बनाया जाता है जिसे अवस्ता में (Hvareno) कहा गया है। आजकल की फ़ारसी में उसे (Farr) कहते हैं। हुखमन्शी बादशाह सम्राट थे और बहुत दूर रह कर हुकूमत करते थे। इनकी रियाया ने अपना समाजीनिज़ाम (Organization) और मज़हब सब अलग रक्खा जो उनका अपना था यहां तक कि उनके सरदार भी अपने होते थे। उनकी रियाया में फ़ुनीशियन, मिश्री, यहूदी सभी थे, और वह अपने सरदारों और हाकिमों के मातहत रहते थे। जब तक यह लोग मातहत सूबों में रहते हुये शाहंशाह को मानते रहे और कर देते रहे उनसे कोई झंझट नहीं किया जाता था। इन सबको चाहे इसमें वज़ीर हों या जनरल, शाहंशाह का बन्दी (Bandaka) या ग़ुलाम समझा जाता था। थोड़े दिन पहले तुर्की के दरमियान वहाँ के बादशाहों की नज़र में दूसरे सब ग़ुलाम समझे जाते थे और एशिया की बादशाहत का यही रंग रहा है। ईरान की इस बड़ी सल्तनत में जिसके बराबर बड़ी सल्तनत दुनिया में पहले नहीं हुई तरह तरह की क़ौमें अलग अलग ज़बानें बोलने वाली सब एक ऐसे बन्धन में जकड़ी थीं जिसका सम्बन्ध और शासन प्रबन्ध असीरिया और बाबुल से था। सरस के पुरखे सूसा से चलकर वहाँ पहुंचे थे

और वहां से बहुत कुछ उन्होंने सीखा था उस ज़माने के दफ़्तरी ओहदेदारों ने एक नई लिपि निकाली जिसमें वेहिसतून के बहुत से कतबे या शिलालेख आज भी लिखे हुये पाये जाते हैं इनके अन्दर दारा अव्वल के बहुत से कारनामे मिलते हैं। हुखमन्शी सल्तनत बहुत सी सतरपयों (सतरप=Khshathrapa) या Viceroyalties में बटी हुई थी। इस बड़े अफ़सर यानी सतरप के साथ जैसा ऊपर आ चुका है एक सेक्रेटरी या चांसलर होता था जिसका काम खुद सतरप के ऊपर निगरानी करना होता था और शाहंशाह के यहाँ सतरप की जासूसी करता था। यह खुफ़िया पुलिस का आदमी होता था। फ़ौज की कमांड एक जनरल के हाथ में होती थी जिसको करानोस (Karanos) कहते थे और शहर के क़िले का ख़ास अफ़सर अरगापत कहलाता था। सतरप, सेक्रेटरी, और जनरल ऐसे ओहदेदार थे जो एक दूसरे के मातहत नहीं होते थे। शाहंशाह से उनका सीधा ताल्लुक़ होता था और वहीं से उनको हुक्म मिलता था जो डाक के ज़रिये आता था जिसके लिये पूरी सल्तनत में रास्ते बने हुये थे। सेक्रेटरी के अलावा, जिसका काम शाहंशाह को ख़बरें पहुँचाना होता था और भी बहुत से पुलिस के आदमी यही काम करते थे। इनको शाहंशाह की आँखें और कान समझा जाता था। यह लोग बहुत दूर दूर की ख़बरें लाते, इनकी हिफ़ाज़त और वक़्त पर मदद देने के लिये फ़ौज के सिपाही हुआ करते थे। इन लोगों की रिपोर्ट पर शाहंशाह ऐसे हुक्म दे देता था जो बदले नहीं जा सकते थे। गवर्नरों तक को सूबों से वापस बुला लिया जाता और उनकी जांच किये बग़ैर और इस बात का मौक़ा दिये बग़ैर कि वह अपने लिये कुछ कह सकें उनको क़तल तक कर दिया जाता था। ज़्यादातर यह काम खुद उनके सिपाही करते। सम्राट की इतनी ज़्यादा ताक़त थी कि उस पर कोई रोक नहीं थी। ऐसी बातें सिर्फ़ ईरान में नहीं बल्कि तमाम एशिया में पाई

जाती थी। ज़रूरत पड़ने पर सतरप अपने हाथ में फ़ौजी मामलात भी ले लेता था। शुरू में ऐसा बहुत कम होता था परन्तु सिकन्दर के ज़माने में ऐसा होने लगा था। सतरप के कामों में यह भी था कि वह कर जमा करे जो कुछ तो नक़द और कुछ जिन्स की सूरत में मिलता था। मातहत सल्तनतों से मुक़र्रर रक़म ख़िराज की मिलती थी। मुख्तलिफ़ जगहों से तरह तरह का ख़िराज आता था जैसे ग़ल्ला, गुलाम, भेड़ें, खचर, परदे, शिकारी कुत्ते और सोने का चूरा (Gold dust)। हब्श से हर तीसरे साल सोना, हाथी दांत, आबनूस और पांच बच्चे भेजे जाते थे। Cholcis से हर पांच साल बाद सौ लड़के और सौ लड़कियाँ, अरेबिया से १०० हन्डरवेट लोबान हर साल आता था। इन सब जगहों से सालाना आमदनी ४,०००,००० पौंड के क़रीब होती थी। दारा के बारे में कहा जाता है कि कर लगाने के पहले वह सूबे के रहने वालों से यह बात मालूम कर लेता था कि वह लोग इस कर को जो लगाया जाने वाला है दे भी सकेंगे या नहीं। जब वह कहते थे "हाँ दे सकेंगे" तो दारा इस कर को आधा कर देता था। इस बात का ख्याल करते हुये कि सतरप को भी अपना काम चलाने के लिए कुछ हिस्सा मिल जाय। सतरप का सरकारी कर लगाने में कोई हाथ न होता था अगर वह मुक़र्रर रक़म भेज देते जिसके मुताबिक उनके सूबे पर कर लगाया गया हो तो बाकी आमदनी के बारे में कोई सवाल नहीं किया जाता। कभी,कभी बादशाह के छोटे अधिकारी (Mincr Potentates) अपनी जेबें भरने के लिए जनता को खूब सताते थे। और यह बात पूर्वी देशों में अब भी पाई जाती है। दारा अव्वल के समय में ऐशियामाईनर में सिक्के चालू हो गये थे। कारून ने सोने च दी के सिक्के बनवाये थे और बाबुल के बादशाहों ने भी। दारा ने आमतौर पर सोने के सिक्के बनवाये जिनमें एक तरफ़ एक कमान चलाने वाले की तसवीर होती थी जो अपना

एक घुटना ज़मीन पर टेक कर कमान का चिल्ला खींचता दिखाया जाता था।

सतरप (Viceroy) के इख़्तियारात बहुत ज़्यादा होते थे। वह लूट मार और ख़ानगी झगड़ों को बिल्कुल ख़तम कर देते थे। सड़कों को दुरुस्त और पुरअमन रखते थे। खेती बाड़ी की हिफ़ाज़त करते थे। दारा ने एक बार सतरप गदातास की इस तरह तारीफ़ की थी कि इसने ऐशियामाइनर में बहुत से पेड़ लगवाये थे और शिकार के लिये एक पार्क तैयार किया था जिसमें बादशाह शिकार खेला करता था। हुखमन्शी बादशाह बड़े-बड़े पार्कों में जिन्हें (Paradise) कहते थे शिकार खेलने का बहुत शौक़ रखते थे। यह पार्क चहार-दीवारी से घिरे होते थे और इतने बड़े होते थे कि उनके अन्दर बहुत से जानवर पले होते थे। बादशाह और उसके साथियों के आराम के लिये सायदार जगहें (Favalions) बनी होती थीं। सिडान (Sidon) के पास एक ऐसे ही (Pavalion) के निशानात पाये गये हैं जिसके साथ बड़े-बड़े बैलों की मूर्तियाँ बनी हैं जो घुटनों पर झुके हुये हैं। इस तरह के बैलों की मूर्तियाँ जिनकी पीठें आपस में मिली हैं परसीपोलिस (Persepolis) और सूसा के खम्भों के सिरों पर भी बनी थीं।

फौज

इनका फ़ौजी शासन प्रबन्ध अच्छा न था। दारा ने एक शाही बाडीगार्ड सेना को क़ायम किया था जिसमें दो हज़ार सवार और दो हज़ार प्यादे थे। इनके पीछे लगभग १०,००० फौज होती थी जो Immortals कहलाते थे। जंग के मौक़े पर बहुत से वालंटियर जिनको ट्रेनिंग नहीं मिल पाती थी फ़ौज में आकर मिल जाते थे। इनकी ज़बान और तरीक़ा, रहन-सहन और लड़ने का सामान बिल्कुल अलग दूसरी तरह का होता था, जिसका कोई एक उसूल और नियम

नहीं था। जब फ़ौज ऐसी हो तो खुली बात है कि इसकी सफलता में बहुत शक होना चाहिये और अक्सर कोई छोटी सी भी फ़ौज जो बाक़ायदा होती थी उससे भी यह फ़ौज हार जाती थी जैसे कि यूनान की फ़ौज जिसकी ट्रेनिंग बहुत आला होती थी और उनकी संख्या कम होते हुये भी जीत हमेशा यूनानियों की ईरानियों के मुक़ाबले में होती थी। बादशाह की हिफ़ाज़त के लिये फ़ौजी दस्ता ईरानियों और मीड्स में से भर्ती होता था और कभी कभी सूसा के बाशिन्दों में से भी। इस दस्ते की तीन कम्पनियाँ होती थीं जिनमें दो हज़ार घुड़सवार और दो हज़ार पैदल सिपाही होते थे जो सबके सब शरीफ़ ख़ानदान से होते थे इनके पास ऐसे नेज़े होते थे जिनके सिरों पर चाँदी सोने के सेब बने होते थे और इस कारण इनको यूनानी में मेलोफोर कहते थे। उनकी बर्छियाँ ७ फ़ीट लम्बी होती थीं और साथ ही साथ उनके पास कमान और तीरों का तरकश भी होता था। इसके बाद दूसरी फ़ौज थी जो Immortal कहलाती थी। इसमें दस पलटनें होती थीं यानी कुल १०,००० सिपाही होते थे इनमें से एक पल्टन के नेज़ों में सोने के अनार लगे होते थे। उनका नाम Immortal इसलिये पड़ा कि जब उनमें से एक सिपाही मर जाता तो फ़ौरन एक सिपाही और ले लिया जाता इस तरह उनकी तादाद १०,००० बनी रहती और उसमें कोई कमी नहीं होती। अमरदी (Amardı) लफ़्ज़ से इसका ताल्लुक अगर समझा जाय तो इसके माने यह निकलेंगे कि वह जो कभी न मरे (A=privative & Mereta=to die) यह फ़ौज बाक़ायदा थी और इसके साथ ख़ास जगहों के फ़ौजी दस्ते जो ज़िलों की हिफ़ाज़त के लिये होते थे सिर्फ़ यही कुल फ़ौज ऐसी थी जो बाक़ायदा थी, बाक़ी फ़ौज ज़रूरत के वक्त भर्ती कर ली जाती थी। अगर लड़ाई किसी एक ख़ास जगह होती तो उसके क़रीब जिस सतरप का इलाक़ा होता वह अपने मातहत लोगों से फ़ौज लाने को कहता और अगर

आम जंग होती तो बादशाह ख़ुद फ़ौज की कमांड करता और उसका बाडीगार्ड दस्ता भी मौजूद होता।

अदालतें और इन्साफ

इतनी बड़ी सल्तनत में अदालत और इन्साफ का तरीक़ा बहुत ज़रूरी था। सबसे बड़ी अदालत बादशाह की होती थी। फ़ौजदारी और सज़ा देने के मामले में इसका अधिकार बहुत ज़्यादा था। सल्तनत और ख़ुद बादशाह के ख़िलाफ़ जो जुर्म होता था उसकी सज़ा बहुत सख़्त होती थी। दूसरी बातों और शहरी मामलात से मुताल्लिक़ जुर्मों की सज़ा देने के लिये वह अपने इख़्तियारात अपने मुक़र्रर किये हुये जजों को सौंप देता था। यह बात कम्बूज़ा के ज़माने से होने लगी थी। कभी-कभी रिश्वत लेने और इन्साफ़ न करने की सूरत में जजों को बड़ी सख़्त सज़ा दी जाती थी एक जज सीसमनेज़ (Sisamnes) को मौत की सज़ा इसलिये दी गई कि उसने रिश्वत लेकर बेइन्साफ़ी की थी। इसकी खाल खींच डाली गई और इसके तस्मे बनाकर उनसे उस जगह को मढ़ा गया जहां बैठकर वह इन्साफ किया करता था। इसके बाद इसके लड़के को जज बनाया गया और उसे अपने बाप की खाल पर बिठाया गया। बहमन अर्दशीर (Artaxerxes I) ने इस तरीक़े में यह बात और बढ़ाई कि ज़िन्दा हालत में जजों की खालें खींची जाती थीं और फिर उनसे उनके बैठने की जगह को मढ़ा जाता था। कोई भी शख़्स किसी अकेले एक जुर्म के लिये मौत की सज़ा नहीं पा सकता था चाहे बादशाह ही किसी को ऐसी सज़ा क्यों न देना चाहता हो। हाँ जब जुर्म कई हो जाते तो सख़्त से सख़्त सज़ा दी जा सकती थी। बग़ावत की सज़ा सर काट के या हाथ काट के दी जाती थी। बड़े बड़े कतबों (शिलालेख) में इन सज़ाओं का हाल दिया है जो ख़ास-ख़ास बाग़ियों को दी जाती थीं। इनको बादशाह के दरबार में लाया जाता, इनके नाक कान काट डाले जाते, और फिर इनको इस

बुरी हालत में लोगों को दिखाया जाता और इनको इसके बाद उन सूबों की राजधानी में ले जाते जहाँ उन्होंने बगावत की थी। वहाँ पर उनको मौत की सज़ा दे दी जाती। कभी-कभी बागी का पूरा ख़ानदान ऐसी ही सज़ायें पाता। मौत की सज़ा देने के लिये शहर के छोटे दर्जे के लोग चुने जाते। ऐसी बहुत सी मिसालें मिलती हैं जब कि जल्लादों का काम आम लोगों या दरबार के छोटे छोटे अधिकारियों से लिया गया।

वैसे ईरानियों के कानून सख़्त नहीं होते थे अगरचे बादशाह खुदमुख्तार थे जो चाहे सो करते और जनता की जान और माल इनके इशारे की मोहताज होती थी। आमतौर से जुर्म की रोक थाम की जाती थी, कत्ल, औरतों की इज़्ज़त लेने और बग़ावत जैसे समाजी और लोगों से ताल्लुक़ रखने वाले जुर्मों की सज़ा मौत होती थी। बदमाशों और चोरों को सज़ा ज़रूर दी जाती थी, मगर ज़्यादा सख़्त सज़ा नहीं दी जाती थी क्वीन विक्टोरिया के ज़माने तक इंगलिस्तान में एक भेड़ चुराने की सज़ा मौत होती थी।

"Means of Communication"

हुख़ामंशी ज़माने में दारा ने अच्छे Means of Communication की आवश्यकता का अन्दाज़ा बहुत अच्छी तरह से कर लिया था और बड़ी सड़क की हालत जो Sardes से सूसा जाती थी बहुत अच्छी थी। जगह-जगह डाक चौकी का प्रबन्ध था। इस सड़क की लम्बाई १,५०० मील थी और हर चन्द मील के फ़ासले पर ठहरने के स्थान बनाये गये थे। १५ दिन में यह फ़ासला तय किया जाता था और यह मुद्दत पूर्व की रफ़्तार और यहाँ की मशहूर सुस्ती को देखते हुये बहुत अच्छी थी।

दारा बहुत बड़ा शासक था लेकिन इसके हौसले लड़ाई के मैदान में कभी पूरे न हुये और वह दक्खिनी रूस को इन्तिहाई ख़्वाहिश

रखते हुये भी कभी न जीत सका। थ्रेस और मकदूनिया ज़रूर इसने जीत लिये थे लेकिन सिर्फ़ थोड़े दिनों के लिये। दक्खिन में पंजाब और सिन्ध का कुछ हिस्सा भी इसने जीत लिया था। दारा ने यूनानियों के विरुद्ध जो लड़ाई की इसमें उसे सफलता नहीं हुई। मैराथान की लड़ाई को, जो ४९० बी.सी. में हुई थी ज़माना कभी न भूलेगा इसके बाद अयोनियन ग्रीक्स (Ionion Greeks) ने जो एशिया माइनर में थे बग़ावत की और सार्डीज़ (Sardes) तक अधिकार कर लिया। दारा ने इन विद्रोहियों को दण्ड देने के लिये धावा किया और उसे इसमें सफलता की पूरी आशा थी। मगर ईरानियों ने यह ग़लती की कि Eretria की छोटी सल्तनत पर क़ब्ज़ा करके बदला लेने के सारे हौसले वहीं पूरे कर लिये। जिसकी वजह से ऐथेन्स वालों (Athenians) को तैयारी और बचाव का पूरा पूरा अवसर मिल गया और ईरानियों के लिये इसका नतीजा बुरा हुआ जिससे यूनानियों का बोल बाला हो गया। दारा की मौत ४८८ बी० सी० में हो गई। सरूस की तरह इसका चरित्र और चाल-चलन बहुत ऊँचा था। वह बहुत समझदार शासक था यहाँ तक कि यूनानियों ने भी जो इसके जानी दुश्मन थे इसकी तारीफ़ और बड़ाई की है।

प्राचीन ईरानी, उनके रुसूम, आदात, औरतों का दर्जा बादशाह का दरबार, तफरीहात, सिक्के और मज़हब

रुसूम और आदातः—यह बहुत बहादुर क़ौम थी। यह लोग जुरअत बहादुरी और जंगजूई में आप अपनी मिसाल थे। यूनानियों ने इनकी वीरता की तारीफ़ की है। इनकी इन अच्छाइयों से दूसरी और अच्छाइयां पैदा हुईं जैसे कि यह लोग घोड़े पर बेमिस्ल सवार होते

थे, मकान का सिलसिला सोचने में उनकी तरह कोई नहीं था। सच बोलते थे। क़र्ज़ लेने से बचते थे। अलकरज़ो मिन्नताहुल मुहब्बत यानी क़र्ज़ मोहब्बत को काट देता है वह इस बात को खूब जानते थे। मेहमान नवाज़ी और सख़ावत में मशहूर थे। हेरोडोटस, मशहूर यूनानी इतिहासकार का कहना है कि एक बार एक यूनानी ने अपने जहाज़ के बचाव के लिये लड़ाई लड़ी और ज़ख़्मी हुआ ईरानियों ने उसकी बहादुरी की तारीफ़ की और घायल होने की हालत में उसकी मरहम पट्टी की। ईरानियों के इस अच्छे बरताव की उसने बहुत तारीफ़ की। ईरानियों का कहना था। कि शरीफ़ लोगों के लिये बाज़ार में लेन देन करना बुरी बात है और आज भी कोई ईरानी बाज़ार में जाकर मोल लेना या बेचना पसन्द नहीं करता। ईरानियों में बुराइयां भी बहुत सी रही हैं। इनको अपने ऊपर काबू नहीं होता था। वह बहुत ज़्यादा घमण्डी होते थे। आराम चैन और अच्छी तरह ज़िन्दगी बसर करने से मोहब्बत करते थे। इससे मालूम होता है कि उनकी माली हालत अच्छी थी। बातचीत करने और व्यवहार में बहुत अच्छे थे। ख़र्च बहुत करते थे ख़ासकर खाने पर। उनके बादशाहों के हालात में उनकी दावतों का हाल बहुत आता है। शराब पीने के आदी थे और इस हालत में हमेशा ठीक राय देते थे। बदमस्त नहीं होते थे। उनका दस्तूर था कि रात को शराब पीते फिर वह मशवरा देते। इसके बाद सुबह को अपने फ़ैसले पर दुबारा नज़र डालते। औलाद का ज़्यादा होना ख़ुशक़िस्मती की निशानी समझते थे। इसके ख़िलाफ़ आजकल योरोपियन को देखें तो वह अपनी इस ज़िम्मेदारी से भागता है। बहुत ज़्यादा औलाद होने (Philoprogenitiveness) की मिसाल में फतेहअली शाह को पेश किया जा सकता है। मरने के समय इनकी औलाद सब मिलाकर लगभग ३,००० थी।

औरतों का दर्जा—बहुत सी बीवियां रखना एक आम बात थी।

पर्दा भी आम था। डोली का रिवाज था शिमी कतने (शिलालेख) या मूर्ती में औरत को नहीं दिखाया गया है। आजकल पूर्व के मुल्को में जो हालत है वही हालत इनके यहाँ भी थी। धीरे धीरे ख्वाजासरा यूनक (Eunuch) और महल या हरम (Seraglio) के अन्दर औरतों ने मिलकर अख़लाक़ी हालत और हुकूमत की शान को गिरा दिया था। यूनान की औरत का दर्जा ईरान की औरत से बेहतर था। पर्दा वह भी करती थी मगर वह ईरान की औरत से ज़्यादा होशियार और काम करने वाली होती थी। कातना और बुनना जानती थी और इसलिये बच्चों की देख रेख और परवरिश में उसने खास हिस्सा लिया।

बादशाह और उसका दरबार

ईरान में तमाम क़ौमी ज़िन्दगी का केन्द्र बादशाह और उसका दरबार होता था। मीडियो ने इस बात में असीरिया की पैरवी की और ईरानियों ने इसको आगे चलाया। खुद असीरिया वाले इन बातों को दूसरी क़ौमों से लाये, आज भी बादशाह के लक़ब (Titles) और इनका अदबे मजलिसी (Etiquette) वैसा ही है।

बादशाह—(Sovereign), क़िबलये आलम (The pivot of the Universe), सुलतान (Sultan), आला हजरत हुमायूं (His Auspicious Majesty), आला हज़रत शहरयारे (His Royal Majesty), शहंशाह (The King of kings), आला हज़रत मलूकाना (The Royal possessors of kingdoms), आलाहज़रत ज़िल्लुल्लाह (His Majesty the Shadow of Allah), खाक़ान (The Khakan)।

हर चीज़ बादशाह से ताल्लुक़ रखती थी। क़ानून और इज्ज़त सबका दारोमदार इसके क़िरदार, चालचलन, स्वभाव और इरादे पर होता था इन्हीं बातों की कमी या ज़्यादती सल्तनत की उन्नति

या दाढ़ी की गर्द हुआ करती थी। मगर बादशाह पर कुछ रुकावटें भी लगाई जाती थीं। कौमी रस्म रिवाज को मानना, अमीरों से मशवरा करना, जो हुक्म एक बार दिया जाये उसकी पाबन्दी करना इत्यादि इत्यादि।

लिबास—(पहनावा)

लिबास पर लम्बी कबा (Robe) या जुब्बा होता जिसका रंग गहरा नीला होता था। उसमें अर्गवान का होना ज़रूरी था और तमाम लिबास पर मछलियों के निशान जैसे निशान बने होते थे। सर पर ऊँचा तेहरा ताज (Tiara) या पुरानी ईरानी दस्तार या मुकुट होता जो बिल्कुल जड़ाऊ होता था। इसे सिर्फ़ बादशाह पहन सकता था। कानों में बाले होते, और जोशन और कंगन (Bracelets), ज़ंजीर और पेटी या पटका सोने का होता था। यह सब चीज़ें पत्थरों पर मूर्ती दिखाई पड़ती हैं कि कैसे मूर्तियाँ इनको पहने हैं। हथियारों में छोटे नेज़े, बड़ी कमानें और नरकुल (Reed) के तीर होते थे। ख़ंजर हमेशा कमर से लटकते रहते थे। बादशाह ऊँचे तख़्त पर बैठता था। हाथ में एक नोकदार लकड़ी (Sceptre) होती थी जिस पर गोल सेबदार मूठ होती थी, मोरछल पीछे झला जाता था। सबसे बड़ा अफ़सर फ़ौज का सेनापती होता था दूसरे अफ़सर ख़ादिम ख़ास-(Chief Steward) महलदार और ख़ास ख़्वाजासरा (Chief Eunuch) होते थे। जासूसी का आम रिवाज था। जासूसों को बादशाह का ख़ास जुज़ या हिस्सा यानी कान और आँखें समझा जाता था फिर हाजिब(Chamberlain), पुलिस के अफ़सर, जामदार, शिकार करने वाले मीर शिकार, पैग़ामबर यानी सन्देस ले आने वाले गवैये और गायक, बावर्ची वग़ैरह दूसरे अफ़सर होते थे। Ctesis का कहना है कि बादशाह के रसोई घर से रोज़ाना १५,००० आदमी भोजन पाते थे। भेड़-बकरी, ऊंट, बैल, घोड़े और गदहे का गोश्त खाया जाता था। अब ऊँट

नहीं मिलते और घोड़ा, गधा इस्लाम ने अशुद्ध कर दिया है। शुतुर्मुर्ग और हंस भी खाये जाते थे और सबके सब शिकार किये हुये परन्दे भी। बादशाह अकेला खाना खाता और कभी उसके बच्चे और मल्काभी साथ होती थी। सोने के कोच या सोफ़े पर लेटकर बादशाह शराब पीता था खाना सोने या चांदी के बर्तनों में खाया जाता और बड़ी दावतों में बादशाह बड़ी शान से मुख्य स्थान पर बैठता था।

तफ़रीहात और खेल— सब बादशाह ज़्यादा तर अपना वक्त जंग और शिकार में गुज़ारते थे मैदाने जंग में बादशाह फ़ौज के बीच में रहता था और बहुत बहादुरी दिखाता। आम शिकार कुत्तों से किया जाता था मगर शेर का शिकार तीर और तुफ़ंग, नेज़े और तलवार से किया जाता था। बड़े जंगलों के अन्दर अहाता खींच कर जंगली जानवर पाले जाते। ऐसे हल्कों को या घेरे को Walled Parks कहते हैं। गोरख़र (Wild Ass) का शिकार बहुत ख़ास होता और इसका बहुत प्रबन्ध किया जाता था। महल के अन्दर बादशाह पच्चीसी या नर्द खेलता था फूल पत्तियां या जाली का काम बनाता या लकड़ी पर खराद करता था, जिसे Wood Carving कहते हैं। इसके अतिरिक्त पुराने बादशाहों के किस्से और हालात सुनता और पढ़ता लिखना मामूली जानता था। कुछ ख़ास लोग लिखना पढ़ना जानते थे। असीरिया की तरह इस चीज़ का यहां आम रिवाज न था। अदब या साहित्य की उन्नति ज़्यादा न हो सकी। बादशाह आम तौर से जाहिल और अनपढ़ होते थे। आज भी ईरान में पढ़े लिखे होने का आमचर्चा नहीं है और बड़े आदमी ज़्यादा पढ़े लिखे नहीं होते हैं मगर उनके अनपढ़ होने का पता नहीं चलता, ज़्यादातर उनके ख़तों पर हस्ताक्षर नहीं होते बल्कि मोहर होती है।

सात अमीर या शहज़ादे बादशाह के दरबार में ऐसे होते जिनकी बहुत इज़्ज़त की जाती। उनको यह आसानी थी कि वह बादशाह से हर

बाद मिल सकते थे परन्तु शर्त यह थी कि यह हरम के अन्दर न हो। यह शहजादे शाही कौंसिल के मेम्बर होते थे। यह बड़े बड़े ओहदेदार होते और उनके नीचे शाही खान्दान के दूसरे लोग होते थे। क्यों कि तिजारत को बहुत नीची नज़र से देखते थे - इस वजह से आमलोगों (Commoners) और अमीरों (Aristocrates) के बीच में कोई और तबक़ा न था। बादशाह के सामने आम लोग दण्डवत करते और जब वह दरबार में आते तो उनके हाथ छुपे होते थे। महल में मल्का की हैसियत बहुत ऊँची होती थी। ख़ास मल्का ताज व मुकुट पहनती इसकी अपनी अलग जायदाद और आमदनी होती थी नौकर चाकर भी अपने अलग होते। अगर मल्का अच्छे चाल चलन की होती तो इसका बहुत बड़ा असर होता था। दूसरी बीबियों का असर इतना न होता था। बादशाह की मा (राजमाता) की हैसियत बहुत ही ऊँची होती थी। इन बातों को देखते हुये अन्दाजा होता है कि महल का खर्च बहुत ज्यादा होता होगा।

पसरगदई के खंडरात

परसा या परसिस का मुख्य स्थान परसीपोलिस अरबी में इसे इस्तख् कहते हैं। यह जगह पसरगदई के बाद कायम हुई। यह एक बहुत शानदार जगह थी और एक बड़ी सल्तनत का सदर मुक़ाम होने की वजह से इस बहुत अहमियत हासिल थी। यहां पर तख़्ते सुलेमान भी पाया जाता है। इसकी सतह ३०० फीट लम्बी है। इसके पास ही सरूस की वह बड़ी मूर्ती है जो टूट जाने के बाद भी बहुत शानदार लगती है। इस मूर्ति में पर लगे हैं और चेहरा आर्यन है। अगरचे धुधला पड़ गया है। नीचे यह लिखा है —

"I Cyrus the Super-human King the Achaenenian" जिसके माने यह हैं कि मैं सरस इन्सानों से ऊँची हस्ती

वाला हुख़ामंशी बादशाह हूँ। Huart का कहना है कि एक पत्थर की चट्टान पर एक ऐसे आदमी की तस्वीर खुदी हुई है जो पैरों के गट्टों तक लम्बा लिबास पहने है जिसके सिरे पर एक झालर सी है, मूर्ती का सीधा हाथ झुका दिखाई देता है और उसमें कोई ऐसी चीज़ है जो साफ़ नज़र नहीं आती। मूर्ती के बाल चार लटों में है और ठुड्डी के पास तक लटकते हैं। सिर के ऊपर जँगली बकरे के दो सींग ऐसे उठे हुये है जिन पर सिर का लिबास ठहरा है। इस लिबास में सूरज के तीन चक्र (Disks) दिखाई देते हैं जिनके ऊपर नख़्ल की शाखें है और शुतुर्मुर्ग के पर तथा दो साँप लिपटे हैं। इस मूर्ती के चार बड़े बड़े पर हैं जिनमें से दो ऊपर को उठे है और दो नीचे को झुके हैं किसी ज़माने में इस मूर्ती पर एक लिखावट थी जो अब धुंधली पड़ गई है और जिसका मतलब यह निकलता है "मैं सरस हुख़ामंशी बादशाह हूँ" इस मूर्ती का स्टाइल असीरियन है जिससे माने है कि इसके बनाने वाले असीरिया से आये थे।

मक़बरे
(Sepulchres)

सरस का मक़बरा जिसे मशहद् मादरे सुलेमान कहते हैं एक ज़बरदस्त तारीख़ी इमारत है। इसके बाद इस्तख़ या पर्सीपोलिस की इमारतें आती हैं। पसरगदई के खन्डहरात पोलवार की घाटी के ऊपरी हिस्से में पाये जाते हैं मगर इस्तख़ या पर्सीपोलिस का शहर मॅवदश्त के मैदान में था और इन दोनो जगहों के बीच ५० मील की दूरी है। इस्तख़ का प्लेटफ़ार्म ज़मीन से ४० फीट ऊँचा है, इसकी लम्बाई १,४०० फीट और चौड़ाई ६०० फ़ीट है। इसका ज़ीना पत्थर की चट्टान को काटकर बनाया गया है। इसे दारा के लड़के ज़रज़ेकस या खशायारशा ने बनवाया था और इसकी बरसाती में इसका नाम यूं खुदा हुआ है - "शाहशाह, कई ज़बानें जानने वाली रियाया का हाकिम, दारा का लड़का" यह बरसाती

बहुत शानदार है, इसमें बड़े बड़े खम्भे हैं जिनके ऊपर इन्सानी सर बने हुये हैं। इस बरामदे से गुज़र कर एक और बड़ा ज़ीना आता है जिस पर कुछ मूर्तियाँ बनी हुई हैं। इसके बाद एक खुली छत (Terrace) है जिसकी दीवार १२ फ़ीट ऊंची है जिसमें बहुत शिलालेख पाये जाते हैं। यह दीवार तीन हिस्सों में बटी है। बाईं तरफ़ एक हिस्से में रथ, घुड़सवार, हथियार बन्द सिपाही, बादशाह के बाडीगार्ड वगैरह हैं जिनके साथ मेढे हैं और सीधे हाथ की तरफ़ सर्व के दरख्त हैं और बहुत सी क़ौमें बादशाह को भेंट दे रही हैं। ख्शायारशा या जरक्सिस का हाल इसके बाद आता है जिसके ७० खम्भों में से सिर्फ़ १२ खम्भे बाक़ी बचे हैं। देवदार की छत है। पूरी इमारत हाल की इतनी बड़ी है कि इसका रक़बा १५० Sq ft है। यहाँ पर दारा का महल भी है इसके बाद सौ खम्भों वाला हाल पाया जाता है जो बहुत बड़ी इमारत है और जिसमें नक्शोनिगार बहुत खूबसूरत हैं। बादशाह की तसवीर एक शिलालेख में बनी है, उस पर खुदा का साया पड़ रहा है। शायद इस हाल के अन्दर सिकन्दर ने दावत खाई थी। यहां इसी खंडहर के पच्छिम में चट्टानों के मक़बरे भी हैं जो मिश्र के पेहराम (Pyramids) की नक़ल में हैं। इनमें भी मूर्ती बनी है और वैसी ही कारीगरी की गई है जैसे कि १०० खम्भों वाले हाल में। एक जगह बादशाह अपना हाथ उठाये खड़ा है और ऊपर खुदा (Ahura Mazda= पाक रब) की शक्ल है। इसके अलावा इस ज़माने का मीनाकारी वाला ईंटों का काम जिस पर तरह तरह का रंगीन काम है और फिर सुनारी का काम बहुत कदर से देखा जाता था। ऐसे काम के चिन्ह और आसार मिले हैं। एक रथ भी मिला है जिससे उस ज़माने की कारीगरी ज़ाहिर होती है। इसमें मीनाकारी या रंग भरने का काम भी किया हुआ मालूम होता है। सोने का एक खूबसूरत जग भी मिला है जिसके दस्तेपर शेर के चेहरे की मूर्ती है।

इस समय का कला कौशल

यह न तो बहुत शुरू का था और न बिलकुल सादा था इस पर कई तरह के असर पड़े थे। सबसे ज्यादा कलदानी और असीरिया के असर पड़े थे, जहाँ से हुखामशियों ने बड़े बड़े चबूतरे बनाने और उन पर चढ़ने के लिये दो तरफ से आने वाले ज़ीनों के बनाने का तरीक़ा सीखा। यहाँ ईंटें भी इस्तेमाल की जाती थीं मगर ज़्यादातर इमारत पत्थर की था। इसमें से नीव और तहखानों को छोड़कर हर जगह दरवाज़ों के घेरों और खम्भों तक में पत्थर इस्तेमाल किये गये हैं। दीवारें मिट्टी की बनी होती थीं। एक ख़ास बात यह थी कि इनके यहाँ तस्वीरों में और दूसरी जगह जहाँ दरवाज़े दिखाये गये हैं वहाँ दरवाज़ों पर बड़ी-बड़ी देव जैसी मूर्तियां दरबानी करती दिखाई गई हैं। जब किसी देवता की शक्ल दिखाते तो उनको हवा में लटका हुआ बनाते और उनके चारों तरफ़ रोशनी का एक हाला सा घेरा बना देते जैसा कि सूरज के चारों तरफ होता है। जब बादशाह को दिखाते तो या तो वह दरबार करता हुआ होता या शिकार खेलता हुआ होता या किसी देव को पछाड़ता हुआ होता या आग की पूजा करता हुआ होता। दरबार की सूरत में वह तख्त पर बैठा दिखाया जाता और उसके दरबारी उसके चारों तरफ बैठे होते। उसके सर पर ताज ज़रूर होता और बदन पर नीले रंग का चोगा होता जिससे उसकी बड़ाई ज़ाहिर होती। एक हाथ में उसके लकड़ी और दूसरे हाथ में कोई फूल होता, पीछे नौकर खड़ा होकर मोरछल हिलाता होता।

हुखमशी ज़माने की इमारतों में खम्भे बहुत दिखाये जाते हैं जो मिस्री असर के मातहत हैं। इस तरह के नमूने मिस्र की फतह के बाद कम्बूजा के ज़माने से आम हो गये। मिस्र के मन्दिरों में ईरानियों ने जो सजावट देखी उसे अपने ईरानी महलों में रिवाज

दिया। ईरानियों के यहां मन्दिरों का चलन न था और उनके महल ही उनके यहां ख़ास इमारतें थीं। खम्भों के सर जिनको कैपिटल कहते हैं असीरिया के नमूने के आम थे। मिस्री कारीगरों ने इस्तख़, और सूसा की बहुत सी इमारतों में अपने मुल्क का असर डाला ख़ास-तौर से हुख़ामंशी बादशाहों के मक़बरों पर जिनमें से बाज़ ऐसे हैं जिनको पहाड़ों के अन्दर काटकर बनाया गया है, जैसे कि दारा की क़ब्र में है, और यह बात ख़ास तरीक़े से मिस्र की ऐसी क़ब्रों की नक़ल में है जिनको ज़मीन के नीचे बनाया जाता था।

कहीं कहीं हम ईरानी कला कौशल में कुछ ऐसी बातें भी पाते हैं जो ईरान की अपनी निजी हैं। मगर इनमें कहीं-कहीं कुछ बाहरी असरात भी मिल जुल गये हैं। ईरान की इमारतों का बड़ा होना या उनकी सजावट में गहराई का होना उनकी अपनी चीज़ थी। दरअसल जो कारीगर भी बाहर से काम करने आते थे वह ईरान के बादशाह को ख़ुश करने के लिये बहुत बड़ी-बड़ी ऐसी ख़ूबसूरत इमारतें बनाते थे जिनसे इन बादशाहों की बड़ाई ज़ाहिर हो। वहां पत्थर की भी बहुत सी खानें पाई जाती हैं जिससे उम्दा क़िस्म का पत्थर हर तरह का आसानी से मिल जाता था और पत्थर के बड़े-बड़े टुकड़े इमारतों में इस्तेमाल किये जाते थे जिनको बहुत मेहनत से तैयार किया जाता था मगर उस ज़माने का पत्थर बनाने का फ़न ज़्यादा तरक़्क़ी पर न था। सिर्फ़ एक जगह बहुत कारीगरी दिखाई देती है और वह खम्भों के सिर हैं जिनमें दो बैलों के आधे धड़ ऐसे दिखाये गये हैं कि उनकी पीठें आपस में एक दूसरे से जुड़ी नज़र आती हैं। कहीं बैलों की जगह ऐसे अनोखे जानवर की मूर्ति है जिनका मुँह घोड़े का सा होता है और पंजे शेर के ऐसे, जिसे यूनीकार्न कहते हैं।

इमारतों की छतें हमेशा देवदार की होती थीं और उनकी सजावट में पालिश की हुई रंगीन ईंटें इस्तेमाल होती थीं जिनको

मिलाकर बहुत ख़ूबसूरत रंग बिरंगे नमूने बनाये जाते थे। यह कला बाबुल में बहुत पुराने ज़माने से चली आती थी। वह मिट्टी पर रंगीन पालिश चढ़ाने का काम बहुत अच्छा करते थे और फिर पकाकर इस पालिश को बहुत मज़बूत कर देते थे।

ईरानी धातुओं और पत्थर को इमारतों में इस्तेमाल करते थे और हथौड़ों से पीट पीट कर इनमें तरह तरह का काम बनाते थे। सूसा में एक दरवाज़े पर इसी क़िस्म की कारीगरी की गई थी। नक़्शे रस्तम में इस क़िस्म का आर्ट पाया जाता है जो हुख़मंशीयों की इमारतों में बहुत आम है। खम्भों पर बैल के सिर बने हुये हैं और दरवाज़ों में मिश्री कारनिसें। इस इमारत के ऊपर की तरफ़ कुछ बहुत धुधली तस्वीरें बनी हैं। एक तरफ़ बादशाह की तस्वीर है जो तीन सीढ़ीयों के ऊपर खड़ा है। इसके बायें हाथ में एक कमान है जो जमीन पर टिकी है और इसका सीधा हाथ पूजा करने की हालत में एक आतिशगाह की तरफ़ बढ़ रहा है जहाँ पाक आग जल रही है और जो अहोरामाज़्दा का निशान है।

इस शक्ल के पीछे सूरज का हाला है। चौबीस इन्सानों की मूर्तियाँ, जो दो गिरोहों में बटी हैं ऊपर नीचे को बनी हैं, यह मूर्तियाँ मुख़्तलिफ़ ईरानी सूबों के आदमियों की हैं जैसा कि दारा के बारे में मशहूर है कि उसके तख़्त को बहुत सी नस्लों के इन्सान सहारा देते थे। इसी तरह यह मूर्तियाँ इस सीढ़ियों के प्लेटफ़ार्म को ऊपर उठाये हैं। इसके बाद सात और मूर्तियाँ बनी हैं जो सात सतरपियों को बताती हैं। हर एक के नीचे अलग अलग नाम लिखे हैं।

ईरानियों के यहाँ कोई मज़हबी इमारत या मन्दिर का रिवाज न था, बस सिर्फ़ क़ुर्बानगाहें या आतिशगाहें हुआ करती थीं जिनपर आग जलाते थे मगर और क्या रुसूम वहाँ अदा होती थीं या की जाती थीं इस बात का पता नहीं। माजी आग की हिफ़ाज़त के लिये

होते थे और मुर्गानगाह के चारों तरफ़ राख के ढेर लगे रहते थे। नक्शे रुस्तम में भी ऐसी दो आतिशगाहें हैं जो पहाड़ों को काटकर बनाई गई हैं। यह बुनियाद पर ज्यादा चौड़ी हैं और उनके चारों तरफ़ मेहराब का नक़्शा बना हुआ है यानी चन्द मेहराबें हैं ऊपर की तरफ़ एक चौकोर मेज़ की तरह का फ़र्श है जिसके बीच में आग जलाने के लिये गढ़ा बना है। पसरगदई में भी सरूस की क़ब्र के पास ऐसी ही आतिशगाहें हैं जो ऊँचाई लम्बाई और चौड़ाई में बराबर हैं और अन्दर से खाली हैं। यह ख़ास बात है कि जहाँ कहीं भी ऐसी आतिशगाहें हैं वह दो दो की तादाद में पाई जाती हैं। इसका पता नहीं चलता कि ऐसा क्यों है। सिर्फ़ फ़िरोज़ाबाद में एक आतिशगाह है और ऐसा सिर्फ़ एक ही जगह है।

बादशाहों के महलात को देखने से बहुत सी बातों का पता चलता है। बादशाह के महल के सामने और उसके दरवाज़े पर तमाम बातें तै होती थीं, इसी से दरबार (दर=दरवाज़ा+बार=पहुँचना) का लफ़्ज़ निकला है, यानी बादशाह के दरवाज़े तक पहुँचना। चूंकि बादशाह का दरबार तमाम सल्तनत का केन्द्र होता था इसलिये दरबार का हाल बनाने में कारीगर बहुत कोशिश करते थे। तरह-तरह की नई बातें और नये नमूने इन इमारतों में पैदा करते थे। हर नया बादशाह अपने लिये एक नया महल बनवाता था और पिछले बादशाह के महल को छोड़ देता था। सूसा में हर बादशाह के नाम से एक नई इमारत का पता लगता है जिसके साथ ख़ज़ाने की इमारत और गोदाम भी होते थे। बादशाह के मरने के बाद यह इमारतें उसकी यादगार समझी जाती थीं। इसीलिये बादशाहों के महलात उनके नाम से मशहूर होते थे। दूसरी इमारतों में यह बात न थी, जैसे दख़मा (Silence Tower) जब बनाते, तो वहाँ की इमारत बहुत सादी होती। सरूस के ज़माने में सीढ़ियों पर

जीत होने के बाद जो महलात खुशी मनाने के लिये बनाये गये उनका पता सिकन्दर के जमाने तक चलता है और आज तक उनके आसार पाये जाते हैं। इन इमारतों का खाका अब भी तैयार किया जा सकता है और ऐसा मालूम पड़ता है कि आगे एक बरसाती होगी और इसके दोनों तरफ़ दो कमरे, इसके बाद एक बड़ा हाल जिसमें खम्भों की दो कतारें दूर तक चली गई होगी। कहीं-कहीं सजावट के निशान भी होंगे, जैसा कि इस्तख़ की इमारतों में आमतौर से पाये जाते हैं। खम्भे न बहुत बड़े होते होंगे और न तादाद में ज्यादा।

इस्तख़ की इमारतों के खंडहरात एक ऊँचे चबूतरे पर पाये जाते हैं। जिसके दक्खिन में एक सड़क है जो पहाड़ों तक चली गई है। और फिर पूरब में आकर चबूतरे का रास्ता सीढ़ियों से है जिसका ज़ीना घूमता हुआ चला गया है। इस ज़ीने के दो हिस्से हैं, पहला हिस्सा चौदह फ़ीट चौड़ा है और इसमें ५८ सीढ़ियां हैं। दूसरा ज़ीना जो ऊपर की तरफ़ है उसमें ४८ सीढ़िया हैं। कुल सीढ़िया १०६ हैं, जिनके बाद एक खुली छत आजाती है जिसके ऊपर सौ खम्भों वाला दालान है और इससे ऊपर दस फीट की ऊँचाई पर एक और खुली छत है जहा पर खशायारशा (Xerxes) का हाल है। इसके बाद आगे चलकर दस फीट ऊँचा एक और चबूतरा है जिस पर दारा और खशायारशा के बनवाये हुये महलात हैं। खशायारशा का बनवाया हुआ महल ३६ फीट ऊँचा है और इसके आगे जो बरसाती है उसके अन्दर तीन ज़बानों में यह इबारत लिखी हुई है "इस बरसाती के ऊपर चढ़कर देखने से तमाम मुल्क नजर आते हैं" सचमुच यह बरसाती इतनी ऊँचाई पर है कि वहां से दूर दूर तक मुल्क फैला हुआ नजर आता है।

खशायारशा के महल के हाल में बड़े-बड़े दरबार हुआ करते थे, जिनमें बाहरी मुल्कों के सफ़ीर (राजदूत) आते थे। यहा बहुत शान

और दबदबे का इज़हार होता था। यह इमारत और इसका चबूतरा बहुत शानदार है। बहुत से खम्भों के सिलसिले चले गये हैं और इसतरह की सब इमारतों में यह इमारत बहुत ख़ास है। यहाँ बादशाह का तख़्त भी रहा करता था। इस हाल तक पहुंचने का जो ज़ीना है उसकी हर सीढ़ी पर सिपाही की एक ऐसी तसवीर बनी हुई है जिसका रुख़ ऊपर की तरफ है और जब इस पर चढ़ें तो ऐसा मालूम होता है कि तस्वीरें भी ऊपर को चढ़ रही हैं। बीच की छत पर बाईं तरफ बहुत से नौकर चाकर तस्वीर में ऐसे दिखलाये गये हैं जैसे वह घोड़ों और रथों को लिये जा रहे हैं, बहुत से दरबारी, दरबान और सिपाही वगैरह खड़े हैं। दाईं तरफ जो तस्वीरें बनी हुई हैं इनमें मुख्तलिफ़ क़ौमों के लोग दिखलाये गये हैं जो तरह तरह की चीज़ें भेंट चढ़ाने के लिये अपने मुल्कों से आ रहे हैं। इन लोगों के लिबास में कहीं कहीं थोड़ा सा फ़र्क़ है नहीं तो सब लोग एक ही तरह के दिखाये गये हैं। इनके अन्दाज़ में भी समानता है। कहीं कोई एक दूसरे की तरफ हाथ बढ़ा रहा है या पीछे मुड़कर देख रहा है, या अपना हाथ कन्धे या सीने पर रक्खे है। इन लोगों के पैरों के बनाये जाने में कोई फ़र्क़ नहीं है, जिससे बनानेवाले को हुनर से जानकारी न होना मालूम पड़ता है। सूसा में कमान चलाने वालों की जो तस्वीरें बनी हुई हैं इनसे सिपाहियों के पहनावे का हाल मालूम होता है। उनकी कमानें कन्धों पर रक्खी हैं और पीठ पर तरकश है। उनके हाथों में एक बरछी है जिसको ज़रा ऊपर को उठाये हैं जिससे ऐसा मालूम पड़ता है कि वह सलामी दे रहे हैं। बरछी के फल में सूराख़ का एक लम्बा सा निशान है और नीचे की तरफ एक सेब की सी मुठ है। उनके जिस्म पर एक लम्बा सा चोग़ा है जो पैर के गट्टों तक आता है। आस्तीनें लम्बी और

चौड़ी हैं। चोग़े के कपड़े में फूल पत्ती या शकरपारे बने हैं। पांव में नर्म चमड़े के डोरीदार पीले जूते हैं। कलाईयों में सोने के कड़े और कानों में बाले हैं। सरों पर ऐसी टोपियां हैं जिनमें नीचे मुड़ा हुआ फ़ीता लगा हुआ है। यह वहां के सिपाहियों की ख़ास टोपी थी। और जगह जो हालात लिबास के बारे में मिलते हैं उन सबको देखने से पूरी तस्वीर सामने आ जाती है। उनका लिबास बहुत दिलचस्प होता था जिसमें उनका आस्तीनदार चोगा, सर की पगड़ी और दूसरा लिबास काफ़ी दिलचस्प है। सिपाहियों के अलावा कमान चलाने वालों और घुड़सवारों के बारे में भी बहुत कुछ मालूम हो जाता है। सौ खम्भों वाले हाल के आसार बाक़ी हैं मगर अब कोई खम्भा इस इमारत का बाक़ी नहीं बचा है। एक ऐसी ही इमारत जो बहुत बड़ी है और जिसकी छत बहुत से खम्भो पर रक्खी थी मिश्र में भी पाई जाती है। यह इमारत ख़्शायारशा के महल से पुरानी है। हो सकता है इसे दाराआज़म ने बनवाया हो और शायद सिकन्दर के ज़माने में यह जला दी गई थी और उसकी राख के ढेर से पता चलता है कि इसमें देवदार की लकड़ी लगी थी। ईरान की इमारतों में आमतौर से देवदार की लकड़ी इस्तेमाल की जाती थी। दारा का महल जो ख़्शायारशा के महल के बाद आता है इससे कोई दस फ़ीट की ऊँचाई पर बना है। इसके सब कमरे बीच के हाल में खुलते है। यह शाही हरम की इमारत थी। बादशाह का महल ज़नाने महलसे अलग होता था। मक़दूनिया की फ़तह के वक्त ईरान के शहरों के चारों तरफ़ दीवारें नहीं बनी हुई थीं। इससे पहले ऐसा हुआ करता था। बहुत दिनों तक अमन अमान क़ायम रहने की वजह से दीवरें जगह जगह से टूट गईं और मिट गईं। आमतौर से यह दीवारें धूप में

सुखाई हुई ईंटों से बनती थीं। इस वजह से शहर टूट गये और गिर गईं। हमदान और सूसा के शहर खुले हुये थे और दूसरे शहर दीवारों से घिरे थे। हर शहर में किले की इमारत होती थी जो मजबूत होने की वजह से बाद तक बाकी रही। यहाँ बादशाह अपने खजाने के साथ एक मजबूत दीवार के घेरे में पनाह लिया करता था। हुखमंशी दौर की इमारतों से यह पता चलता है कि इस जमाने की इमारतें खास ईरानियों की बनाई हुई न थीं। ज्यादातर बनाने वाले असीरिया और मिस्र से आते थे। कुछ ईरान के भी होते थे। यह लम्बी चौड़ी इमारतें ईरान के बादशाहों की शानो शौकत और उनके एकतदार होने का सबूत थीं। इन बादशाहों का हुक्म लोग बिला चूं-चरा किये मान लेते थे और सल्तनत के हर हिस्से से लोग शौक से आकर उसका काम करते थे और उनके हर ख्याल को पूरा कर दिखाते थे।

सिक्के—इसी जमाने में एशियामाइनर में लीडिया की सल्तनत के अन्दर सबसे पहले सिक्के बनाये गये जो ईरान और सूसा तक नहीं पहुँच सके। ईरान में जो सिक्के चालू थे वह परशिया और सासानी दौर के थे, उनसे पहले के नहीं। बादशाह के खजाने में कीमती धातु ईंटों की शक्ल में होती थी और जब सिकन्दर ने सूसा पर क़ब्जा किया तो वहां ४०,००० टेलेन्ट सोने की शक्ल में मिला और ६,००० सोने के सिक्कों की शक्ल में। कहा जाता है कि पहले दारा ने सोने के सिक्के बनवाये, जो डेरिक कहलाये। इनका सोना बहुत ख़ालिस होता था जैसा कि बाद में जाँच से पता भी चला। इन सिक्कों पर बादशाह की तस्वीर तीर कमान लिये बनी होती थी और यह घुटने के बल झुककर कमान का चिल्ला खींचता हुआ दिखाया जाता था। सोने के डेरिक के अलावा चांदी का शेकिल (Shekel) था जो सोने के सिक्के की क़ीमत का बीसवां हिस्सा होता

था। फिर इसके बाद चांदी और कांसे के दूसरे बहुत से छोटे-छोटे सिक्के होते थे जो मुख्तलिफ़ शहरों में बनते थे। ईरानी सिक्कों में तस्वीर सिर्फ़ एक ही तरफ़ होती थी और दूसरी तरफ़ एक गहरा चौखुन्टा निशान होता था। सबसे पहला डेरिक ५१६ बी० सी० के क़रीब ढाला गया। क्योंकि इसमें कोई तारीख़ नहीं होती थी और न कोई तारीख़ी सबूत है कि कब बना इसलिये यह ठीक से नहीं कहा जा सकता कि किसने बनवाया। मुमकिन है दारा ने बनवाया हो या किसी और ने। किसी हद तक बादशाह की तस्वीर और फ़न्नी कारीगरी देखने से इस बात का कुछ अन्दाज़ा हो सकता है कि वह किसके ज़माने में बना होगा।

चूंकि ईरानियों में ऐसे Glyptic आर्ट का पता नहीं चलता जिसमें सख़्त पत्थर पर मोहरें खोदने का काम होता हो, इसलिये ईरान में इस फन की तरक़्क़ी का सही पता नहीं चलता। मगर कुछ ऐसे शिलालेख मिले हैं जिनमें इस तरह की खुदाई का काम पाया जाता है। हो सकता है कि यह फ़न बाबुल का हो जहां यह बहुत तरक़्क़ी पर था। ख़ुद दारा की इसी क़िस्म की एक मुहर थी जो अब भी ब्रिटिश म्यूज़ियम में रक्खी है। इसमें दारा को एक शेर का शिकार करते हुये दिखाया गया है और नीचे तीन ज़बानों में यह लिखा हुआ है कि "मैं दारा बादशाह हूँ।"

मजहब- हुख़मंशी दौर में मज़हब की भी काफ़ी तरक़्क़ी हुई है। इस ज़माने में ज़रतुश्ती मज़हब फैला हुआ था।

(1)

ज़रतुश्ती मजहब—ज़रतुश्त की पैदायश आठवीं सदी बी० सी० में हुई। इस मज़हब के अनुसार सबसे बड़ी ताकत पाक रब की है। जिसको अहोरा माज़दा के नाम से याद किया जाता है जिसके माने हैं

Great Lord। यहां खेती-बाड़ी करके और कहीं-कहीं भेड़-बकरी या मवेशी पालकर जिन्दगी गुज़ारने का रिवाज था और चूंकि खेती करने और मवेशी पालने जैसे पेशों की बड़ाई खुली है इसी कारण इन दो पेशों को इस मज़हब में बहुत बड़ा समझा जाता है। ज़रतुश्ती मज़हब के अनुसार तमाम दुनिया का जन्म अच्छाई और बुराई की दो ताक़तों के बीच खींचतान का नतीजा है और इसी वजह से अहरमन और यज़दां दो ताक़तें बुराई और अच्छाई की मानी जाती हैं। और इस विश्वास (Faith) को Dualism कहते हैं जिसमें इन दो ताक़तों को बराबर का माना जाता है और इनमें आपस में झगड़ा होता रहता है।

दूसरा उसूल यह है कि हवा, पानी, आग और ज़मीन यह चारों तत्व (Elements) सबके सब बिल्कुल पाक और साफ़ हैं और किसी भी सूरत में इनको अपवित्र नहीं करना चाहिये। इसी वजह से आग को बड़ाई और पवित्रता हासिल है क्योंकि आग का दर्जा इन चारों तत्व में ऊँचा है। इनके यहां दख़्मे (Tower of silence) का रिवाज भी इसी वजह से हुआ कि मुर्दे को दफ़न करने से ज़मीन ख़राब होती है और आग में जलाना नामुमकिन था। इस कारण ऐसे तारों के जाल पर, जो बहुत ऊँचाई पर लगे होते हैं, मुर्दों को बिल्कुल नंगा करके लिटा दिया जाता है और वहां ऐसे गिद्ध आकर जो पले होते हैं इन मुर्दों का गोश्त खा लेते हैं और इनकी हड्डियां तारों से नीचे गिर पड़ती हैं।

इनका विश्वास योमे-क़ियामत (Day of Judgement and Ressurrection) या एक ऐसे आख़िरी दिन पर है जब मुर्दे ज़िन्दा होंगे और हर एक को जज़ा या सज़ा मिलेगी। इनकी जन्नत अलबुर्ज़ पहाड़ की चोटी सीमावंद है जिसे फ़िर्दौसेगोश

समझा जाता है। क्योंकि वहां बराबर गीत सुनाई देते रहते हैं। और शब्द अलबुर्ज़ के असली माने ऐसी जगह के हैं जहां हर वक्त गाने सुनाई देते हों। इस जगह को जन्नत समझने का एक और कारण है। वह यह कि जिस वक्त सूरज डूबता है तो अलबुर्ज़ पहाड़ की यह चोटी दीमावन्द आसमान के किनारे पर डूबते सूरज की लाल लाल किरणों से जगमगा उठती है और उसके बाद सूरज के डूबते ही चारों ओर अंधेरा छा जाता है। यह 'सोन' मौत की तरह है, जिसको नरक भी कहा जा सकता है। इस मज़हब के तीन सुनहरे उसूल हैं। हुमता, (Humata) हुखता (Hukhata) और हुवरश्ता (Huvarashta) यानी अच्छे विचार, अच्छे शब्द और अच्छे कर्म।

हुखमंशियों के बाद की सियासी तारीख

दारा के बाद जो कि सरूस आज़म की तरह बहुत बड़ा बादशाह हुआ है और जिसने ईरान की बड़ी सल्तनत का बहुत अच्छा शासन प्रबन्ध किया इस सल्तनत के बुरे दिन आ लगे। यूनान वालों से झगड़े शुरू हो गये और कई लड़ाइयां हुईं, जिनमें मराथौन (Marathon) की लड़ाई जो ४९० बी. सी. में हुई बहुत मशहूर है। इसमें ईरानी ऐथेन्स (Athens) तक नहीं पहुँच सके और इनकी हार हुई। इससे पहले ईरान की ताक़त बहुत बड़ी समझी जाती थी मगर अब पांसा पलट गया। इसके बाद ही ईरान की ताक़त कमज़ोर पड़ने लगी। ३६ साल राज करने के बाद ४८५ बी. सी. में दारा मर गया। बहरहाल इसने अपनी सल्तनत को ऐसा छोड़ा कि सिकन्दर के ज़माने तक बराबर ईरान की हुकूमत उन्नति पर रही अगरचे पहली जैसी शानदार तरक्की न हो सकी जिसकी सबसे बड़ी वजह

सिकन्दर और दारा सोयम की लड़ाई थी, जिसमें बहुत ज़्यादा बर्बादी हुई।

यह लड़ाई इसस (Issus) की लड़ाई कहलाती है, जो ३३३ बी० सी० में हुई थी। इसमें ईरानियों की फ़ौज छै लाख होते हुए भी उनकी हार हुई।

सिकन्दर का हमला और पार्थिया राज्य

सिकन्दर और मकदूनिया

सिकन्दर का सम्बन्ध मकदूनिया से था। यहाँ के रहने वाले यूनानी और आर्या दोनों नस्ल के थे। यह लोग बहुत बहादुर होते थे। इनके यहा ऐसे आदमी की कोई इज़्ज़त न थी जो दुश्मन को हरा न सके। वह औरों के साथ बैठ कर खाना भी नहीं खा सकता था। कुछ नहीं तो जंगली सुअर ही को मारकर बहादुरी की सनद हासिल करते थे। मगर बुरी आदतों मे शराब पीना और बहुत सी बीवियां रखना आम बात थी। सिकन्दर और इसका बाप फ़िलिप (३५९-३३६ बी. सी.) दोनों साहित्य और कला से मोहब्बत करने वाले थे और इनके ज़रिये यूनान की संस्कृति एशिया में फैली। सिकन्दर की मां का नाम ओलम्पयास (Olympias) था। शुरू ही से सिकन्दर एक बडा आदमी जान पडता था। इसका उस्ताद Aristotle था। बचपन ही से इसकी शिक्षा और तालीम की बदौलत सिकन्दर का दिमाग बहुत उन्नति पा गया था। १८ साल की उम्र से उसने फ़ौजों की सरदारी करना शुरु कर दी थी। एक बार उसने एक ऐसे घोड़े का ठीक किया जो बहुत तेज़ और भडकने वाला था, यहाँ तक कि यह घोड़ा अपने साये से भी भडकता था। सिकन्दर ने उसका मुंह

सूरज की तरफ कर दिया और उस पर सवार हो गया। ऐसा करने से घोड़े का साया उसके सामने पड़ना बन्द हो गया और उसकी आँखें सूरज की तेज़ी से चौंधिया गईं और फिर वह भड़का नहीं। एक और मौक़े पर वह अपने बाप से भी लड़ पड़ा था जब कि उसने ओलम्पयास को जगह एक और औरत से शादी करली थी और सिकन्दर की तौहीन भी की थी। फ़िरदौसी ने शाहनामे में सिकन्दर को आधा ईरानी बनाया है। उसका कहना है कि वह माँ की तरफ से ईरानी था, मगर यह उसका सिर्फ़ अपना विचार मालूम देता है। अपने इस दावे के पक्ष में उसका कहना है कि सिकन्दर की माँ से दारा दोयम शाहे दाराब ने पहले शादी की थी और फिर तलाक़ दे दी और इसके बाद मक़दूनिया के बादशाह फ़िलिप से इसकी शादी हुई और सिकन्दर पैदा हुआ। दारा की एक और बीबी से दारा सोयम का जन्म हुआ जिसका पूरा नाम (Darius Codomannus) है। इसकी लड़की रोशनक या रुक्साना (Rexona) थी जिसकी शादी सिकन्दर से हुई। इससे और सिकन्दर से वह महायुद्ध हुआ जिसका हाल ऊपर आ चुका है। हख़ामंशी दारा और मक़दूनी सिकन्दर की लड़ाई की जो तस्वीर पाई जाती है इसमें दारा को परेशान दिखलाया गया है। वास्तव में वह कायर था और इसी वजह से उसे हार हुई। वह और उसके साथी ऐसी घोड़ियों पर सवार होकर भागे, जिनके बच्चे पीछे छोड़ दिये गये थे। इस जंग में एक लाख से ज़्यादा ईरानी काम आये। दारा की माँ और इसकी स्त्री लड़कियाँ हमला करने वालों के हाथ लगीं और सिकन्दर उनसे बहुत इज़्ज़त से पेश आया। दारा की बीवी का नाम दिलारायें बताया गया है। इसके बाद सिकन्दर ने सूर (Tyre) ३३२ बी. सी. में और मिश्र २० दिन

के अन्दर ३३२ - ३३१ बी. सी. में जीत लिया और फिर वह दरिया फ़रात को पार करके बाबुल गया और वहां से सूसा तक जा पहुंचा। अरबीला की जंग (३३१ बी. सी.) के बाद इसे बहुत दौलत मिली, जिसका अन्दाज़ा एक करोड़ पैंसठ लाख पचास हज़ार पौंड या शायद तेरह करोड़ चौबिस लाख पौंड किया जाता है। इसके बाद सिकन्दर का क़ब्ज़ा इस्तख़ और पसरगदई–दोनों जगह पर हो गया। फिर ३३० बी.सी. में हमदान (Ecbatana) पर क़ब्ज़ा हो गया, जो कि मीडिया के सूबे का ख़ास मुकाम था और उसके बाद इसी साल यानी ३३० बी. सी. में दारा सोयम की मौत भी हो गई। यह मौत रै में हुई, जो तेहरान से कुछ मील दक्षिण की तरफ है। सिकन्दर ने दारा को दमगान में गिरफ्तार कर लेना चाहा, मगर सिकन्दर से पहले ख़ुद वहां के बाशिन्दों ने दारा को क़त्ल कर दिया। सिकन्दर ने दारा की लाश को बहुत इज़्ज़त से दफ़न करा दिया। ख़ुद सिकन्दर की मौत ३२३ बी. सी. में हुई।

सिल्यूकस और उसका असर

सिकन्दर के बाद इसके ख़ास अफ़सर सिल्यूकस ने एक राज्य क़ायम किया, जो लगभग २०० साल तक यानी ३११ बी० सी० से १२६ बी० सी० तक बाक़ी रहा। इसकी राजधानी बाबुल का शहर थी। इस ख़ानदान के ख़त्म होने के बाद रोमन साम्राज्य फैल गया, मगर इस बीच ईरान के अन्दर पार्थिया की एक और हुकूमत क़ायम हुई, जो कि दूसरी सदी बी० सी० से तीसरी सदी ईसवी तक रही। यह सल्तनत वैसे तीसरी सदी ईसवी से शुरू होती है और पांचवीं सदी ईसवी तक रहती है, मगर ईरान में इसका असर १२६ बी. सी. से शुरू होकर २२६ ईसवी तक रहता है।

ईरान में पार्थिया की हुकूमत और उसका असर
(१२६ बी. सी. – २२६ ईसवी)

पार्थिया पूरब की एक बड़ी सल्तनत थी। इससे और रोमन साम्राज्य से मुक़ाबिला होता था। पार्थिया वाले उत्तरी ख़ुरासान से आये थे। इनका वतन गुर्गान की घाटी का ऊपरी हिस्सा था। यह लोग मवेशी पालकर गुज़ारा करते थे और इनका रहन-सहन चरवाहों जैसा था। इनके ख़ानदान में आरसासिस (Arsaces) हुआ है जो हुख़ामंशी बादशाह अर्दशीर (Artaxerxes) का भी नाम था। इसलिये शायद यह दोनों एक ही हों और इस तरह इनका ताल्लुक़ हुख़ामंशियों (Achaemenians) से भी हो। पार्थिया की तरक़्क़ी सिल्यूक्स ख़ानदान की मिटती हुई ताक़त पर हुई। इन्होंने रोमन सल्तनत के पास इसकी सरहदों से मिले हुए इलाक़े में अपने लिये उत्तरी ईरान के हिस्से को चुना, जिसकी वजह से इन दोनों की आपस में लड़ाई रहती थी। आरमीनिया पर अधिकार पाने की वजह से इनके यहाँ और भी झगड़े रहते थे।

निज़ाम, राजधानी, फ़ौज, रहन-सहन, लिबास, औरतों का दर्जा, चाल-चलन, मज़हब, साहित्य, फ़न्नी और इमारती तरक़्क़ी और सिक्का

निज़ाम—पार्थिया वालों के यहाँ बादशाह की बड़ी इज़्ज़त की जाती थी। दो कौंसिलें इसको सलाह देती थीं, जो पुश्त दर पुश्त चली आती थीं। इन कौंसिलों में शाही ख़ानदान के लोग और सीनेट (Senate) के लोग होते थे जिनमें मज़हबी पेशवा और अमीर लोग भी शामिल समझे जाते थे। सब बादशाह आरसासिड (Arsacid) वंश से होते थे और दोनों कौंसिलें मिलकर बादशाह को चुनती थीं।

इनके क़ानून बहुत सख़्त थे। निज़ाम (Organisation) चरवाहों जैसा था यानी पास्टोरल (Pastoral) था। मगर इन पर यूनानियों और ईरानियों का काफ़ी असर पड़ा था। इनके यहाँ आरसासी सम्वत या सन् के साथ साथ सलूकसी सन भी चालू था।

राजधानी—हुख़्मशियों (Achaemenians) की तरह इनकी भी दो राजधानियां थीं। मदायन (Ctesiphon) इनका जाड़ों का मुक़ाम था और हमदान (Ecbatana) गर्मियों का।

फ़ौज—फ़ौज में पैदल भी थे, लेकिन सवारों की सख्या ज़्यादा थी और इनकी ताक़त भी। इस क़ौम को घोड़ों से बहुत मुहब्बत थी। समुद्री फ़ौज के होने का इनके यहाँ पता नहीं चलता है।

रहन सहन—इनकी आदतें चरवाहों जैसी थीं इसलिये वह मज़बूत होते थे। वह अपना ज़्यादा वक़्त लड़ाई में गुज़ारते थे। साथ ही साथ खेल और तफ़रीहात में भी हिस्सा लेते थे। इनके यहाँ इन चीज़ों की वही अहमियत थी, जो दूसरों के यहाँ खाने की है। यह खजूर की शराब पीते थे और गाने बजाने में होशियार होते थे। गाने बजाने के सिलसिले में बांसुरी (Flute), बूक़ (Pipe) और तबल (Drum) ख़ास चीज़ें थीं। इनकी दावतों में नाच ज़रूर होता था। वह हर तरह का गोश्त खाते थे और तरकारियां भी इस्तेमाल करते थे। इनकी रोटी बहुत नर्म और नफ़ीस होती थी, जिसको रोम वाले बहुत पसन्द करते थे। बाबुल (Babylon) में इनका एक महल था, जिसकी छत पीतल की थी और ख़ूब चमकती थी। यहां औरतों और मर्दों के रहने के कमरे अलग-अलग थे। जगह-जगह चांदी के पत्तर जड़े थे और सोने के ठोस टुकड़े पाये जाते थे। एक छत बिल्कुल नीलम (Sapphire) की थी और आसमान का नमूना पेश करती थी। बादशाह की शानो शौकत बहुत ज़्यादा

होती थी। यह बहुत अच्छे कपड़े पहनता था और इसके साथ १०,००० सवार हुआ करते थे।

लिबास—इनका लिबास ढीला ढाला होता था। पायजामे गरारेदार होते थे, जैसे आजकल पठान पहनते हैं। सर पर वह एक फ़ीता सा बांधते थे या मुकुट (Tiara) पहनते थे या पगड़ियां बांधते थे। उनके दाढ़ियां होती थीं और उनके सर के बाल घुँघरवाले होते थे। इनके हथियार चमकदार थे, ज़िरह (Mail Coat) और ख़ोद (Helmet) सब। घोड़े का साज़ बहुत क़ीमती होता था, सोना भी इसमें इस्तेमाल किया जाता था। ख़ास क़ौमी हथियार कमान थी। तलवार और ख़ंजर का आम रिवाज था। सवारों का हथियार नेज़ा होता था। सिक्कों पर पार्थिया के बादशाह आरसासिस (Arsaces) का जो लिबास दिखाया गया है, वह यह है— सर पर एक नोकदार ख़ोद है जिसमें छज्जे (Flaps) से लटके नज़र आते हैं, जिससे गर्दन और कान ढक गये हैं। कानों में बाले और गले में ज़ेवर है। ज़िरह ज़ंजीरदार है और पैर के गट्टों तक आती है। इस लिबास के ऊपर एक छोटा सा जुब्बा या लबादा नज़र आता है। बाद वाले बादशाहों के लिबास में ज़िरह नहीं दिखाई गई है।

औरतों का दर्जा—औरतों का दर्जा मर्दों से कम था। एक ख़ास बीबी हुआ करती थी जो मल्का कहलाती थी और बाक़ी बांदियां या हरम जो ज़्यादातर यूनानी होती थीं। औरतें आम तौर से परदा करती थीं और अलग रहती थीं। इनके यहां ख़्वाजासरा नहीं होते थे। औरतों ने कभी सियासत (Politics) में हिस्सा नहीं लिया सिवाय एक इटली की लौंडी मूसा के, जो सियासी मामलात में दख़ल रखती थी।

चाल चलन—(Character) पार्थिया वालों का चालचलन

ऊंचा होता था। वह क़ैदियों से बहुत अच्छा व्यवहार करते थे और जो बात तै करते थे उसे निभाते थे और वादे के पक्के होते थे।

मज़हब—इस सिलसिले में इन पर तीन तरह असर पड़ा। पहले इनका कोई मज़हब नहीं था और चरवाहों जैसी ज़िन्दगी गुज़ारते थे। इसके बाद आरसासिस (Arsaces) को पूजने लगे। इसके बाद इनके यहां पुरखों की पूजा (Ancestor-worship) का चलन था जो कि चरवाहों जैसे रहन-सहन में एक आम बात है। फिर ज़रतुश्ती असर के मातहत सच (अच्छाई) और 'भूठ' यानी उर्मुज़्द (Ormuzd) और दरोग या दुर्घ या दुर्ग (Durgh या Durg) का फ़र्क़ मानने लगे। यह सूरज (Mithra) को पूजते और दूसरे देवताओं को भी मानते थे, जिनका काम शाही ख़ानदान के लोगों की रक्षा करना समझा जाता था। आम लोग अपने पुरखों को पूजते थे और दूसरे देवताओं को भी मानते थे। इनकी मूर्तियां बनाते और इनकी बहुत इज़्ज़त और क़द्र करते थे। जादू में भी इनका विश्वास था। जादूगर को माजी (Magi=Spiritual Lord) कहते थे। इन जादूगरों ने इन लोगों को आग की पाकी का उसूल और मुर्दों को खुला रखने का रिवाज सिखलाया।

साहित्य—इनका अपना कोई साहित्य न था। इस मामले में यह बहुत पिछड़े हुए थे। यूनानी साहित्य का असर इन पर पड़ा और इस असर को उन्होंने अपने में लिया।

कला और इमारती तरक्की (Art and Architecture)—यह कला सासानियों से पहले बहुत कम उन्नति पर थी। मगर हतरा (Hatra) में पार्थिया वालों की बहुत सी इमारतें निकली हैं, जिनका ज़िक्र पहली बार ३६३ ई० में आया है। यहां

एक बड़ी गोल मोटी दीवार शहर के चारों तरफ़ थी, जिसमें बुर्जियां बनी थीं। आगे ख़ंदक़ थी, जिसका दायरा ३ मील से ज़्यादा था। बीच में एक महल था जिसमें सात हाल थे, जो बड़े और छोटे थे यानी १०'×४०' और ३०'×२०' के साइज़ के थे। इन सबमें ऊपर से रोशनी आती थी। ऊपर बन्द छत थी। इनका असर सासानियों और मुसलमानों की इमारती कला पर काफ़ी पड़ा। जगह जगह इन्सानी शक्लें और मूर्तियां मर्दों व औरतों दोनों की बनी थीं। पुरखों की मूर्तियों की पूजा का रिवाज ज़रतुश्ती मज़हब फैलने के बाद ख़तम हो गया। सामने का हिस्सा २०० फ़ीट लम्बा था। इसके पीछे एक गोल इमारत थी, जिसका रास्ता एक हाल में से था और उसके चारों तरफ़ एक छतदार रास्ता था। यह मन्दिर था। इसमें कोई सजावट न थी और रोशनी के लिये सिर्फ़ एक दरवाज़ा था।

वैहिसतून पहाड़ में भी पार्थिया वालों के कुछ चिन्ह और आसार मिले हैं जिनमें कुछ सवारों की तस्वीरें हैं जो दौड़ते-भागते हुये दिखाये गये हैं। इनका असर सासानियों पर पड़ा।

सिक्का—सोने के सिक्के नहीं थे। दूसरे सिक्कों में ख़ासकर दिरहम (Drachma) में आरसासिस (Atsaces) की शक्ल बनी है, जिसके हाथ में कमान है। सिक्कों पर "बादशाह आरसासिस बादशाह आज़म और शाहंशाह" के अलफ़ाज़ खुदे हुये हैं। सिक्के दो तरह के होते थे। एक यूनान के शहरों में बनते थे और दूसरे पार्थिया के फ़ौजी सदर मुक़ामों (Garrison Town) में। चांदी और तांबे दोनों तरह के सिक्के चालू थे।

ईरान में पार्थिया वालों और सासानीयों की तुलना

ईरान वालों ने पारथिया के बादशाहों को हमेशा अपने से कम

और गिरा हुआ समझा। इनको वह मुलूकुत तवायफ़ (Petty Kings) कहते थे और इनको अच्छा दर्जा नहीं देते थे। बल्कि इनके हुकूमत करने के ज़माने को जितना था उससे घटा के कम कर दिया है। सासानियों की ईरानी बहुत इज़्ज़त करते हैं। सासानियों के ज़माने में हुख़मंशियों वाली शानोशौक़त फिर से लौट आई थी। यह दौर ईरान की तारीख़ का सबसे शानदार दौर है। एक तरह का छुपा हुआ शाही दबदबा इस वंश के अन्दर माना जाता था। इस वंश के मातहत सबसे पहली बार ईरान को आज़ादी मिली। इससे पहले ईरान एक दूसरी सल्तनत यानी पार्थिया का एक हिस्सा था। अब बाज़ाब्ता इतिहास का लिखा जाना भी शुरू हुआ और क़िस्सा कहानी से इतिहास बना।

सासानी राज्य

सासानी खानदान और ईरानी लीजेन्ड

रुस्तम ने जब इस्फ़न्दियार को मारा तो इसका लड़का बहमन बादशाह हुआ, जिसको आर्टाज़रक्सेस लॉगीमेनस (Artaxerxes Longimannus) या बहमन अर्दशीर दराज़दस्त (लम्बे हाथों वाला) भी कहते हैं। यह एक हख़ामंशी (Achaemenian) बादशाह है। सासानी अपने को इसी की औलाद बताते थे। पहला बादशाह अर्दशीर हुआ, जिसकी लड़ाई पार्थिया के बादशाह अर्दवान (Artabanus) से हुई। सचमुच इस लड़ाई में तीन लड़ाइयां लड़ी गईं, आख़िरी लड़ाई २२६ ई० में हुई, जिसमें अर्दशीर ने अर्दवान को ख़तम कर दिया। यह लड़ाई हुरमुज़ मुक़ाम पर हुई जो अहवाज़ से कुछ मील के फ़ासले पर था। और फिर न सिर्फ़ ईरान ही अर्दशीर के क़ब्ज़े में आया, बल्कि इसने हिन्दुस्तान पर भी हमला करके यहां से मोती, सोना, जवाहरात, और हाथियों का ख़िराज वसूल किया।

अफ़रासियाब और कैक़ुबाद (ईरान और तूरान) के झगड़े

कियानी ख़ानदान जो फ़रीदूं से चला, जिसने कि काया लोहार की मदद से ज़ोहहाक को हराया था इसी फ़रीदूं की औलाद में कैक़ुबाद हुआ, जिसकी मदद रुस्तम ने की और अफ़रासियाब को हराया जो तूरान का बादशाह था। इसी कैक़ुबाद की औलाद मे कैकाऊस हुआ जिसका वंश यूं चला—

कियानी वंशावली

कैक़ुबाद
|
सेयाऊस
|
कैकाऊस
|
कैख़ुसरौ
|
लहरास्प
|
गुश्तास्प
असफ़न्दियार (जिसे रुस्तम ने मार डाला)
|
बहमन (जिसे बहमन अर्दशीर दराज़दस्त भी कहते हैं)

इसी का नाम Artaxerxes Longimannus भी है। इसकी औलाद सासानी बादशाह हुये हैं।

फ़िरदौसी का कहना है कि बहमन ने अपनी बहन हुमाये (Humai) से शादी की जिससे दारा दोयम या दाराब (Darius Nothus) पैदा हुआ। बहमन का भाई सासान दारा के जन्म पर नाउम्मीद होकर कुर्दिस्तान के पहाड़ों पर चरवाहे का रूप धारण करके चला गया, जिसकी औलाद सासानी कहलाई। पूरब की तमाम सल्तनतों के बानी यानी नींव डालने वाले अजीबो गरीब तरीक़े से पैदा हुये हैं और इनके बारे में भाँति-भाँति

वे जिससे बनाये जाते है। इसी तरह अर्दशीर की भी वंशावली है। अर्दशीर की नस्ल पापक से बनाई जाती है, जो पार्थिया वालों के मातहत एक छोटा सा बादशाह था और इस ज़माने में पार्थिया का बादशाह अर्दवान (Artabanus) था, जिसकी मातहती में २४० रियासतें थीं। पापक भी एक ऐसी ही रियासत का मालिक था। इसके कोई लड़का न था। एक दिन पापक ने ख़्वाब देखा कि शहज़ादे सासान के सिर से एक सूरज निकला, जिससे तमाम दुनिया जगमगा उठी। दूसरे रोज़ उसने देखा कि सासान एक सफ़ेद हाथी पर सवार है और तमाम दुनिया इसकी इज़्ज़त कर रही है। तीसरे दिन उसने देखा कि पवित्र आग सासान के घर में जल रही है, जिससे तमाम दुनिया रोशन है। इसके बाद अक़्लमन्दों ने उसे बतलाया कि सासान की औलाद में सल्तनत आने वाली है। जब पापक ने सासान से उसके वंश के बारे में पूछा तो उसने अपने को बहमन और असफ़न्दियार के ख़ानदान से होना बतलाया। पापक ने अपनी लड़की की उससे शादी कर दी। इस शादी से अर्दशीर पैदा हुआ और इसने सासान और पापक दोनों को अपना पुरखा माना। एक क़िस्सा यह भी मशहूर है कि जब अर्दशीर जवान हुआ तो वह अर्दवान के महल से एक ख़ूबसूरत औरत को जो उससे मुहब्बत करती थी लेकर भागा जब अर्दवान ने उनका पीछा करना चाहा तब वह दोनों हवा की तेज़ी की तरह से निकल गये और इनके साथ एक ग़ैबी मेंढा (Ram) भी था। यह मालूम करके अर्दवान ने उनका पीछा करना छोड़ दिया। इन सब क़िस्सों से यह साबित किया जाता है कि सासानी ख़ानदान को राज्य करने का अधिकार ख़ुदा की तरफ़ से मिला था और इसे वह आसमानी हक़ (Divine Right) की तरह समझते थे। यह चीज़ इस हद तक पहुँच गई थी कि कोई भी आदमी ईरान वालों के मतानुसार और अक़ीदे के मुताबिक़ इस सल्तनत का

मालिक नहीं बन सकता था, जब तक कि उसकी रगों में सासानी वंश का खून न हो।

सासानी खानदान की तरक़्क़ी

ईरान का सबसे बड़ा ख़ानदान सासानी हुआ है, जिसकी हुकूमत २२६ ई० से शुरु होकर ६३६-३७ ई० तक रही यानी लगभग ४१० वर्ष तक। इस ख़ानदान में २६ बादशाह हुये जिनके नाम और सन् नीचे दिये हुये हैं:—

१	अर्दशीर अव्वल	Ardshir I	२२६–२४१ ई०
२	शापूर अव्वल	Shapur I	२४१–२७२ ई०
३	हुरमिज़्द अव्वल	Hormizd I	२७२–२७३ ई०
४	बहराम अव्वल	Bahram I	२७३–२७६ ई०
५	बहराम दोयम	„ II	२७६–२९३ ई०
६	बहराम सोयम	„ III	२९३ ई०
७	नरसई	Narsai	२९३–३०३ ई०
८	हुरमिज़्द दोयम	Hormizd II	३०३–३१० ई०
९	आज़रनरसई	Adhar Narsai	३१० ई०
१०	शापूर दोयम	Shapur II	३१०–३७९ ई०
११.	अर्दशीर दोयम	Ardshir II	३७९–३८३ ई०
१२	शापूर सोयम	Shapur III	३८३–३८८ ई०
१३	बहराम चहारुम	Bahram IV	३८८–३९९ ई०
१४	यज़्दगिर्द अव्वल	Yazdgird I	३९९–४२० ई०
१५	बहराम पंजुम (गोर)	Bahram V(Gaur)	४२०–४३८ ई०
१६	यज़्दगिर्द दोयम	Yazdgird II	४३८–४५७ ई०
१७	हुरमिज़्द सोयम	Hormizd III	४५७–४५९ ई०
१८	फ़ीरोज़	Firoze (Firuz)	४५९–४८४ ई०

१९	बलश	Balash	४८४–४८८ ई०
२०	क़ुबाद (कुबाध) अव्वल	Kubad (Kuwadh) I	४८८–५३१ ई०
२१	ख़ुसरो अव्वल (नौशेरवां)	Khusrau I (Nau Sherwan)	५३१–५७९ ई०
२२	हुरमिज़्द चहारुम	Hormizd IV	५७९–५९० ई०
२३	ख़ुसरो दोयम (यानी परवेज़=शीरीशीरीं)	Khusrau II (Parwez)	५९०–६२८ ई०
२४	क़ुबाद दोयम	Kubad II	६२८ ई०
२५	अर्दशीर सोयम	Ardshir III	६२८–६३० ई०
२६	यज़्दगिर्द सोयम	Yazdgird III	६३०–६५१ ई०
			६३२

इन २६ बादशाहों में लगभग ७ बहुत नामवर हुये हैं यानी १–अर्दशीर अव्वल २–शापूर अव्वल ३–शापूर दोयम ४–बहराम पंजुम (गौर) ५–फ़ीरोज़ ६–ख़ुसरो अव्वल (नौशेरवां) ७–ख़ुसरो दोयम (परवेज़-शोह शीरीं)

सबसे पहले अर्दशीर ने फिर शापूर अव्वल ने सल्तनत की बुनियादें भरीं। अर्दशीर ने फ़ौज को सतरप की मातहती से आज़ाद किया। और इनके लिये अलग अफ़सर मुक़र्रर किये। उसने जागीरदारी नियम को ख़तम किया। उसके कुछ क़ौल (Maxims) बहुत मशहूर हैं। "बग़ैर फ़ौज के ताक़त हासिल नहीं हो सकती, फ़ौज के लिये दौलत लाज़मी है, दौलत खेतीबाड़ी से हासिल होती है, और इसकी सफलता के लिये न्याय ज़रूरी है।"

"There can be no power without army, no

army without money, no money without agriculture and no agriculture without justice."

(२) शापूर अव्वल ने नैशापूर (ईरान के उत्तर व पूर्वी हिस्से में) और शापूर जो काज़रून के पास था, यह दो बड़े शहर आबाद किये। जुन्देशापूर भी मदायन के पास एक कैम्प इस बादशाह के नाम से था। इसके ज़माने में रोमन सल्तनत से बराबर झगड़े होते रहे मगर ईरानी इनसे दबे नहीं।

(३) शापूर दोयम का ज़माना बहुत शानदार हुआ है यह लगभग ७० साल बादशाह रहा। एक बार इसने अरबों को हरा दिया और उनके कंधों को छेदकर उनमें रस्सी डालकर बंधवाया जिसकी वजह से इसका नाम ज़ुलअक्ताफ या साहिबुलअक्ताफ (Lord or Master of Shoulders) पड़ गया।

एक बार इसने सोने का एक बहुत भारी ताज सर पर पहना जिसमें क़ीमती जवाहरात जड़े हुये थे और ऊपर की तरफ़ मेंढे के शक्ल की एक मूर्ति थी। मेंढे को ईरान के इतिहास में एक ख़ास पाकी दी जाती है। आमतौर से ईरान के बादशाहों के ताज ठोस सोने के होते थे यहां तक कि उनको पहनना दूभर होता था। इस बादशाह के ज़माने में ईसाइयों के सन्यास (Monkery) की बहुत निन्दा की जाती थी और धीरे-धीरे ईसाई मज़हब की जगह ज़रतुश्ती मज़हब ने ले ली। इस मज़हब का यह एक बहुत बड़ा उसूल था कि "फूलो-फलो और तादाद बढ़ाओ" (Be fruitful and multiply)

(४) चौथा मशहूर बादशाह बहराम पंजुम (बहराम गौर) हुआ है जिसने गौरख़र (नीलगाय) के शिकार में बहुत दिलचस्पी ली यहां तक कि इसके नाम के साथ शब्द गौर भी लगाया जाने लगा। एक बार शिकार का

बहाना करके निकला और सफ़ेद हूनों (White Huns) पर पलट-कर ऐसा सख़्त हमला किया कि फिर इसके ज़माने में वह सर न उठा सके। इस मौक़े पर इसने अपनी फ़ौज के सिपाहियों के घोड़ों की गर्दनों में ख़ाली खोपड़ों के अन्दर पत्थर भरवा दिये, जिनकी आवाज़ और शोर से दुश्मन के घोड़े बिगड़ उठे। हूनों का ख़ान मारा गया और बहराम को ज़बरदस्त जीत हासिल हुई।

(५) फ़ीरोज़ के ज़माने में फिर सफ़ेद हूनों से लड़ाई हुई जिसमें ईरान की हार हुई। इसके बाद कुबाद के ज़माने में इस हार का बदला लिया गया और इसने रोमनों पर भी फ़तह हासिल कर ली।

(६) कुबाद का लड़का ख़ुसरो नौशेरवां हुआ जो बहुत मशहूर है। उसने बहुत सी लड़ाइयाँ जीतीं और अपनी सल्तनत का शासन प्रबन्ध बहुत अच्छा किया। लगान का बन्दोबस्त बहुत ठीक था और उसका कम या ज़्यादा होना ज़मीन की उपज पर था। हमेशा एक मुस्तक़िल (स्थाई) फ़ौज इसके यहाँ नौकर रहती थी। यह बादशाह न्याय के लिये मशहूर है। इसने अपना महल टेढ़ा रहने दिया मगर एक बुढ़िया की झोपड़ी को नहीं छीना। रूमी सफ़ीर (दूत) ने नौशेरवां के इस महल के टेढ़ेपन को और इसके कारण को मालूम करके नीचे दिये हुये शब्दों में इसके न्याय की तारीफ़ की है—

"यह महल अपने टेढ़ेपन के होते हुये भी मुकम्मल चौकोर इमारत और सेहन से कहीं ज़्यादा अच्छी है।" नौशेरवां की भी बहुत सी कही हुई बातें मशहूर हैं, जिनमें नीचे दिये हुये दो क़ौल बहुत अच्छे हैं:—

१—किसी दयालु और दानी आदमी के साथ अच्छा बर्ताव सबसे बड़ा ख़ज़ाना है।

२—ज़िन्दगी के अच्छे दिन पलक मारते बीत जाते हैं, मगर बुरे दिन काटे नहीं कटते और बहुत लम्बे मालूम होते हैं।

नौशेरवा की जितनी बड़ाई है, इसमें इसके वज़ीर बुज़ुर्ग-मेहर या बुज़ुर्गमेहर का भी बड़ा हाथ था। वह उसके लड़के हुर्मिज़्द का अतालीक (Tutor) था, फिर वज़ीर बना दिया गया। वह बहुत अक्लमन्द था। एक बार बहस हुई कि सबसे बड़ी मुसीबत क्या है। किसी फ़लसफ़ी ने कहा कि जब कोई शख्स कमअक्ल हो, ज़्यादा उम्र का हो और गरीबी ने उसके यहां डेरा डाल रक्खा हो तो ऐसा शख़्स सबसे ज़्यादा मुसीबत में है। एक हिन्दुस्तानी फलसफी ने कहा कि सबसे बड़ी मुसीबत उसकी है जिसका जिस्म और दिमाग़ दोनों ही बीमार हों। बुज़ुर्गमेहर ने आख़िर में कहा कि सबसे बड़ी मुसीबत उसकी है जिसका आख़िरी वक्त आ जाये और उसने कोई नेक काम न किया हो। सबने इस राये को पसंद किया।

नौशेरवा के ज़माने में जहाँ लगान के उसूल कायम किये गये, वहां ऊसर ज़मीन को खेती बाड़ी के योग्य बनाया गया। औज़ार, बैल, और बीज दिये गये और ज़ोर दिया गया कि हर शख़्स मेहनत करे और शादी करे। भीक मांगना और काहिली करने पर सज़ा दी जाती थी। सड़कों पर कोई ख़तरा नहीं था और आने जाने के रास्तों में आसानियां थीं। बुद्धिमानों और पढ़े लिखों की मदद की जाती थी, जिसकी वजह से ईरान इल्म और अमल का केन्द्र बन गया था। लड़ाई और जीत के साथ साथ न्याय, सल्तनत का अच्छा इन्तिज़ाम, काम और कोशिश की सच्चाई, सब्र, सन्तोष और अक्ल की बातें करना यह सब ऐसी ख़ूबियां थीं जिनकी वजह से नौशेरवा एक बहुत बड़ी हस्ती समझा जाने लगा और उसका मिलाजुला असर बहुत अच्छा पड़ा।

(७) ख़ुसरो दोयम यानी ख़ुसरो परवेज़, जो शीरीं का शौहर था, ५९० ई० में बादशाह हुआ। इसकी बीवियों और बांदियों

की तादाद १२ हज़ार थी। ख़ास मलका का नाम शीरीं था, जिसके नाम के साथ फ़रहाद का नाम मशहूर है। फ़रहाद एक इन्जीनियर था और बेहिसतून पहाड़ को काटकर दूध की एक नहर शीरीं के महल तक लाया था। उसको इस काम के पूरा करने के बदले में शीरीं के मिलने की उम्मीद दिलाई गई थी। ख़ुसरो ने उससे ऐसा वादा भी किया था, मगर उसको यह यक़ीन था कि पहाड़ को काटने जैसे कठिन काम को फ़रहाद पूरा न कर सकेगा। लेकिन फ़रहाद एक केमिकल इन्जीनियर था और फिर उसके दिल में शीरीं की लगन थी, इस लिये जब नहर को उसने क़रीब-क़रीब तैयार कर लिया तो ख़ुसरो ने सामने को समझते हुये एक चाल चली और फ़रहाद को एक बुढ़िया के ज़रिये यह धोखा दिया कि जिस शीरीं के लिये उसने इतनी मेहनत की है वह तो मर गई। शीरीं के मरने की ख़बर सुनकर फ़रहाद को इतना दुख हुआ कि उसने पत्थर काटने के औज़ार (तेशे=Axe) को अपने मार लिया और आतमहत्या कर ली।

ईसाई और ईरानियों की जंग ख़ुसरो परवेज़ के ही ज़माने में हुई, जिसमें ईरानी हार गये। ख़ुसरो के सदर मुक़ाम दस्तागिर्द को क़ैसरे रूम Heraclius ने तबाह कर दिया और ईरान का बादशाह क़त्ल हुआ। वह बुज़दिल न था, मगर अधिक ऐशो इशरत ने उसके किरदार को ख़राब कर दिया था। उसके बाद ईरान में बहुत कमज़ोर बादशाह हुये, जिनके कारण ईरान की ताक़त कम हो गई और ६३६-३७ ई० के लगभग अरबों ने ईरान पर अधिकार कर लिया।

सासानी सल्तनत के मातहत ईरान का निज़ाम

समाज के तबक़े:—कुल आबादी चार तबक़ों में बटी थी।

एक मज़हबी पेशा या पुजारी (Priest), दूसरे सिपाही (Warrior), तीसरे दफ्तरों में काम करने वाले मुन्शी या क्लर्क, चौथे किसान और कारीगर। इन चार तबक़ों के अन्दर और बहुत से छोटे छोटे तबके या उपजातियाँ थीं यहां तक कि हर तरह का काम करने वाले अलग अलग पेशे के ऐतबार से बटे हुये थे जैसे कि मज़हबी गिरोह के अन्दर जज, मुन्सिफ और दूसरे ऐसे ही ओहदेदार शामिल होते थे। दफ्तर का काम करने वालों (Bureaucratic Class) में न सिर्फ मुन्शी और क्लर्क शामिल थे बल्कि तबीब (वैद्य), शायर (कवि) और नजूमी (ज्योतषी) भी शामिल थे। चौथे तबके में तिजारत करने वाले भी आ जाते थे।

हर तबके का एक सरदार होता था, जिसके नीचे एक और अफसर होता था जिसे Controller कहा जा सकता है। इसका काम मर्दुमशुमारी (Census) लेना होता था। एक और Inspector की तरह होता था जो रुपये के खरे खोटे की जाँच करता था और मालियात (Fiscal matters) का अफसर होता था। एक और अफसर Instructor की तरह होता था, जो काम सिखाता था और उम्मीदवारों और नये काम सीखने वालों को निगरानी करता था।

पुजारियों को मीडीयों के कबीले माजी से भर्ती किया जाता था और इस वजह से इन्हें मोबिद या मुगश्च भी कहते थे, जिसके माने हैं माजियों का सरदार। सबसे बड़े पुजारी को मोबिदेश्राला या मोबिदानेमोबिद भी कहते थे। इसे मज़हबी मामलात में पूरा-पूरा इख़्तियार होता था और अक़ीदे (विचार) और मज़हब के अलावा ख़ुद इबादत करने के तरीक़े में भी इसका बहुत बड़ा हाथ होता था। वह जैसी चाहता पालिसी बनाता था। उसको ख़ुद

बादशाह मुक़र्रर करता था और वह अपने मातहत दूसरे पुजारियों वग़ैरह को चुनता था। इस तरह से सल्तनत के मामलात में इस ओहदेदार को बहुत दख़ल होता था। उसकी पहुँच बादशाह तक होती थी और बादशाह उसके मशवरे से बहुत काम करता था। ख़ुद बादशाह के ऊपर और उसके ज़मीर (आत्म) और अक़ीदे (विचार) पर उसका बहुत असर होता था। एक और ओहदा इसी के साथ दूसरा होता था। यह भी बादशाह के दरबार में बड़ा ओहदेदार समझा जाता था। इसको हरबिदेआला या हरबिदानेहरबिद कहते थे और इसके मातहत बहुत से हरबिद या आग की रखवाली करने वाले हुआ करते थे। जब ख़ुसरो दोयम यानी परवेज़ ने एक आतिशकदा (आग का मन्दिर) बनवाया तो इसके साथ इसने १२,००० हरबिद रक्खे, जिनका काम था कि वह दुआयें मांगें और इबादत करें।

सासानी सल्तनत के ओहदेदार और उनका रहन-सहन

पार्थवी और पहलवी ज़बानों में शापूर अव्वल का लिखाया हुआ एक शिलालेख हाजियाबाद नामी जगह पर पाया जाता है, जिसमें बादशाह ने अपने दरबार के तीर कमान चलाने वालों का हाल लिखाया है। इसमें बहुत से दरबारी ओहदेदारों के नाम आये हैं, जिनमें से ख़ास ख़ास यह हैं। शतरादार या सतरप—यह सल्तनत के शाहज़ादे हुआ करते थे। विस्पुर (Vispuhr) यानी ख़ानदान का बेटा, यह बड़े लोग या सरदार होते थे। वज़ुर्ग (Wazurg) और अज़त (Free man) यह दरबार के अमीर और आज़ाद लोग हुआ करते थे। शतरादार में सूबे के हाकिम या अमीर, जो उमूमन शाहज़ादे हुआ करते थे, शामिल थे। शाहज़ादों को सूबे का इन्तिज़ाम इसलिये दिया जाता था कि वह हुकूमत का काम सीखलें और उनसे बग़ावत का कोई

डर न होता था। एक और ख़ास बात है कि सामानी दौर में कभी किसी सतरप ने बगावत नहीं की। इन्हीं में मर्ज़बान (Warden of marches) भी होते थे और एक नाम इनका पदगोसपां भी था जो दरअस्ल एक तरह का वाइसराये होता था। पूरी सल्तनत चार हिस्सों में बटी थी और एक हिस्सा पदगोस कहलाता था, जो चार सिमतों के ख़्याल से इस तरह पुकारे जाते थे:—अपाख्तर (उत्तर), (ख़्वारिसां) या ख़ुरासान (पूरब) नीमरोज़ (दक्खिन) और ख़्वारवां (पच्छिम)। ख़्वर के माने हैं सूरज। इसी से ख़्वारिस्तान बना है जिसके माने हैं ख़्वर का स्थान या ख़्वरइस्थान जो ख़ुरासान हो गया। इसी तरह से ख़्वारवां बना यानी ख़्वर के रवाना होने की जगह। यह पदगोसपा या वाइसराये सूबे का बड़ा हाकिम होता था। इनके पास फ़ौजी और सिविल दोनों इख़्तियारात होते थे। ख़ुसरो अव्वल नौशेरवां के मातहत पदगोसपां का ओहदा सिपाहबिद के मातहत होता था, जो एक फ़ौजी अफ़सर होता था। इस बादशाह के ज़माने में कुछ सूबे सतरपियों के नाम से क़ायम थे अगरचे आमतौर से सामानियों ने सतरपियों को ख़तम कर दिया था। फिर भी कुछ बाक़ी थीं जैसे आरमेनिया, अज़रबाईजान, और हिन्दुस्तान की सरहद की सतरपी। सतरप के अलावा सूबे के गर्वनर को मर्ज़बान या Margrave भी कहते थे, जैसा ऊपर कहा जा चुका है, मगर यह नाम Commander or warden of the-marches के लिये भी था। बाद में ज़िले के अफ़सर का नाम हो गया। हख़्मंशी दौर की सतरपियों के मुक़ाबिले में सासानी ज़माने की सूबाबन्दी छोटे पैमाने पर हुई थी। इनके गवर्नरों को इसलिये शाह भी कहते थे, क्योंकि इनका ताल्लुक़ शाही ख़ानदान से होता था। इनके तख़्त चांदी के होते थे और

सिर्फ़ बादशाह को यह हक़ हासिल था कि वह सोने का ताज इस्तेमाल करे। कहीं-कहीं गवर्नरों को उस्तन्दार भी कहते थे। उस्तन के माने हैं कोई मुल्क या शहर जो बादशाह के कब्ज़े में हो। दरबार के दूसरे ओहदेदार जिनमें ख़ास-ख़ास हक़ रखने वाले ख़ानदान शामिल थे, जिनके सुपुर्द कोई ख़ास काम होता था जैसे कि एक ख़ानदान अर्गबिद को बादशाह के तख़्त पर बैठने के वक़्त उसके सर पर ताज रखने का हक़ मिला हुआ था, और जब बाद में पुजारियों की ताक़त बढ़ गई तो इनका यह हक़ पुजारियों ने छीन लिया। यह ख़ास ख़ानदान वाले कुछ ऐसे थे जिनके बारे में कहा जाता था कि उनमें आरसासिड (Arsacid) ख़ून शामिल था और इसलिये उनको 'पहल्व' भी कहते थे। इनमें करेन, सरेन और स्पाहबद ख़ास थे। दूसरे ख़ानदान वाले जो ज़रा नीचे दर्जे के समझे जाते थे, उनमें एक इस्पन्ददार, दूसरा मेहरान और तीसरा अर्गबिद था जिसका ज़िक्र ऊपर आ चुका है। जब नये बादशाह को तख़्त पर बिठाते तो दरबार में बुज़ुर्ग और रुज़त जमा होते और अपनी तरफ़ से नज़राना पेश करते और इस मौक़े पर बादशाह की तरफ़ से जो ऐलान और मनादी होती उसे सुनते। कभी कभी यह लोग बादशाह को तख़्त से उतार भी देते थे और ज़रूरत पड़ने पर क़त्ल भी कर देते थे। मगर ऐसा बहुत कम होता था। इनके अलावा सल्तनत में तीन फ़ौजी ओहदे और तीन सिविल ओहदे और थे। फ़ौजी ओहदों में ईरानइस्पाहबिद सबसे बड़ा ओहदा होता था, जिसको जनरल-स्सीमो (Generalissimo) समझना चाहिये। इसके नीचे अस्पाहबिद यानी घुड़सवारों के जनरेल और ईरानमबर्गबिद यानी (Director of supplies) के ओहदे थे। सिविल अफ्सरों में सिविल मामलात के डाइरेक्टर

फैसला करने वाले जज या पंचायत के पंच (Arbitrating authority), महसूलों और सरकारी ख़ज़ाने के बड़े अफ़सर शामिल थे। आख़िरी दो ओहदे आपस में मिले हुये थे। यह सब ओहदे आनरेरी थे और इनको कोई तनख़्वाह नहीं मिलती थी बल्कि यह ओहदेदार अपनी जागीरों से खाते पीते थे और इनको सल्तनत के कामों में कोई ख़ास दख़ल नहीं होता था। इनके बाद वाले जो ओहदेदार होते थे उनको सल्तनत के मामलात में बहुत कुछ दख़ल होता था।

यह बड़े ओहदेदार दफ़्तरी हुकूमत (Bureaucracy) के सबसे बड़े नुमाइन्दे (Representatives) समझे जाते थे और बादशाह के बाद इनका दर्जा सबसे बड़ा होता था। इनके अलावा वज़ीरे-आज़म जिसको वज़ुर्ग फ़रमादार या हज़ारापत भी कहते थे यानी एक हज़ार फ़ौज का सरदार एक बड़ा ओहदा था। इनके साथ मोबिदाने मोबिद और हरबिदाने हरबिद, फिर दबीरबिद यानी दफ़्तर का सबसे बड़ा अफ़सर और सिपाहबिद यानी सिपाह-सालार यह सब बड़े ओहदेदार थे। कभी कभी वज़ीरे-आज़म को फ़ौज की सिपहसालारी भी दे दी जाती थी जो इसके ख़िताब हज़ारापत से ज़ाहिर है। इसीके साथ-साथ उसे ज्योतिष और तिब्बायत (वैद्यक) में भी दख़ल होता था। एक सासानी बादशाह का कहना है कि वज़ीर वह होता है जो तमाम मामलात पर क़ाबू रखता हो और सब कुछ जानता हो। इसको बादशाह की ज़बान समझा जाता और हथियार भी और इसकी मदद से दुश्मन पर कामयाब हमले होते। इसके अन्दर सब खूबियाँ जमा होतीं और इसको इल्म का ख़ज़ाना समझा जाता। ज़रूरत के वक़्त बादशाह की हर ख्वाहिश को पूरा करता और जिस चीज़ की मांग होती उसका प्रबन्ध करता और वह बादशाह का दिल भी बहलाता।

ख़ुसरौ नौशेरवां के ज़माने में फ़ौज का जनरैल या ईरान सिपाहबिद एक बड़ा ओहदेदार होता था। इसके बाद यह ओहदा ख़तम हो गया और इसकी जगह चार जनरैल होने लगे, जिनमें से हर एक के पास सल्तनत का १/४ हिस्सा होता था, जिसका यह इन्तिज़ाम करता था। मगर दरअस्ल यह एक वाइसराये का काम था जिसको पदगोसपां कह सकते हैं। ज़रूरत के वक्त सूबे के गवर्नरों को फ़ौजी अफ़सर बना दिया जाता था।

सासानी हुकूमत के आख़िर में तमाम सिविल और फ़ौजी इख़्तियारात जनरल-स्सीमो (Generalissimo) या सिपाहबिद के हाथ में आ गये थे जो पदगोसपां से भी ऊँचा ओहदेदार होता था और कभी-कभी यह दोनों ओहदे एक में मिले होते थे। आज भी तबरिस्तान में इस्पाहबिद का ओहदा अरबी ज़बान में आकर इस्फ़ाहबाद हो गया है।

आर्यों ने जब ईरान में क़ब्ज़ा किया और वहां उनकी क़ौम फैली तो उन्होंने पुराने रहने वालों के मुक़ाबिले में अपने को अज़त कहलवाया जिसके माने हैं 'आज़ाद', फिर इसके माने अमीर के हो गये और यह एक अलग तबक़ा बन गया, जैसे घुड़सवार (Knights) का एक तबक़ा इंगलिस्तान में भी पाया जाता था। शुरू में यह लोग बड़े अच्छे घुड़सवार हुआ करते थे और ईरान में इनकी बड़ी-बड़ी जागीरें हुआ करती थीं और इनके नीचे बहुत से किसान हुआ करते थे जो इनकी ज़मीनों को जोतते थे और नाज पैदा करते थे। यह घुड़सवार अमीर या अज़त, दरबार में हाज़िर रहते थे और इनमें से कुछ लोगों को ओहदे भी मिल जाते थे, जैसे बादशाह के लड़कों के गुरु या अतालीक़ (Tutor) हो जाते थे। यह लोग बहुत सहज़ीबयाफ़्ता (Cultured) समझे जाते थे और इनकी तालीम बड़े अच्छे

तरीके से हुआ करती थी जिससे इनकी बड़ी मदद हुआ करती थी और जिससे इनको कभी कभी सूबे का गवर्नर तक बना दिया जाता था। वहां यह शादियां कर लेते थे और इनके ख़ान दान चलते थे। मगर वैसे इनका दर्जा बड़े बड़े अमीरों या बजुर्गों से कम समझा जाता था। इनके नीचे का तबक़ा दहक़ान कह जाता था, जो दो लफ़्ज़ों दह और क़ान या ग़ान से मिलकर बना है और जिसके माने हैं देहात का सरदार। यह लोग भी अपनी जागीरों में रहते, मगर इनमें और किसानों में कोई फ़र्क़ नहीं होता था सिवाये तालीम और लिबास के। इनको ज़मींदार भी कह सकते हैं। इन्हीं में से शहरिग यानी शहर के हाकिम चुने जाते थे। दहक़ान का ख़ास काम लगान वुसूल करना होता था। आज कल का कदख़ुदा जो एक ख़ास ओहदा या पद होता है उसको दहक़ान के मिस्ल समझना चाहिये। इन्हीं लोगों से, बहुत सी बातें जमा करके ईरान के मशहूर शायर फ़िरदौसी ने अपनी बड़ी किताब शाहनामा तैयार की, जो उसने महमूद ग़ज़नवी के ज़माने में लिखी थी।

अमीरों की यह दर्जाबन्दी आम लोगों के मुक़ाबिले में एक तरह की हदबन्दी थी। अमीरों के यहां चाहे वह किसी तबक़े के होते बड़ा साज़ो सामान हैसियत के अनुसार होता था, जैसे कि शानदार घोड़े उम्दा कपड़े, हथियार, वग़ैरह। इनकी औरतें रेशमी कपड़े पहनतीं और अपना वक़्त आराम से गुज़ारतीं। अमीरों के यहां पटेबाजी, तलवार चलाना, घोड़े पर चढ़ना, शिकार खेलना और ऐसी ही दूसरी दिलचस्पियां हुआ करती थीं। हर बात में इनको एक ख़ास हक़ हासिल होता था जिसकी हर तरह हिफ़ाज़त की जाती थी। कभी-कभी यह लोग एक दर्जे या तबक़े से तरक़्क़ी करके या घट के दूसरे तबक़े में चले जाते थे।

अगर कोई मामूली आदमी एक बड़ा काम करता तो बादशाह उसे बुलाता और पुजारी उसकी जाँच करते, फिर उसे ऊँचे तबके में शामिल कर लिया जाता यानी अपनी क़ाबलियत के अनुसार वह पुजारी बन जाता या सिपाही या मुन्शी। किसान का ताल्लुक़ ज़मीन और खेतीबारी से रहता था, वह बहुत मेहनत करता। कभी-कभी फ़ौज में सिपाही या प्यादा बन जाता, मगर उसे कोई तनख़्वाह नहीं मिलती थी और न उसके बदले में कुछ और ही मिलता था। शहरी लोग इससे बेहतर ज़िन्दगी बसर करते थे। वह ज़िज़ा देते थे जो एक तरह का टैक्स होता और जिसका ज़िक्र आगे आयेगा या ज़मीन का लगान किसानों की तरह देते मगर फ़ौजी ख़िदमत से आज़ाद होते थे और उनको फ़ौज में भरती नहीं किया जाता था।

सल्तनत का सारा काम बहुत से दफ़्तरों और महकमों के ज़रिये होता था। यह बताना मुश्किल है कि सब कितने दफ़्तर या महकमे थे और वहां क्या-क्या काम होता था। यह दफ़्तर या महकमे दीवान भी कहलाते थे, जो बहुत पुराने ज़माने से चले आ रहे थे और बाद में मुसलमानों ने अपने ज़माने में सासानी हुकूमत की नक़्ल करते हुये बहुत से दीवान या महकमे क़ायम किये जिनका हाल मालूम है। इन दीवानों या महकमों के बारे में जानकर इस बात का अन्दाज़ा किया जा सकता है कि सासानी ज़माने में किस तरह के दीवान या महकमें होंगे। हर दीवान या महकमे की मोहर अलग होती थी, जिससे उसकी पहचान हुआ करती थी। कुछ दीवानों या महकमों की मोहरों का हाल मालूम हुआ है, जैसे सरकारी कागज़ात बाहर भेजने और उसकी एक नक़्ल रखने का महकमा या दीवान। फिर फ़ौजदारी का महकमा या दीवान, इनामात और ऐज़ाज़ात (सम्मान) देने वाला महकमा या दीवान, ओहदों पर तक़र्रुरी (Appointment) करने का महकमा या दीवान, डाक का महकमा या दीवान,

सिक्के ढलाने का महकमा या दीवान, नाप तोल का महकमा या दीवान, फ़ौजी मामलात का महकमा या दीवान और फिर मालियात या मालगुज़ारी का महकमा या दीवान। यह सब महकमे या दीवान अपनी-अपनी मोहर अलग रखते थे। मालियात का महकमा या दीवान बहुत बड़ा था। जब कोई लगान या महसूल लगाया जाता तो बादशाह के सामने पढ़कर सुनाया जाता और हर साल इस महकमे या दीवान का ख़ास ओहदेदार मुख़्तलिफ़ महसूलों का एक नक़्शा पेश करता, जिसके साथ कब्ज़ुलवुसूल (यानी जो वसूल करके कब्ज़े में कर लिया गया हो) और ख़ज़ाने में जो बकाया होता उस रक़म की तफ़सील भी पेश करता था और बादशाह इस पर अपनी मोहर लगा देता था। ख़ुसरौ दोयम यानी परवेज़ के ज़माने से कपड़े की जगह जिसे पार्चमेंट कहते हैं ज़र्द रंग का काग़ज़ इस्तेमाल होने लगा था। यह काग़ज़ ज़ाफ़रान से रंगा होता था और गुलाब के इत्र में बसा होता था। इसे चीन से ईरान लाते थे और यह बहुत क़ीमती होता था। बादशाह जो भी हुक्म देता था उसका मुन्शी या पेशकार उसे लिख लेता था। एक ओहदेदार का काम उसे रोज़नामचे में लिखना होता था। रोज़नामचा हर महीने का अलग होता था और उसे मोहर लगा करके शाही मुहाफ़िज़ख़ाने में बन्द कर दिया जाता था। बादशाह जो भी हुक्म लिखवाता था उसे पेशकार मोहरबरदार (Seal Keeper) को देता था। मोहरबरदार उस पर मोहर लगाकर एक और ओहदेदार को देता था, जो उस हुक्म की ज़बान को बदलकर उसे ख़ास दफ़्तरी ज़बान में फिर से लिखता था। इसके बाद बादशाह के यहाँ फिर उस हुक्म को भेजा जाता था और रोज़नामचे से उसका मुक़ाबिला किया जाता था। इसके बाद पेशकार उस हुक्म पर मोहर लगा देता था और फिर इस हुक्म को सल्तनत में जारी किया जाता था। सरकारी मोहर की शक्ल गोल होती थी, जिसके बीच में सुअर

की मुहर उभरी हुई या खुदी हुई होती थी। यह ख़ास बात थी कि जब कोई सरकारी काग़ज़, जिस पर मोहर लगी हुई होती थी, बादशाह के यहाँ से किसी और रियासत या मातहत राज में भेजा जाता था, तो उसके साथ मोहर लगी हुई एक छोटी सी थैली में कुछ नमक भी होता था, जिसका मतलब यह होता था कि बादशाह का वादा (Promise) तोड़ा नहीं जा सकता। ख़ुसरो अव्वल नौशेरवाँ की चार मोहरों और ख़ुसरो दोयम परवेज़ की नौ मोहरों का हाल मालूम हुआ है।

डाक का इन्तिज़ाम—शुरू में डाक का आना-जाना सिर्फ़ सरकारी कामों और हाकिमों के लिये था और आम लोग इससे फ़ायदा नहीं उठा सकते थे मगर बाद में सबके लिये हो गया। डाक घोड़ों से आती-जाती थी जिसके ज़रिये आदमी और ख़त दोनों लाये और ले जाये जाते थे। डाक के महकमे या दीवान के मातहत सड़कों की हिफ़ाज़त भी थी और बहुत से घोड़े इस काम के लिये रक्खे जाते थे। जगह-जगह मंज़िलें बनी हुई थीं जहाँ लोग ठहरते थे और बहुत से सरकारी नौकर थे जो तरह तरह का काम करते थे और लोगों को आसानी और आराम पहुँचाते थे। पहाड़ी इलाक़ों में एक जगह से दूसरी जगह ख़बर ले जाने के लिये पैदल चलने वाले तेज़ हरकारे काम करते थे और मैदानों में घुड़सवार या ऊँट सवार यह काम किया करते थे। सल्तनत का इन्तिज़ाम नौशेरवाँ के ज़माने में बहुत अच्छा हुआ। उसने बहुत सी नई बातें शुरू कीं जिनसे सल्तनत को बहुत फ़ायदा पहुँचा।

जासूसी का तरीक़ा आम था जिसकी वजह से इन्तिज़ाम बहुत अच्छा था। ख़िराज और Revenue की दर मुक़र्रर की गई। नहीं तो इससे पहले मनमानी दरें मुक़र्रर कर दी जाती थीं। कहीं कोई इन्साफ़ न था। किसान बददिल और परेशान थे। इनकी मेहनत

और कोशिश अकारथ जाती थी जिसके कारण वह खेती-बाड़ी से कम दिलचस्पी लेने लगे थे। नौशेरवाँ ने न्याय किया और ज़मीन के उपजाऊ होने के अनुसार कर लगाया जिसका पूरा हाल आगे आयेगा नहीं तो इससे पहले टुखमंशी ज़माने से बेतरतीबी चली आती थी और लगान की दर १/१० से लेकर १/२ तक थी मगर नौशेरवाँ ने हदबन्दी की और एक ऐसी शरह या दर मुकर्रर की जिसमें धीरे-धीरे ज़मीन के उपजाऊ होने के अनुसार बढ़ोती या 'इज़ाफ़ा' होता जाता था। ज़ुल्म और ज़्यादती को रोका और किसान को ज़मीन और खेती-बाड़ी में दिलचस्पी लेने का अवसर दिया। सालाना जाँच की गई और हर चीज़ के मुनाफ़े में इज़ाफ़ा किया गया। फलों पर भी टैक्स लगाया, टैक्स की क़िस्तबन्दी की और तीन क़िस्तें मुकर्रर कीं जो नक़द और जिन्स दोनों सूरतों से वसूल की जाती थीं। माजियों (Magians) को Inspector बनाया ताकि कोई बेईमानी न होने पाये। पैमाने का वज़न मुकर्रर किया। ज़मीन का एक पैमाना या नाप मुकर्रर किया। और उस नाप के मुताबिक़ एक दिरहम की नाप टैक्स लगाया। एक दिरहम (Dirham) सात पेंस (Pence) के बराबर होता है।

पानी बहुत था। उसको काम में लाने के लिये पुश्ते और बन्द बनवाये। आबादी बढ़ाने पर ज़ोर दिया, पुल और रास्ते दुरुस्त कराये, नहरें बनवाईं, तिजारत और सनअत और हिरफ़त की उन्नति की, न्याय बेलाग किया मगर उम्र के अनुसार रियायत बरती, यानी कम उम्र व पहली बार अपराध करने वालों को या तो माफ़ कर दिया जाता या इनको बहुत ही हल्की सज़ा दी जाती थी। हर बात में नौशेरवाँ ने ऐसा इन्तिज़ाम किया कि उसके अपने ज़ाती किरदार की झलक उसमें साफ़ नज़र आती है और एक अच्छे हाकिम या बादशाह की यही शान है।

"फ़ौज"

सासानियों की फ़ौज बहुत आला होती थी। सबसे ज़्यादा तारीफ़ सवारों की थी जिनका साज़ोसामान बहुत अच्छा होता था। ज़्यादातर कामयाबी सासानी दौर में सवारों की वजह से हासिल हुई। इन्हीं की बदौलत रोमनों को हमेशा हार हुई और सासानियों को हमेशा जीत हुई और उनका इलाक़ा महफ़ूज़ रहा। दुश्मन अगर आये भी तो ज़्यादा दूर तक न बढ़ सके। सिपाहियों में घुड़सवारों के अमीर या अफ़सर सबसे आगे होते थे। इनके हथियार बहुत उम्दा होते थे। कतबों (शिलालेख) में देखने से पता चलता है कि इनके सर पर ख़ोद होता था। बदन पर ज़िरह होती थी जो घुटनों से नीची होती थी। ज़िरह की आस्तीनें लम्बी होती थीं और कालर बहुत ऊँचा होता था। इनके दाहिने हाथ में ६ फ़ीट लम्बा भारी नेज़ा होता था और बायें हाथ में गोल ढाल या चाँद (Target)। इनकी तलवार सीधी होती थी जैसा कि तस्वीरों में दिखाया गया है। पेटी से एक गुर्ज़ या गदा लटकता होता था, और एक खंजर भी। ख़ास हथियार तीर और कमान थे। तरकश भी पेटी से बँधा होता था और कमान कंधे से लटकती होती थी। घोड़े क हिफ़ाज़त का भी सामान होता थ। उसके सर, दुम और सीने पर लोहे का जाल ज़िरह की तरह फैला होता था। सिपाही के ख़ोद में दो रस्सियाँ अलग लगी होती थीं जिनसे कमन्द का काम लिया जाता था। वह जब चाहता दुश्मन के सवार को कमन्द डालकर घोड़े से खींच लेता। हमला करते वक़्त सासानी सवार एक अरया बनाकर आगे बढ़ते थे। वह आपस में इतने क़रीब होते थे कि इनके हथियार एक दूसरे से मिलकर चकाचौंध पैदा कर देते थे।

पैदल फ़ौज में कमान चलाने वाले (Archer) या कमांदार

दार (शब्द कमांदार अंगरेज़ी शब्द Commander से बहुत मिलता है) का दर्जा बहुत आम था। इसका निशाना बहुत ठीक होता था। ईरानी आम तौर से कमान चलाने में बहुत माहिर हुआ करते थे मगर इनके तीर बहुत तेज़ नहीं जाते थे क्योंकि इनकी कमानों की डोरियां ढीली होती थीं। पूरी पैदल फ़ौज का काम कमान चलाने वालों की मदद करना होता था।

पैदल फौज के पास लड़ने के लिये भाले और तलवारें होतीं मगर बचाव के हथियार जैसे ढाल, ख़ोद और ज़िरह बहुत कम होते। यह लोग डट कर मुक़ाबिला करते थे। सासानी घुड़सवारों का एक दस्ता अमर (Immortals) कहलाता था जिसमें चुने हुये १०,००० सवार होते थे। यह बात हम हुख़मंशी ज़माने में भी पाते हैं। एक और दस्ता सासानी ज़माने में जाँअपस्पर (Jan apaspar=seekers of death) कहलाता था जो बड़े बहादुर होते थे। घुड़सवारों की फौज (Cavalry) को देखते हुये पैदल फौज बहुत मामूली दर्जे की होती थी। इसका एक हिस्सा जो बेक़ायदा (Irregular) होता था और जिसे बहुत हीन और ज़लील समझा जाता था इसमें किसानों को इधर उधर से भर्ती कर लिया जाता था। इनकी ढालें बेंत की बनी होती थीं जिनपर खाल मढ़ी होती थी और यह लम्बी होती थीं। यह फौज कोई अहमियत नहीं रखती थी। इनको न कोई तनख़्वाह मिलती थी और न कोई इनाम। ज़रा देर में यह लोग हिम्मत हार देते थे और मौक़ा पाते ही हथियार डाल देते थे।

मददगार फ़ौज की तरह सवारों की एक और फौज होती थी जो जागीरदारी निज़ाम पर क़ायम थी। यह बात हम हुख़मंशी दौर में भी पाते हैं। इन सवारों के पास तलवार, नेज़े और

ख़ंजर होते थे और उनके इस्तेमाल में यह लोग बहुत माहिर होते थे। मगर कमान से इनका ताल्लुक़ बहुत कम होता था। सासानी फ़ौज में हाथी भी होते थे जिनसे दुश्मन पर बहुत रोब पड़ता था। इन हाथियों पर बड़े ऊँचे ऊँचे लकड़ी के बने मीनार रक्खे होते थे जिनमें सिपाही बैठते थे और ऊपर से बहुत सी झन्डियाँ लगी होती थीं। आमतौर से यह हाथी लड़ाई के वक़्त फ़ौज के पीछे खड़े किये जाते थे ताकि सिपाहियों की हिम्मत बढ़े। चरबों और ख़तबों को देखने से इन झन्डों और हाथियों का हाल बहुत अच्छी तरह मालूम होता है। यह झन्डे एक लकड़ी में कपड़े की एक लम्बी धज्जी बाँध कर बनाये जाते थे। यह धज्जी तस्वीरों में हवा में उड़ती हुई दिखाई गई हैं। बाज़ झन्डों में सलीब जैसा एक निशान भी बना होता था जिसके ऊपर और नीचे की तरफ़ गेंद की तरह के लट्टू लगे होते थे। सासानियों को घेरा डालने में बहुत कमाल हासिल था और इनसे पहले कोई और इस काम में इतनी महारत पैदा नहीं कर सका। साथ ही साथ यह लोग दूसरे की मुहासिरा बन्दी को आसानी से तोड़ देते थे। यह लोग खाई खोद कर लड़ते थे और ख़न्दक़ पाट कर हमले करते थे। इस तरह हमला करने में सासानी रोमनों से भी बढ़े हुये थे अगरचे सासानी रोमनों के शागिर्द रह चुके थे। यह पार्थिया वालों से भी ख़ूब मुक़ाबिला करते थे। यह ख़ास बात है कि पार्थिया वालों के पास हाथी नहीं होते थे। सासानी ज़माने में हथियार रखने के बहुत से ख़ज़ाने असलाह ख़ाने (हथियार घर) थे जिनको अम्बार कहते थे। अम्बार के माने ढेर के हैं। यहां हथियार जमा रहते थे और ज़रूरत के वक़्त फ़ौज में बाँट दिये जाते थे। अम्बार नाम का एक शहर फ़ुरात के किनारे बाद तक पाया जाता था। हो सकता है कि सासानी ज़माने में यह जगह हथियारों का कोई डिपो

(Depot) हो। लड़ाई के एेलान या मनादी के लिये बिगुल बजाया जाता था। यह बिगुल एक सीधा ट्यूब सा होता था। आज भी जहां-जहां ईरानी तहज़ीब है इस बिगुल का रिवाज है, जिसे क़ार्नै (Colt flute) कहते हैं। लड़ाई के वक्त फ़ौजी अफ़सर सिपाहियों को बहादुरी से लड़ने के लिये उभारते और इसके लिये इन्हें दीन और दुनिया की इज़्ज़त का लालच दिलाते। साथ ही साथ दुश्मन की फ़ौज से हथियार डालने और ज़र्तुश्ती मज़हब क़बूल करने को कहते। वह लड़ाई के वक्त मर्दोमर्द की आवाज़ लगाते। यानी एक आदमी से सिर्फ़ एक ही आदमी मुक़ाबिला करेगा। दो बड़े पहलवानों का आपस में मुक़ाबिला एक आम बात थी। इसे नबर्द आज़माई कहते थे। कभी कभी सिर्फ़ इन दो पहलवानों की हार जीत से लड़ाई का फ़ैसला हो जाता और पूरी की पूरी फ़ौज खड़ी की खड़ी रह जाती, जैसा सोहराब और रुस्तम की लड़ाई में हुआ। जब कभी बादशाह फ़ौज में शरीक होकर लड़ने जाता और ऐसा अवसर होता तो उसका तख़्त फ़ौज के बीचोबीच होता जिसके चारों तरफ़ उसके ख़ास सरदार, अमीर और वफ़ादार सिपाही होते। शापूर दोयम अपनी फ़ौज के साथ अक्सर जाया करता था। जब कभी बादशाह फ़ौज के साथ नहीं जाता तो उसकी जगह फ़ौज का सिपहसालार होता। ईरानियों में मुहासिरा करने का फ़न रोम वालों से आया, जिसे इन्होंने बहुत तरक़्क़ी दी और रोमनों से भी बढ़ गये। मुसलमानों ने भी इससे फ़ायदा उठाया और पैग़म्बरे इस्लाम के ज़माने में यह फ़न मदीने तक पहुँच गया था और फ़ार्स के एक रहने वाले ने एक लड़ाई के मौक़े पर ख़ंदक़ खोदकर बचाव करने का तरीक़ा मुसलमानों को बताया था। सासानी क़िलाशिकनआलात, बलिस्ता (Battering Ram) मिन्जीनीक़ या गोफन और ऐसे दूसरे आलात के इस्तेमाल से वाक़िफ़ थे। बलिस्ता ऐसे मीनार होते थे जो एक जगह से दूसरी जगह ले जाये

जा सकते थे और इनमें बैठे हुये सिपाहियों से हमला कराते थे जो भारी-भारी पत्थर ऊपर से ढकेल देते थे और जब यह दुश्मन के ऐसे मीनारों से अपना मुकाबला करने लगते तो इन मीनारों को कमन्दों के ज़रिये से नीचे गिरा देते थे और फिर इन पर पिघला हुआ गर्म सीसा डाल देते थे या जलती हुई मशालें या जलता हुआ और कोई माद्दा फेंक देते थे, जिससे मीनार और उसमें बैठे हुये आदमी सब बरबाद हो जाते थे।

लड़ाई में काम आने वाले सिपाहियों की तादाद मालूम करने का एक अनोखा तरीका सासानियों में पाया जाता था। फ़ौज की जांच के वक़्त हर सिपाही जनरल के सामने से गुज़रता था और एक बड़े टोकरे में हर सिपाही एक-एक तीर डालता जाता था इसके बाद टोकरे पर सरकारी मोहर लगा दी जाती थी। लड़ाई ख़त्म होने के बाद इसी तरह हर एक सिपाही इस टोकरे में से एक-एक तीर उठा लेता और फिर जितने तीर बाक़ी बचते इनकी तादाद से यह मालूम हो जाता था कि कितने आदमी मारे गये या बन्दी बनाये गये।

नौशेरवां के ज़माने में फ़ौज को तनख़्वाह उस वक़्त मिलती थी जब सिपाही अपने को तनख़्वाह पाने का अहल (योग्य) साबित करते थे। हर तरह कील काटे से लैस होते और अपने काम में होशियार यहाँ तक कि ख़ुद बादशाह को भी तनख़्वाह उसी वक़्त मिलती थी जब वह मैदान में हाज़िर होता और उसके पास सिपाहियों वाले सब हथियार कील काटे से दुरुस्त होते। कभी अगर कोई ख़राबी होती थी तो Pay Master General तनख़्वाह देने से इन्कार कर देता था। मसलन एक बार कमान की दो और डोरियाँ जिनको सिपाही के साथ हर वक़्त होना चाहिये था नौशेरवां के साथ न थीं, इसलिये इनको लेने के लिये उसे फिर से ख़ुद महल जाना पड़ा, और जब उन्हें लेकर लौटा तब उसे तनख़्वाह दी गई जो ४००१ दिरहम थी यानी

११२ पौंड। यह सबसे बड़ी तनख्वाह थी जो किसी को दी जा सकती थी।

नौशेरवां ने सरूस की देखा देखी एक स्थायी फ़ौज रक्खी और जागीरदारी निज़ाम को खतम किया।

बादशाह, उसकी दौलत और उसका दरबार

सासानी बादशाहों के दरबार में शानो शौकत बहुत ज़्यादा होती थी। दुनिया में इनसे बढ़कर किसी और ख़ानदान की इतनी ज़्यादा इज़्ज़त इससे पहले नहीं की गई होगी। सबसे बड़ी वजह दौलत के अलावा सासानी बादशाहों का ख़ुदा या अहोरामाज़्दा की तरफ़ से दुनिया पर हुकूमत करना और उसका साया ज़मीन पर होना एक ऐसी बात थी जिसकी वजह से उनका रोब और दबदबा बहुत बढ़ा हुआ था। दूसरे बड़े-बड़े शाही खानदानों ने सासानी दरबार की नक़ल की है और ऐसे ही लिबास, सामान, तौरतरीक़े, क़ायदे, रीतें और रस्में बरतने की कोशिश की है जैसे कि वहां पाई जाती थीं। कुतबों या शिलालेखों के देखने से पता चलता है कि सासानी बादशाहों का लिबास बहुत ज़्यादा उम्दा और तक़ल्लुफ़ से भरा होता था। उनकी ज़िरह, चोगा और दूसरा लिबास ख़ास कर सर का लिबास बहुत क़ीमती होता था। सर का लिबास जिसको Tiara कहते थे सोने का होता था और उसमें जवाहरात जड़े होते थे। हर बादशाह के सर का लिबास अलग होता था जिससे उसकी पहचान होती थी। कभी यह गोल शक्ल का होता था और कभी उसमें गेंद की तरह एक हिस्सा ऊपर को उभरा हुआ होता था बाज़ ताजों में एक लम्बी शलाख़ ऊपर को निकली होती थी, जिसपर एक गोला सा बना होता था। कुछ के यहां चांद तारे भी बने होते थे। इन ताजों की चमक दमक से आंखें चकाचौंध हो जाती थीं और उनको देखकर नियत कभी न भरती थी। बादशाहों

शलवार या पैजामा सोने के तारों से बुने कपड़े का होता था या इस कपड़े को हाथ से बुना जाता था। और यह बहुत क़ीमती होता था। बादशाह का सारा लिबास इतना अच्छा और क़ीमती होता कि उसके देखने से लोगों पर काफ़ी असर पड़ता था। उनके यहाँ इन सब बातों पर बहुत रुपया ख़र्च किया जाता था; यहाँ तक कि घोड़ों का साज़ो सामान तक बहुत क़ीमती और नफ़ीस होता था और उस पर बहुत ही अच्छी क़िस्म के नक़्शोनिगार और बेल बूटे बने होते थे। इन बातों से पता चलता है कि बादशाह के चारों तरफ़ बहुत ज़्यादा दौलत होती थी और वह बहुत ही अच्छी तरह अपनी ज़िन्दगी गुज़ारते थे। बादशाहों की तस्वीर बनाने का आम रिवाज था। इन तस्वीरों को यादगार समझकर हिफ़ाज़त से शाही ख़ज़ाने में रक्खा जाता था। इन तस्वीरों से बादशाह के रहन-सहन, वज़ा और लिबास का पूरा पता चल जाता था। कुछ बड़े लोगों के पास भी बादशाह की तस्वीरें हुआ करती थीं। इन तस्वीरों का मतलब यह होता था कि बाद वाली नस्लें अपने बादशाह को याद रक्खें और भूल न जायें। बादशाह के ख़ज़ाने में दौलत का अन्दाज़ा बहुत सी बातों से होता है। उनके यहां बहुत बड़े बड़े ख़ज़ाने होते थे, जिनके मुख़्तलिफ़ नाम होते थे। ख़ुसरो दोयम के एक ख़ज़ाने का नाम था 'गंजे-बाद-आवुर्द' यानी हवा के ज़रीये से लाया हुआ ख़ज़ाना। ऐसा कहा जाता है कि एक बार रोमन बादशाह के जहाज़ों में भरा हुआ कुछ ख़ज़ाना हवा से बहता हुआ मिश्र के किनारे जा लगा और इस पर ईरान के बादशाह का क़ब्ज़ा हो गया। एक और ख़ज़ाने का नाम था 'गंजे गाव' यानी बैल के ज़रिये से मिला हुआ ख़ज़ाना। यह ख़ज़ाना किसी किसान को खेत जोतते वक़्त मिल गया था। उसमें सौ देगें सोने चांदी के सिक्कों और जवाहरात से भरी हुई थीं। कहा जाता है सिकन्दर ने इसको दफ़न कराया था। जब बादशाह ने इस ख़ज़ाने पर क़ब्ज़ा किया तो एक देग किसान को इनाम में दे दी।

यह खज़ाने बादशाह के यहां इनाम इकराम देने के काम में आते थे। कभी कभी ,खुश होकर बादशाह अच्छी ख़बर सुनाने के बदले में लोगों के मुंह जवाहरात, मोतियों और अशर्फियों से भरवा देते थे। ऐसा अर्देशीर अव्वल ने एक मोबिद (पुजारी) के साथ किया था।

बादशाह के खज़ाने और दौलत का अन्दाज़ा उस ज़माने के कालीनों से किया जा सकता है। एक कालीन ऐसा था जिस पर जन्नत के नमूने का बाग़ बना हुआ था। इस कालीन की लम्बाई ७० हाथ (१८ से २२½ इंच तक का एक हाथ होता है) और चौड़ाई ६० हाथ थी। इस कालीन में ज़मीन को सोने के रंग से दिखाया गया था और रविशों को चांदी से, हरियाली को ज़मुर्रद (पन्ने) से और नहरों को मोतियों से, दरख़्तों के फल और फूल चमकते हुये हीरों, लाल और दूसरे क़ीमती पत्थरों से बनाये गये थे। इस क़ालीन के साथ-साथ सोने का एक तख़्त और एक इतना ज़्यादा वज़नी ताज भी था कि उसे इस्तेमाल नहीं किया जा सकता था। अरबों ने जब ईरान ,फ़तह किया तो मदायन के शहर से उनको बहुत साज़ो-सामान मिला जिसमें ,खुसरो दोयम के ज़माने का बहुत कुछ था। उसके तोशेख़ाने में हर कपड़ा सोने के तारों से बना ज़रकार था और उसमें जवाहरात टके हुये थे। एक कोट था जिसका तागा सोने का था और जगह जगह लाल और मोती लगे थे। बादशाह का अपना ख़ोद और ज़िरह ख़ालिस सोने के थे। एक क़ालीन था जो तीन सौ एल लम्बा (एक एल=४५ इंच) और ६० एल चौड़ा था। इसका तागा रेशम का था और चारों तरफ़ जवाहरात से बेल बूटे बने थे। इसी तरह मदायन में मुसलमानों की फतह के वक़्त एक और क़ालीन का पता चलता है जो इतना बड़ा था कि उसका रक़बा (क्षेत्रफल) ६,००० Sq. ft. था। यह क़ालीन रेशम और सोने के तारों से बना हुआ

था और उसके एक छोटे से टुकड़े की क़ीमत ७०,००० दिरहम (१ दिरहम=१० आने=७ पेन्स) लगाई गई थी। इन सब बातों से पता चलता है कि सासानियों के यहाँ बहुत क़ीमती और पुर्तकल्लुफ़ सामान होता था और यह बहुत मालदार थे। अब भी उस ज़माने के कुछ अजूबा नमूने पाये जाते हैं जिनमें दो प्याले ख़ास तौर से ज़िक्र के क़ाबिल हैं जो पेरिस के अजायबघर में रक्खे हैं। एक में सुर्ख़ और सफ़ेद फूल बने हुये हैं और सोने के पानी से .ख़ुसरो अव्वल को एक ऐसे तख़्त पर बैठा दिखाया गया है जिसे चार परदार घोड़े उठाये हुये हैं। दूसरा प्याला चाँदी का है जिसमें .ख़ुसरो दोयम को शतरंज खेलता दिखलाया गया है।

दरबार के क़ायदे—इनके यहाँ तमाम रस्में बहुत शानदार होती थीं जिनसे शाही रोब और दबदबा टपकता था। दस्तूर और क़ायदे के मुताबिक़ बादशाह हमेशा दूर तख़्त पर, एक बड़े से हाल में क़ीमती परदों के पीछे बैठता था और बड़े से बड़े अमीर को भी इजाज़त न थी कि बग़ैर बुलाये पर्दे के अन्दर जाये और न कोई बड़े से बड़ा दरबारी ओहदेदार ही यह हिम्मत कर सकता था कि जब तक उसको बुलाया न जाय वह बादशाह तक पर्दे के अन्दर चला जाये। इस पर्दे के पास किसी अमीर के लड़के की ड्यूटी हुआ करती थी। इसे ख़ुर्रमबाश कहते थे। इसका काम होता था कि जब बादशाह किसी अमीर को अपने पास बुलाता तो .ख़ुर्रमबाश अपने किसी अमले वाले ख़ादिम को महल की छत पर भेजकर यह आवाज़ लगवाता कि फ़लाँ आदमी आज बादशाह के सामने पेश होगा उसे चाहिये कि अपनी बातचीत पर निगाह रक्खे। और जब बुलाने पर वह आदमी पर्दे के अन्दर जाता तो अपने मुँह पर एक रूमाल बाँध लेता ताकि उसकी गंदी साँस से बादशाह के पास की साफ़ हवा ख़राब न हो जाये। उसके बाद पर्दे के अन्दर जाते ही वह आदमी सिजदे में

ज़मीन पर गिर पड़ता था और उस वक़्त तक सिजदे में पड़ा रहता था जब तक उससे उठने को न कहा जाता था। इसी क़िस्म की रीतें बादशाह की दावतों और नाच गाने की महफ़िलों में भी बरती जाती थीं। सब दरबारी अदब क़ायदे से हाज़िर रहते थे और ,ख़ुसरो कभी एक गवैये को गाने का हुक्म देता था और कभी दूसरे को।

दरबारी गवैये—दरबार में गवैये की बहुत क़द्र होती थी। वह हर मौक़े पर मौजूद रहते थे यहां तक कि शिकार में भी साथ जाते थे। ,ख़ुसरो दोयम के ज़माने में जब दजले का एक बन्द बन कर तैयार हुआ तो गवैयों ने इस अवसर पर गाना गाया। एक गवैये का नाम बरबद, था। इसकी इतनी इज़्ज़त थी कि एक नाज़ुक मौक़े पर उसने तमाम दरबारियों को एक बड़ी आफ़त से बचा लिया। ,ख़ुसरो दोयम का ख़ास घोड़ा शबदेज़ नामी मर गया और किसी की यह हिम्मत न होती थी कि बादशाह तक यह बुरी ख़बर पहुँचाये। बरबद ने निहायत ग़म की आवाज़ में एक राग छेड़ा और इसके बाद जब फ़िज़ा ग़मनाक हो गई और सब पर उदासी छा गई तो यह बुरी ख़बर बादशाह तक पहुँचाई गई।

बादशाह का दरबार बहुत बड़े लम्बे चौड़े हाल में होता था जिससे बादशाह की इज़्ज़त और बड़ाई ज़ाहिर होती थी। दरबार में तीन हिस्से होते थे। सबसे आगे सरदार और अमीर तख़्त के दाहने को पर्दे से तीस फ़ीट के फ़ासले पर खड़े होते थे और इनसे तीस फ़ीट के फ़ासले पर गवर्नर और मातहत राजा खड़े होते थे और इनसे तीस फ़ीट की दूरी पर मसख़रे और गवैये वग़ैरह होते थे। बाडीगार्ड के सिपाही तख़्त के बायें को खड़े होते थे। बादशाह के दरबार का हाल कितना बड़ा होता था यह बात ऊपर बताई जा चुकी है इस तरह का एक हाल ,ख़ुसरो अव्वल ने मदायन के पास क़सरे अबयज़ (White Palace) नामी इमारत में बनवाया था जो ५५० ई० के क़रीब तैयार की गई थी। और जिसके कुछ आसार अब भी बाक़ी हैं। उस ज़माने की

एक मेहराब 'ताक़े किसरा' के नाम से मशहूर थी मगर अब यह भी बाक़ी नहीं है। इस महल के अगले हिस्से में जगह-जगह मेहराबें बनी हुई थी, मगर कोई खिड़की नहीं थी। छत में पांच या छै इंच डायामीटर वाले १५० सूराख़ बने हुये थे, जिनमे छन छन कर रोशनी अन्दर आती थी। बादशाह का तख़्त इस महल के बड़े हाल के एक कोने में रक्खा हुआ था जिस पर बादशाह बहुत रोब और दबदबे के साथ बड़े साजोसामान से बैठता था। उसके कपड़े बहुत क़ीमती और नक़्शीन होते थे और जिस वक़्त इसके सामने का पर्दा हटाया जाता तो लोगों पर इसका ऐसा ज़बरदस्त असर पड़ता था कि उसकी वजह से लोगों के सर ख़ुद बख़ुद झुक जाते थे और वह घुटनों के बल गिर पड़ते थे। बादशाह के सर पर इतना वज़नी ताज होता था कि इसको संभालने के लिये सोने की एक ज़ंजीर से वह ताज छत से लटका रहता था। जब बाहर के राजदूत बादशाह के दरबार में आते थे तो इनकी बहुत ख़ातिर की जाती थी। इनके साथ सूबे के गवर्नर और बड़े बड़े अफ़सर हुआ करते थे जो इनकी मेहमानदारी करते थे और एक बड़ा अफ़सर इस काम पर मुक़र्रर होता था कि इनकी हर बात का ख़्याल रक्खे। इसको मेहमांदार कहते थे। इस बात का बहुत ख़्याल रक्खा जाता था कि बाहर के लोग मुल्क की अन्दरुनी हालत का कुछ भी भेद न पा सकें और आमतौर से लोगों से मिलने का ज़्यादा मौक़ा नहीं दिया जाता था। ऐसा इसलिये होता था कि जब ईरान के अपने सफ़ीर (दूत) बाहर भेजे जाते थे तो उनको इस बात की ताकीद की जाती थी कि दूसरे देशों की हालत को ग़ौर से देखें कि वहां की सड़कें कैसी हैं, कुयें कितने हैं, गल्ला व चारा कितना होता है, बादशाह का क्या रंग है और उसके साथी कौन कौन और कैसे हैं। जब उनको दूसरे के बारे में इतनी खोज थी तो वह अपने बारे में ज़रूर बहुत एहतियात बरतते होंगे और इस बात की कोशिश करते होंगे कि उनके

भेदों को कोई न पा सके। जब बादशाह के सामने बाहर के सफ़ीर आते थे तो इनसे तरह-तरह के सवालात पूछे जाते थे और उन्हें बहुत इज़्ज़त से मेहमान रक्खा जाता था, दावतें होती थीं, शिकार खिलाया जाता था और ख़िलअत (Robe of Honour) या पौशाक इनाम के तौर पर दी जाती थी। आमतौर से ख़ुशी का इज़्हार बादशाह की तरफ़ से ख़िलअत देकर या ख़िताबात (Titles) देकर या कोई बड़ा ओहदा या जागर देकर हुआ करता था। यह सब किसी ऐसे काम के बदले में हुआ करता था जिससे बादशाह ख़ुश हो जाता था। अगर किसी को सर पर पहनने का Tiara दिया जाता था तो इसके यह माने होते थे कि वह शख़्स बादशाह के साथ बैठकर खाना खा सकता था और वह बादशाह की कौंसिल का मेम्बर हो जाता था चाहे वह बाहर का आदमी ही क्यों न हो। ख़िताब (Titles) इस तरह के होते थे—महिश्त (बहुत बड़ा) वहरिज़ (जनरेल) हज़ारापन (एक हज़ार का सरदार) हज़ार मर्द (एक हजार की ताक़त रखने वाला)। कभी कभी बादशाह के नाम का कोई हिस्सा भी उसमें जोड़ दिया जाता था जैसे तहम शापूर (शापूर ताक़तवर है) या जावेदहाँ .ख़ुसरो (.ख़ुसरो हमेशा रहने वाला है)। मज़हबी पेशवा को 'हमकदां' कहते यानी वह जो मज़हब की सब बातें जानता हो। इनाम के तौर पर जो कपड़े किसी को दिये जाते थे वह बादशाह के तोशेख़ाने से होते थे जहां बहुत क़ीमती सामान हुआ करता था। यह एक बहुत पुरानी रस्म थी कि किसी को कपड़े या इस्तेमाल करने का सामान दिया जाये। शापूर दोयम ने एक बार एक जनरेल को फ़र का बना हुआ लिबास दिया था जिसके साथ और भी कई चीज़ें थीं, जिनमें एक ताज, एक चार आइना, (Breast Plate), एक ख़ेमा कुछ क़ालीन और सोने के बर्तन भी थे।

बादशाह जब दरबार करते तभी आम लोगों को इस बात का

मौका मिलता कि उनके सामने आ सकते, नहीं तो बहुत कम बादशाहों के सामने आम लोग आते थे और ख़ुद बादशाह भी सबके सामने बहुत कम होते थे। जब भी दरबार होता तो वह किसी ख़ास दिन या त्यौहार पर होता था, जैसे कि नौरोज़ या मेहरेगान के दिन बादशाह दरबार करते थे। या कभी कोई बड़ी बात होती तो बादशाह दरबार करते थे तो उसमें आम लोगों के आने की इजाज़त होती, जैसे किसी बड़े अमीर आदमी का कोई मुक़दमा होता या किसी बड़े अफ़सर की जांच होती या कोई नया बादशाह गद्दी पर बैठता या कोई शादी शादी या कोई और रस्म होती या कोई ऐलान करना होता उस हालत में आम लोगों को दरबार में आने दिया जाता था मगर किसी को बादशाह के सामने मुह खोलने की हिम्मत न होती थी। एक बार ख़ुसरो अव्वल ने टैक्स में कुछ तब्दीली की और लगान के नये उसूल मुक़र्रर किये। इस मौक़े पर जैसे क़ायदा था उसने अपनी कौंसिल से इस बात को पूछा कि किसी को इस बारे में कुछ कहना तो नहीं है और दो बार सवाल करने पर जब कोई नहीं बोला तो उसने तीसरी बार फिर पूछा। इस दफ़ा एक शख़्स ने खड़े होकर बहुत अदब से कहा 'क्या यह नये टैक्स और लगान हमेशा के लिये लगाये जा रहे हैं?' यह सुनकर बादशाह बहुत ख़फ़ा हो गया और कहने लगा यह कौन बदबख़्त है, क्या इसे इतनी भी तमीज़ नहीं कि ठीक से बात कर सके और बादशाहों के सामने मुह खोलने से पहले अपनी औक़ात समझ ले? फिर उससे पूछा, 'बता किस तबक़े से तेरा ताल्लुक़ है?' उसने जवाब दिया, 'मैं मुन्शी हूँ।' बादशाह ने हुक्म दिया कि क़लमदान से मार मार कर इसे ख़त्म कर दो और ऐसा ही किया गया। इसके बाद सब लोगों ने बादशाह से कहा आपने जितने भी टैक्स लगाये हैं सब बहुत मुनासिब हैं।

बादशाह के दरबार के साथ-साथ औरतों का क्या दर्जा था इसका हाल बताना भी बहुत ज़रूरी है।

औरतों का दर्जा —वह आम तौर से अलग रहती थीं और मल्का के महलात बहुत बड़े होते थे। हज़ारों औरतें इनमें रहतीं थीं। एक ख़ास मल्का होती थी जैसे कि हुख़मंशियों का दस्तूर था। यह मल्का शाही ख़ानदान से होती थी और कभी ऐसा नहीं भी होता था। अय्याशी की वजह से बादशाह कमज़ोर हो गये थे और उनकी महल की ज़िन्दगी ऐसी हो गई थी जिस पर बहुत ख़र्च होता था और इससे सल्तनत में ख़राबी आ गई थी।

तफ़रीहत—खेल और शिकार—बादशाहों का वक्त खेल, तफ़रीह, गाना सुनने और शिकार खेलने में गुज़रता था। घर के अन्दर शतरंज खेलने का भी दस्तूर था। गाने बजाने का आम रिवाज था। हर मौक़े पर गाना होता था, यहां तक कि मुल्क जीतने और शिकार से कामयाबी हासिल करने पर भी गाना बजाना होता था। बादशाह गाने बजाने वालों को हमेशा अपने साथ रखते थे ताकि जब कोई बहादुरी दिखाई जाये तो उसे गाकर सुनाया जाये। ईरान में सूरज निकलते और डूबते वक्त जो आज भी गाना गाया जाता है वह इसी ज़माने की यादगार है। इस ज़माने के Musical Instruments ऊद (Lute) बांसुरी, सारङ्गी, दोहरी बांसुरी और बरबत (Harp) थे।

बादशाहों का ख़ास तफ़रीह का सामान शिकार होता था, जैसा कि हुख़मंशी ज़माने में भी था। यह शिकार घिरे हुये पार्कों या जगलों में खेला जाता था, जिसमें शेर, जंगली सुअर और रीछ वगैरह पले होते थे या शिकार को घेरकर किसी गोल घेरे में ले आते थे। जालदार घेरे आमतौर से बनाये जाते थे जिनके अन्दर जानवरों को हकवा करा कर लाते थे और फिर उनका शिकार करते थे। ख़ुसरौ दोयम को इस तरह शिकार करने का बहुत शौक़ था और उसके ज़माने में ऐसे पार्क या जंगल बाद तक मिलते हैं जहां कुछ रोमन सिपाहियों ने बहुत से शुतुर्मुर्ग, हिरन, गोरख़र, मोर और तीतर बल्कि शेर और चीते तक पाये। तस्वीरों और

कतबों में उस ज़माने के शिकार और दूसरे खेलों का हाल बहुत तफ़सील से दिखाया गया है। इन शिलालेखों को देखने से बहुत सी बातें मालूम होती हैं। इनसे यह पता चलता है कि किस तरह बादशाह और उसके साथी ऐसा अच्छा लिबास पहने हुये जिसमें कोट के ऊपर मोती जड़े हैं हाथ में तीर कमान लिये हुये शिकार के पीछे दौड़ रहे हैं। इनमें यह भी दिखाया गया है कि गाने वाले मर्द और औरतें शिकार खेलने वालों की दिलचस्पी के लिये बरबत (Harp) बजा रही हैं और गाना गा रही हैं।

बाज़ पालना और उनसे शिकार करना भी एक आम चीज़ थी। सासानी दरबार में बाज़ों की निगरानी करने वाला एक ख़ास बड़ा ओहदेदार हुआ करता था, जिसके मातहत एक पूरा अमला होता था। बाज़ पालने और सिखाने का एक अलग फ़न था जिसके ऊपर बहुत सी किताबें भी लिखी गई हैं। इसी तरह पोलो खेलने का भी रिवाज था इसको चौगान कहते थे। इसकी अरबी सौलेजान है। दरअसल सौलेजान हाकी या पोलो खेलने की लकड़ी को कहते हैं। इस खेल में सासानी बादशाह बहुत होशियार थे और उनकी बीवियां भी इसमें हिस्सा लेती थीं। ख़ुसरो परवेज़ अपनी बीवी शीरीं और दूसरी औरतों के साथ पोलो खेला करता था।

पुजारी और तालीम—सासानी दौर में पुजारियों को बहुत इज़्ज़त हासिल थी। इसकी वजह यह थी कि सरकारी मज़हब ज़र्तुश्ती था, ख़ुद जिसमें पुजारियों की बड़ी इज़्ज़त की जाती है। हर मामले में पुजारी का मशवरा ज़रूरी समझा जाता और उस वक़्त तक कोई बात ठीक नहीं समझी जाती थी जब तक कोई पुजारी उसको नहीं मान लेता था। इसलिये पुजारी की बड़ी क़द्र थी और उनको बड़ी बड़ी ज़मीनें जागीर के तौर पर मिली हुई थीं। आज़रबाईजान के इलाक़े में पुजारियों की ज़मींदारी बहुत थी जिससे उनकी बड़ी आमदनी होती थी। इसके

अलावा मज़हबी जुर्मानों (जिसके वुसूल करने का हक़ सिर्फ़ पुजारियों को था) और नज़रानों से उनको बहुत दौलत मिल जाती थी। पुजारियों के अपने क़ानून अलग थे और इस तरह से एक सल्तनत के अन्दर एक छोटी सी सल्तनत अलग होती थी। इन के अन्दर भी एक दर्जाबन्दी थी। सबसे नीचे मामूली पुजारी होते थे जिनको 'मुग़' कहते थे। इनके ऊपर हर्बिद होते थे जिनका काम आग की रखवाली करना होता था एक और नाम आग की रखवाली करने वालों का रस्पी भी था। फिर मोबिद होते जिनका काम दुआयें करना होता था इनको 'ज़ात' भी कहते थे। पुजारियों को तालीम देने का काम उनका एक बड़ा ओहदेदार करता था। इसको पुजारियों का गुरू कहना चाहिये। पुजारियों के अन्दर दो बड़े ओहदे हरबिदाने हरबिद और मोबिदान-मोबिद के और होते थे जिनको सब पुजारियों का सरदार कहना चाहिये। यह जो चाहते फ़ैसला करते सबको उनका हुक्म मानना पड़ता था। यह दोनों ओहदेदार बादशाह के दरबार से भी ताल्लुक़ रखते थे।

पुजारियों का ख़ास काम मन्दिरों से ताल्लुक़ रखना होता था। हुख़मंशी दौर में मन्दिर नहीं होते थे मगर सासानियों ने आतिशकदे बनवाये जहां आग की पूजा होती थी। आग को अहोरामाज़दा (पाक रब) का एक रूप मानते थे क्योंकि ज़र्तश्ती मज़हब में ख़ुदा को एक रोशनी माना गया है और उसके नूर का जलवा आग में बताया जाता है। हर घर में पूजा के लिये आग जलाई जाती थी। इसके बाद गाँव या क़बीले की आग होती थी जो घर की आग से बड़ी होती थी उसे अधेरान कहते थे। फिर पूरी जमाअत या कैन्टन की आग होती थी जिसको आतिशे बहराम कहते थे। पहली आग घर के बड़े आदमी की हिफ़ाज़त में होती थी, अधेरान के लिये दो पुजारियों की ज़रूरत पड़ती थी और आतिशे बहराम के लिये और भी ज़्यादा

सामान करना पड़ता था। इनके अलावा और भी तीन ग्राम क़िस्म की आग हुआ करती थी। पहली आग आज़रफ़रनबग कहलाती थी जो पुजारियों की आग होती थी। दूसरी आग आज़रेगुशनस्प कहलाती थी जो सिपाहियों की या सरकारी आग होती थी। और तीसरी आग बरज़िनमेहर यानी किसानों की आग कहलाती थी। इन सब आगों के अलग-अलग स्थान मुक़र्रर थे। पहली आग का स्थान फ़ार्स में किरयान नामी जगह पर था। दूसरी आग का स्थान आज़रबाईजान में गंजक नामी जगह पर था और तीसरी आग की स्थान ख़ुरासान में रावन्द पहाड़ पर था। बादशाह भी इन स्थानों की इज़्ज़त करता था। बहराम पंजुम गौर ने आज़रे गुशनस्प को बहुत से जवाहरात भेंट चढ़ाये थे। इसी तरह ख़ुसरो अव्वल ने भी किया था और ख़ुसरो दोयम ने बहुत से ज़ेवर और तोहफ़े इस पाक जगह को भेंट दिये थे। पुजारियों का काम आग को जलते रखना, सोम बूटी से पीने के लिये सोमा शर्बत तैयार करना, और दुआयें मांगते रहना होता था। वह दूसरे लोगों से गुनाहों का इक़रार सुनते, लोगों को गुनाहों से पाक करते, जुर्माने करते, बच्चा पैदा होने, कुस्ती (Ritual-Belt) पहनाने, शादी, और मौत और दूसरे ऐसे ही मौक़ों पर मज़हबी ख़िदमत अदा करते थे। चूंकि मज़हब का ताल्लुक़ ज़िन्दगी की छोटी-छोटी बातों से होता है इसलिये पुजारियों ने अपना असर जमाने के लिये तरह-तरह की बहुत सी रस्में निकाल ली थीं जिनसे यह समझा जाता था कि वह लोगों को गुनाहों से बचाते थे।

पुजारियों का विचार दूसरे मज़हब वालों की तरफ़ बहुत सख़्त होता था जिसकी वजह यह थी कि वह बहुत मज़हबी जोश रखते थे ख़ासकर ईसाइयों से जिनको वह रोमनों का हम मज़हब समझते थे और इसलिये ईरानी सल्तनत का बाग़ी और दुश्मन।

तालीम देने का काम भी पुजारी ही करते थे मगर इसका तरीक़ा क्या

था इस बात का इल्म नहीं। शरीफ और अमीर लोग पढ़ना, लिखना, गिनना, पोलो खेलना, शतरंज खेलना, या पट्टे बाज़ी करना सीखते थे। शतरंज का रिवाज ईरान में हिन्दुस्तान से आया और ख़ुसरो अव्वल के ज़माने में फैला। पुजारी खेल कूद से बिल्कुल अलग रहते थे मगर लिखना, पढ़ना और हिसाब जानना और सिखाना इनको ही आता था। गोबिद मालदारों और व्यापारियों को तालीम देते थे। पहलवी ज़बान की लिपि तरह तरह की शक्लों से बनती है जिनकी तादाद एक हज़ार से ज़्यादा है। इसे आरामी ज़बान में लिखा जाता है और फ़ारसी में पढ़ा जाता है। जैसे लिखते हैं लहमा और पढ़ते हैं नान जिसके माने हैं रोटी।

ज़बान या भाषा

सासानी ज़माने में बहुत सी भिन्न भिन्न भाषाओं का चलन था। १, पहलवी ज़बान कोई भाषा नहीं थी बल्कि एक लिपि थी। दरअसल यह सासानी ज़माने की लिपि थी। इसकी शुरुआत चौथी सदी बी.सी. में हुई थी और आख़िरी किताबें इस लिपि में नवीं सदी ई० में लिखी गईं और आखिरी दौर में इसका चलन बस इस हद तक रह गया था कि इसमें पिछली किताबों के नये नुस्ख़े (Copies) नक़ल किये जाते थे। एक ख़ास बात इस लिपि में यह थी कि जो लिखा जाता था वह पढ़ा नहीं जाता था जैसे "मल्कान मल्का" लिखते और पढ़ते शाँहशाह रोटी को "लहमा" लिखते और "नान" पढ़ते जैसे ऊपर लिखा जा चुका है। इसमें आवाज़ को बताने के लिये कुछ चिन्ह मुक़र्रर थे, उन्हीं की मदद से काम चलता था। अब ऐसे ईरानी नौकर जो लिखना नहीं जानते हैं अपना हिसाब मेंमना (Lamb) या मुर्गी या बतख़ या चावल के दानों की शक्ल बनाकर याद करते हैं। The Script was Composed of ideograms and symbols

- २. अविस्ता—ज़रतुश्ती मज़हबी किताब की ज़बान ज़िन्द थी और

इसकी शरह (Commentary) अविस्ताह ज़बान में थी। इसे अर्दशीर ने अपने ज़माने में जमा किया था मगर ज़र्तुश्ती मज़हबी किताबें ज़्यादातर पहलवी ज़बान में चालू हुईं। पहलवी ज़बान की Text को ज़िन्द और पाज़िन्द में लिखा गया है और अविस्ता इसकी शरह की सूरत है।

सचमुच पहलवी फ़ारसी ज़बान की वह पुरानी शक्ल है जो अरबी ज़बान का असर पड़ने से पहले थी। अब भी उसको लोग कुछ कुछ समझते हैं। पहलवी ज़बान का साहित्य बहुत कम है। कोई ऐसी नज़्म नहीं मिलती जिसे हम सासानी दौर की पैदावार कह सकें। Prose work ज़रूर मिलते हैं। Pahlavi Texts on Religious Subjects जैसे कि Acts of Religion या दिनकर्त, Bundahishn (Ground giving) और एक पहलवी Romance यातकारे ज़रिरान (Yatkar-i-Zariran) जो ५०० ई० में लिखी गई। यह सासानी दौर की पैदावार है। इससे शाहनामे के लिखने में मदद ली गई। इसके अलावा कारनामके अर-तख़्श-तर-पापकाँ (The deeds of Ardshir Papakan) है जिसका अनुवाद जर्मन भाषा में Noldeke ने किया है। यह किताब ६०० ई० के क़रीब लिखी गई थी। दूसरी और किताबें सीसतान के अजायबात पर या शतरंज के खेल पर लिखी गई थीं।

मालियात--(Revenue) सासानी ज़माने में आमदनी का ख़ास ज़रिया मालगुज़ारी थी जिसको ख़राग (Kharag) या ख़िराज कहते थे। यह आरामी ज़बान का लफ़्ज़ है। दूसरा ज़रिया जिज़्या (Gezit=Poll Tax) था जिसकी सूरत यह थी कि पूरी सालाना आमदनी एक इलाक़े की तै की जाती थी और तमाम टैक्स देने वालों पर इसकी क़िस्तें बनाकर इसको लगा दिया जाता था कि हर शख़्स अपना-अपना इतना-इतना हिस्सा दे। इसी तरह मालगुज़ारी

को भी हर एक पर बांट दिया जाता था। हर इलाक़े या कैन्टन की मालगुज़ारी फ़स्ल के अनुसार होती थी जिसका हिसाब यों होता था कि पैदावार के छठे हिस्से से लेकर तीसरा हिस्सा सरकार ले लेती थी और इसको ज़मीन की उपज के हिसाब से मुक़र्रर किया जाता था। कुछ लोगों का कहना है कि इसका हिसाब पैदावार के दसवें हिस्से से लेकर आधे हिस्से तक होता था। लगान लगाने में खेत और शहर के बीच की दूरी को भी ध्यान में रखते थे।

जिज़या बच्चों, औरतों और बूढ़ों से नहीं लिया जाता था और ऐसे लोगों से भी नहीं लिया जाता था जो किसी और तरह का टैक्स देते हों। ज़्यादातर इस टैक्स को देने वाले ग़ैर ज़र्तुश्ती होते थे जिनके पास ज़मीनें नहीं होती थीं और जिनका मज़हब सरकारी मज़हब के अलावा कोई और मज़हब जैसे ईसाई या यहूदी होता था।

ख़ुसरो अव्वल के ज़माने में मालियात के सिलसिले में बहुत काम हुआ और उसने नया बन्दोबस्त जारी किया। दरअस्ल उसके बाप क़ुबाद के ज़माने में यह काम शुरू हुआ था और ज़मीन की पैमाइश (Survey) का यह काम ख़ुसरो ने ख़तम कराया था। उसके बाद ख़ुसरो दोयम ने ६०७ ई० में तमाम महसूलों और टैक्सों का तख़मीना कराया जिसकी कुल रक़म का जोड़ साठ लाख दिरहम हुआ। यह ख़ास बात है कि पूर्व के देशों में हमेशा इस बारे में कोई ठीक उसूल न हो सका कि हर शख़्स को कितना लगान और महसूल देना चाहिये और इस वजह से हमेशा नारवादारी हुई और बराबर का सुलूक न हो सका। एक बार शापूर दोयम ने अपने अफ़सरों को हुक्म दिया था कि वह रिआया से ज़्यादा से ज़्यादा टैक्स वसूल करें ताकि रोमनों के ख़िलाफ़ लड़ाई लड़ी जा सके। यह टैक्स ईसाइयों से और भी ज़्यादा लिया जाता था और चूंकि रिआया बादशाह को ख़ुदा का साया समझती थी इसलिये उसके हर हुक्म को रिआया आमतौर से बड़ी ख़ुशी से मानती

थी और बादशाह अपने सख़्त से सख़्त हुक्म को ज़बरदस्ती मनवा कर छोड़ते थे। यह सुलूक हर मज़हब और नस्ल के लोगों के साथ किया जाता था।

किसानों को इजाज़त न थी कि पके हुये फल और तैयार फ़स्ल को उस वक़्त तक हाथ लगा सकें जब तक कि सरकारी महसूल अदा न हो जाये और महसूल लगाने वाले अफ़सर और टैक्स इंस्पेक्टर पूरी फ़स्ल का हिसाब लगा कर टैक्स वसूल न कर लें। कभी-कभी तो यह लोग इतनी देर से पहुंचते थे कि फ़स्ल ख़राब हो जाती थी और किसानों का बड़ा नुक़्सान होता था। ऐसे सख़्त क़ानून और जगह भी थे जैसा कि उन्नीसवीं सदी में उस्मानिया दौर की तुर्की में होता था कि जब तक सरकारी अफ़सर न पहुचतें ग़ल्ला खलयान में पड़ा सड़ता और तूफ़ान आते जिनसे सारी फ़स्ल और पैदावार बर्बाद हो जाती थी।

क़ुबाद ने ईरान में लगान के पुराने तरीक़े को बदलना चाहा मगर इस काम में कामयाबी नौशेरवां को हुई। इसके ज़माने में पूरी ज़मीन को नापा गया और ज़मीन का एक नाप जरीब (Garib) के नाम से मुक़र्रर किया गया। यह नाप लगभग आधे एकड़ के बराबर होता था। इस नाप के अनुसार हर साल गेहूँ और जौ की सूरत में एक दिरहम फ़ी जरीब, अंगूर की सूरत में आठ दिरहम फ़ी जरीब, लूसर्न घास की सूरत में सात दिरहम फ़ी जरीब (लूसर्न घास घोड़ों को चारे में दी जाती थी), चावल की सूरत में पाँच दिरहम फ़ी जरीब महसूल लिया जाता था। खजूर और ज़ैतून की सूरत में महसूल फ़ी दरख़्त अलग अलग लिया जाता था और अगर यह दरख़्त एक बाग की सूरत में न होते तो इन पर कोई महसूल नहीं लिया जाता था अगरचे इस नये तरीक़े में भी बहुत सी ख़राबियाँ और कमियाँ थीं मगर फिर भी आम-लोगों को इससे बहुत फ़ायेदा पहुचाँ। शायद इसी वजह से नौशेरवां का इतना नाम हुआ और इसको आदिल यानी इन्साफ़ करने वाला

कहा गया। इसके जमाने में जिज़्ये के सिलसिले में भी कुछ तब्दीली की गई। यह टैक्स सिर्फ़ ऐसे आदमियों से लिया जाता था जो २० वर्ष से लेकर २५ वर्ष की उम्र के होते थे और २० वर्ष से कम या २५ वर्ष से ज़्यादा उम्र वाले लोगों से यह महसूल नहीं लिया जाता था। फिर लोगों की आमदनी देखते हुये भी इस महसूल को तीन अलग अलग दर या शरह से लिया जाता था। सबसे ऊँचे तबके से १८ दिरहम, दूसरे तबक़े से ८ या ६ दिरहम और आमलोगों से ४ दिरहम लिये जाते थे। और यह सब टैक्स सरकारी खज़ाने में हर तीसरे महीने जमा किया जाता था। अमीर लोग, सिपाही, पुजारी, कातिब (सेक्रेटरी) और दूसरे सब सरकारी ओहदेदार इस टैक्स से बरी (Exempt) थे। हर इलाक़े के जज का यह काम होता था कि वह इन बातों पर अमल करे और देखे कि सरकारी हुक्म की तालीम की जाती है या नहीं। इन बाक़ायदा टैक्सों के अलावा आम लोग और बहुत से मौक़ों पर तरह-तरह के नज़राने (भेंट) देते थे जिनको आईन कहते थे। यह नज़राने या तोहफ़े साल के दो त्योहारों—नौरोज़ और मेहरेजान के मौक़े पर जरूर दिये जाते थे। और भी दूसरे मौक़े या अवसर ऐसे होते थे जब ऐसे नज़राने लिये जाते थे। महसूल और नज़राने बहुत सख़्ती से वुसूल किये जाते थे फिर भी रिआया पर बहुत सा बक़ाया रह जाता था जिसे बादशाह जब उसका दिल चाहता किसी मुनासिब मौक़े पर माफ़ कर देता था जैसे कि बहराम पंजुम (गोर) ने तख़्त पर बैठने के वक़्त पूरा बक़ाया लगान और सब टैक्स माफ़ कर दिये थे और अपनी गद्दी नशीनी के पहिले साल तमाम टैक्सों को तिहाई कर दिया था। फ़ीरोज़ के ज़माने में जब क़हत पड़ा तो उसने रिआया को तमाम लगान, जिज़्या, बेगार, और दूसरी ऐसी बातों से जो उनके लिये बोझ थीं, बरी (Exempt) कर दिया था।

अदालत और इन्साफ़—जजों की बहुत इज़्ज़त थी। अदालत का

अफ़सर या जज ख़ास-ख़ास ख़ानदानों के लोगों को बनाया जाता था। अमीरों के दरम्यान जो झगड़े हुआ करते थे उनका फ़ैसला करने वाले जज भी ख़ास होते थे वैसे आमतौर से जज का ओहदा पुजारियों के लिये ख़ास (Reserved) था और वही उस पर मुकर्रर किये जाते थे। हर इलाक़े (कैन्टन) का एक अलग जज होता था। गाँव का मुखिया जिसको दहक़ान (दह=गाँव+क़ान या ख़ान=सरदार या मुखिया) भी कहते थे पंच या जज का काम करता था। वैसे कुछ अलग अफ़सर भी इस काम के लिये होते थे। फ़ौज के जज बिलकुल अलग होते थे।

ईरान के लोग क़ानून का बड़ा ख़्याल करते थे और इसे तोड़ने से बहुत डरते थे। बग़ावत करने वालों या फ़ौज से भाग जाने वालों के लिये बहुत सख़्त क़ानून होते थे जिनसे लोग डरते थे क्योंकि इनसे काफ़ी तकलीफ़ पहुँचाई जा सकती थी। कभी-कभी किसी ख़ानदान के एक आदमी के जुर्म की वजह से पूरा ख़ानदान सज़ा पा जाता था। ऐसा पुरानी रीति और चलन की वजह से था कि किसी एक आदमी की बुराई की सज़ा सबसे पहले पूरे क़बीले और फिर उस अपराधी के ख़ानदान के आदमियों को दी जाती थी। तीन क़िस्म के जुर्मों की सज़ा ख़ास थी और यह तीनों जुर्म अलग अलग क़िस्म के समझे जाते थे। पहले ख़ुदा के ख़िलाफ़ जो जुर्म या गुनाह किया जाये जैसे कोई आदमी अपने मज़हब से फिर जाये। दूसरे बादशाह के ख़िलाफ़ जो जुर्म हों जैसे बग़ावत या ग़ैर वफ़ादारी यानी बादशाह को न मानना या लड़ाई में मैदान छोड़कर भाग जाना और तीसरे अपने पड़ोसी के ख़िलाफ़ जुर्म करना जब कि एक आदमी दूसरे को नुक़सान पहुँचाये या उसका हक़ छीने। शुरू में क़ानून बहुत सख़्त होते थे। ख़ुदा और बादशाह के ख़िलाफ़ जुर्मों की सज़ा मौत होती थी और तीसरे क़िस्म के जुर्मों की सज़ा सज़ाये मिस्ल (Talion) होती थी यानी इतनी ही सज़ा दी जाती थी जितना कि नुक़सान

हुआ हो। इस सज़ा में हरजाना दिलाया जाता था, नुकसान पूरा कराया जाता था या बराबर की सज़ा दिलाई जाती थी। खुसरो अव्वल के ज़माने में सज़ाओं में कुछ कमी कर दी गई थी। जो लोग ख़ुदा से फिर जाते थे उनको दहरिया या नास्तिक कहते थे। ऐसे लोगों को साल भर तक क़ैद रक्खा जाता था और उनसे सवाल जवाब करके उन्हें क़ायल किया जाता था और अगर वह तोबा कर लेते तो उनको छुड़ दिया जाता था। बादशाह के ख़िलाफ़ जुर्मों की सूरत में ऐसी सज़ायें दी जाती थीं जिनसे दूसरों को सबक़ मिले और उन्हें देखकर दूसरे लोग डरें और उनसे मिसाल लें। पड़ोसियों के ख़िलाफ़ जुर्मों की सज़ा जुर्माने करके दी जाती थी या अपराधी के हाथ पांव काट डाले जाते थे। चोरी करना बहुत आम था। दीनकर्त (Acts of Religion) के अनुसार यह हुक्म था कि जब कोई आदमी चोरी करता पकड़ा जाये तो जो माल उसने चुराया हो उसे उसकी गर्दन में लटकाकर जज के सामने ले जातें थे और फिर उसे जेल में डाल दिया जाता था और उतनी ही भारी ज़ंजीर में उसे बांधा जाता था जितनी बड़ी उसकी चोरी होती थी। सज़ा पाने पर उसको क़ैद कर दिया जाता था और कभी कभी फांसी भी दे दी जाती थी। मुक़दमें के फ़ैसलों में महीनों लग जाते थे मगर क़ैद का यह ज़माना सज़ा में कम नहीं किया जाता था और न इस क़ैद को काफ़ी सज़ा ही समझा जाता था इस तरह से इस क़ैद के ज़माने को यह समझा जाता था कि इतने दिनों अपराधी को, जो ख़तरनाक आदमी था, आम लोगों से अलग कर दिया गया था। शाही क़ैदख़ाना जिसका नाम बाद में क़स्रउल मौत (Castle of Oblivion) हो गया था और जो जुन्देशापूर के पास बना हुआ था उसका नाम तक बादशाह के सामने लेना मना था क्योंकि उसके ख़्याल से इतनी तकलीफ़ होती थी कि रोंगटे खड़े हो जाते थे। बादशाह के सामने अच्छी बातों के सिवा बुरी चीज़ का नाम लेना भी अच्छा न समझा जाता था।

सज़ायें देते थे, कभी कभी सूबे के हाकिमों या गवर्नरों के सुपुर्द भी यह काम कर दिया जाता था। एक बार एक मोबिदेआला को मज़हब बदलने पर सज़ा देने के लिये गोदाम के एक इन्सपेक्टर से कहा गया। एक और दफ़ा एक शहज़ादे को सज़ा देने के लिये एक ऐसे ख़्वाजासरा के सुपुर्द किया गया जो पूरी सल्तनत के सब हाथियों का अफ़सर था। इस तरह से सज़ा दिलाने का मतलब यह होता था कि सज़ा पाने वाला अपनी ज़िल्लत और तौहीन को पूरी तरह महसूस करे जैसा कि ऊपर एक मोबिदेआला को सज़ा देने के बारे में लिखा गया है कि उसे एक गोदाम के अफ़सर के सुपुर्द किया गया मगर उस छोटे ओहदेदार ने इस काम को करना अपने लिये मुनासिब न समझा और उसके इनकार करने पर बादशाह ने ख़ुद उस मोबिदेआला को यह सज़ा दी कि उसे एक बहुत दूर रेगिस्तान में ले जाकर अकेला छोड़ दिया गया जहाँ वह भूखों मर गया।

कभी कभी मुलज़िम से जुर्म क़बुलवाने के लिये भी ऐसी ही सख़्त सज़ायें दी जाती थीं और इस सिलसिले में इनको आग तक में से गुज़ारना पड़ता था।

अदालत का सबसे बड़ा हाकिम बादशाह समझा जाता था और उसी ही की तरफ़ से अदालत के सब काम होते थे। यह भी उसका फ़र्ज़ होता था कि रिआया के साथ उनके हालात सुन कर उनका इंसाफ़ करे और जो भी उनकी तकलीफ़ें हों उनको दूर करे। कभी कभी ऐसा भी होता कि बादशाह घोड़े पर सवार होकर एक ऊँचे चबूतरे पर खड़ा हो जाता और नीचे रिआया खड़ी होती थी और जो भी कोई ज़ुल्म की शिकायत करता उसकी शिकायत दूर की जाती थी। शुरू के सासानी बादशाहों ने आम दरबार किये और साल में दो मौक़ों पर यानी मौसमे बाहर में और जाड़े के शुरू में जिनको नौरोज़ और मेहरजान कहते हैं बड़े छोटे सब लोग दरबार में आते थे। इसका ऐलान

कुछ दिन पहले से सूबों पीट कर किया जाता था ताकि सबको ख़बर हो जाये और दरबार वाले दिन एक ऐलान करने वाला (Herald) इस बात का ऐलान करता था कि आज के दिन किसी को दरबार में आने से नहीं रोका जायेगा। यज़्दगिर्द अव्वल या यज़्दगिर्द दोयम ने इस रस्म को ख़तम कर दिया था। इसमें कोई शक नहीं कि सासानी ख़ानदान के बहुत से बादशाहों को अदलोइन्साफ़ करने का ख़याल रहता था और वह हमेशा अमीरों और सूबे के गवर्नरों पर कड़ी निगरानी करते थे और अगर उनसे कोई जुर्म या बुराई होती तो उसको जड़ से दूर कर देते थे।

ख़ानदान और उसमें जायदाद का बटवारा—समाज की बुनियाद ख़ानदान और जायदात के ऊपर थी। आमतौर से एक मर्द की बहुत सी बीवियां हुआ करती थीं। इसके अलावा ईरान में लौंडियाँ रखने का भी रिवाज था। इनको ख़रीदते थे या उन्हें जंग में पकड़ लाते थे। बीवी को शौहर का हर बात में कहना मानना पड़ता था और वह उनकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कोई भी काम नहीं कर सकती थी मगर फिर भी ईरान में औरत की इज़्ज़त पूरब के सब देशों से कहीं ज़्यादा थी।

शादी विवाह छोटी ही उम्र में हो जाते थे मंगनियां बहुत ही बचपन में हो जाती थीं। दीनकर्त के अनुसार मर्दों को १५ साल की उम्र में शादी करने की सलाह दी गई है। शादी के मामले में क़रीबी रिश्ते दारों के बीच जिन्हें ख़ौतिकदास कहते रिश्ते हुआ करते थे, यानी बहुत क़रीबी अज़ीज़ों की आपस में शादी हो जाती थी। ऐसी शादियों को और बहुत सी जगह बुरा और हराम बताया गया है। इनको अंग्रेज़ी में Incestuous Marriages कहते हैं।

शादी के यह पुराने क़ायदे उस ज़माने में ईरान के अलावा कई और जगह भी पाये जाते थे। ईरान में, फ़िरदौसी के कहने के मुताबिक़,

जैसे बहमन बादशाह ने अपनी बहन हुमाये से शादी की, इसी तरह मिश्र में भी कई पुराने बादशाहों के बारे में, जिनको फराएना (Pharaohs) कहते हैं, यह बताया जाता है कि उन्होंने अपनी बहनों, बल्कि माँ और बेटियों तक से शादियाँ कीं। ख़ुद इस्लाम से पहले अरब देश में बद्दू लोग ऐसे रिश्ते करते थे और उस समाज में इस बात को बुरा नहीं समझा जाता था। बल्कि यह ख़याल था कि ऐसा करने से बड़े फ़ायदे होते हैं। बाद में यह ख़यालात बदल गये और दूसरे लोगों ने ऐसी शादियों को बहुत नफ़रत से देखा। ईरानी मज़हब में नये नये फिरक़े निकले जिसमें एक मज़्दक का था। इसके मातहत लोगों में ग़लत तालीम फैल गई थी और समाज की हालत बहुत बिगड़ गई थी। कम्यूनिज़्म (Communism) के ख़्यालात पैदा होने लगे थे जिसकी वजह से लोगों के ज़ाती अधिकार पर बहुत असर पड़ा और मज़हब और समाज के बारे में पुराने उसूल बदल गये। हर चीज में सबका साझा होने लगा। कोई चीज़ किसी की अपनी बाक़ी नहीं रही यहाँ तक कि औरत भी। नूसरौ अव्वल के ज़माने में इस बुराई को रोका गया और जो जायदादें, दूसरी ख़ास चीज़ें या इन लोगों से छीन लिये गये थे उनको जो जिसका था उसे वापस करा दिया गया। मज़्दक ने शादी के रिश्ते को ख़तम करके औरत मर्द दोनों को बहुत आज़ादी दे दी थी और आपस के जिन्सी ताल्लुक़ात बहुत आज़ादी से हुआ करते थे (There was Community of Women) जिसकी वजह से बहुत से नाजायज़ बच्चे पैदा होते थे और उनको उस ख़ानदान का मेम्बर समझा जाता जहाँ वह पैदा होते थे और अगर वह बाप जिनके वह बच्चे कहलाये जाते थे उन्हें अपना मान लेते तो वह जायदाद पाने के हक़दार हो जाते थे। जब नूसरौ अव्वल ने मज़्दकी बुराइयों को रोका तो ब्याही हुई औरतों को उनके शौहरों को वापस करा दिया और जो क्वारी औरतें थीं उन्होंने या तो ऐसे आदमियों

कुछ दिन पहले से डुग्गी पीट कर दिया जाता था ताकि सबको ख़बर हो जाये और दरबार वाले दिन एक ऐलान करने वाला (Herald) इस बात का ऐलान करता था कि आज के दिन किसी को दरबार में आने से नहीं रोका जायेगा। यज़्दगिर्द अव्वल या यज़्दगिर्द दोयम ने इस रस्म को ख़तम कर दिया था। इसमें कोई शक नहीं कि सासानी ख़ानदान के बहुत से बादशाहों को अद्लोइन्साफ़ करने का ख़्याल रहता था और वह हमेशा अमीरों और सूबे के गवर्नरों पर कड़ी निगरानी करते थे और अगर उनसे कोई जुर्म या बुराई होती तो उसको जड़ से दूर कर देते थे।

ख़ानदान और उसमें जायदाद का बटवारा—समाज की बुनियाद ख़ानदान और जायदाद के ऊपर थी। आमतौर से एक मर्द की बहुत सी बीवियां हुआ करती थीं। इनके अलावा ईरान में लौंडियाँ रखने का भी रिवाज था। इनको ख़रीदते थे या उन्हें जंग में पकड़ लाते थे। बीवी को शौहर का हर बात में कहना मानना पड़ता था और वह उनकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कोई भी काम नहीं कर सकती थी मगर फिर भी ईरान में औरत की इज़्ज़त पूरब के सब देशों से कहीं ज़्यादा थी।

शादी बियाह छोटी ही उम्र में हो जाते थे मंगनियां बहुत ही बचपन में हो जाती थीं। दीनकर्द के अनुसार मर्दों को १५ साल की उम्र में शादी करने की सलाह दी गई है। शादी के मामले में क़रीबी रिश्ते दारों के बीच जिन्हें ख़्वैतिकदास कहते रिश्ते हुआ करते थे, यानी बहुत क़रीबी अज़ीज़ों की आपस में शादी हो जाती थी। ऐसी शादियों को और बहुत सी जगह बुरा और हराम बताया गया है। इनको अंग्रेज़ी में Incestuous Marriages कहते हैं।

शादी के यह पुराने क़ायदे उस ज़माने में ईरान के अलावा कई और जगह भी पाये जाते थे। ईरान में, फ़िरदौसी के कहने के अनुसार,

जैसे बहमन बादशाह ने अपनी बहन हुमाये से शादी की, इसी तरह मिश्र में भी कई पुराने बादशाहों के बारे में, जिनको फराएना (Pharaohs) कहते हैं, यह बताया जाता है कि उन्होंने अपनी बहनों, बल्कि माँ और बेटियों तक से शादियाँ कीं। ख़ुद इस्लाम से पहले अरब देश में बहु लोग ऐसे रिश्ते करते थे और उस समाज में इस बात को बुरा नहीं समझा जाता था। बल्कि यह ख़्याल था कि ऐसा करने से बड़े फायदे होते हैं। बाद में यह ख़्यालात बदल गये और दूसरे लोगों ने ऐसी शादियों को बहुत नफ़रत से देखा। ईरानी मज़हब में नये नये फ़िरक़े निकले जिसमें एक मज़दक का था। इसके मातहत लोगों में गलत तालीम फैल गई थी और समाज की हालत बहुत बिगड़ गई थी। कम्यूनिज़्म (Communism) के ख़्यालात पैदा होने लगे थे जिसकी वजह से लोगों के ज़ाती अधिकार पर बहुत असर पड़ा और मज़हब और समाज के बारे में पुराने उसूल बदल गये। हर चीज़ में सबका साझा होने लगा। कोई चीज़ किसी की अपनी बाक़ी नहीं रही यहाँ तक कि औरत भी। नुसरौ अव्वल के ज़माने में इस बुराई को रोका गया और जो जायदादें, दूसरी ख़ास चीज़ें या हक़ लोगों से छीन लिये गये थे उनको जो जिसका था उसे वापस करा दिया गया। मज़दक ने शादी के रिश्ते को ख़तम करके औरत मर्द दोनों को बहुत आज़ादी दे दी थी और आपस के जिन्सी ताल्लुक़ात बहुत आज़ादी से हुआ करते थे (There was Community of Women) जिसकी वजह से बहुत से नाजायज़ बच्चे पैदा होते थे और उनको उस ख़ानदान का मेम्बर समझा जाता जहाँ वह पैदा होते थे और अगर वह बाप जिनके वह बच्चे कहलाये जाते थे उन्हें अपना मान लेते तो वह जायदाद पाने के हक़दार हो जाते थे। जब नुसरौ अव्वल ने मज़दकी बुराइयों को रोका तो ब्याही हुई औरतों को उनके शौहरों को वापस करा दिया और जो कुंवारी औरतें थीं उन्होंने पाने के [illegible] में

को शौहर चुन लिया जिनके साथ वह रहने लगी थीं या किसी और के साथ उनकी शादी कर दी गई।

हर औरत को उसकी शादी का हक़ (Marriage Present) दिलाया गया। अमीरों के ऐसे बच्चे जिनके माँ बाप का पता न था बादशाह की निगरानी में आ गये और उनको दरबार के कामों में लगा दिया गया जब वह शादी के क़ाबिल हो गये तो उनको इतनी दौलत दी गई कि जिससे वह शादी कर सकें और अच्छी तरह रह सकें। लड़कियों को सरकारी तौर से दहेज़ का सामान दिया गया और इस तरह से अमीरों का एक नया तबक़ा पैदा हुआ।

शादी के क़ायदे जो पुराने ज़माने में चले आ रहे थे उनका कोई एक दर्रा नहीं था फिर भी पांच क़िस्म की शादियां हुआ करती थीं १ औरत अपने माँ बाप की मर्ज़ी से शादी करती थी और जो बच्चे हुआ करते थे वह उसके शौहर के इस दुनियां में भी और दूसरी दुनियां में भी कहलाते थे। ऐसी औरत 'पादशाहज़न' यानी ख़ास हक़ रखने वाली (Privileged) औरत कहलाती थी।

२. जिस औरत के सिर्फ़ एक औलाद होती इसको 'ओवगज़न' कहते यानी एक बच्चे वाली बीवी। इस बच्चे को उस ख़ानदान में दे दिया जाता था जहां से यह औरत आती थी यानी औरत के माँ बाप को, ताकि यह औलाद वहाँ से जो लड़की आई थी उसकी जगह ले ले और इसके बाद इस बीवी की हालत भी पहली बीवी यानी 'पादशाहज़न' जैसी हो जाती थी।

३. अगर कोई आदमी शादी की उम्र तक पहुँच कर बगैर शादी किये मर जाता और इसके ख़ानदान वाले किसी औरत को दहेज़ देते और इसकी शादी किसी ग़ैर मर्द से करा देते तो यह औरत 'सधरज़न' कहलाती यानी मांगे की या (Adopted) बीवी। इसकी आधी औलाद मरे हुये आदमी की कहलाती और समझी जाती थी और

यह समझा जाता था कि यह औरत दूसरी दुनिया में उसकी बीवी होगी और बाक़ी आधी औलाद ज़िन्दा शौहर की समझी जाती थी।

४. कोई बेवह जो फिर से शादी करती इसे 'चाग़रज़न' कहते थे यानी नौकरानी या लौंडी के दर्जे वाली बीवी। अगर इसके पहले शौहर से कोई औलाद न होती तो इसको 'लेपालक' (Adopted) बीवी समझा जाता था और दूसरे शौहर से जो औलाद होती थी इसमें से आधी औलाद पहले शौहर की समझी जाती और यह समझा जाता कि दूसरी दुनिया में वह उसकी बीवी बनेगी।

५. जो औरत अपने माँ बाप की मर्ज़ी बग़ैर शादी करती थी इसका दर्जा सबसे कम होता था। इसको '.ख़ुद्सरायज़न' कहते यानी ऐसी औरत जिसने अपना घर .ख़ुद बनाया हो। यह इस वक़्त तक अपने माँ बाप से कोई हिस्सा नहीं पाती थी जब तक इसका सबसे बड़ा लड़का बालिग़ न हो जाता और वह .ख़ुद इस औरत को एक हक़दार (Privileged) बीवी की तरह .ख़ुद अपने बाप को पेश न करता था। इससे यह मालूम होता है कि ऐसी शादी बहुत बुरी समझी जाती थी और यह रस्म उसको रोकने के लिये थी।

मोल लेकर शादी करने का भी रिवाज था मगर यह चीज़ बाद में रस्मी होकर रह गई थी। ऐसी सूरत में होने वाला शौहर लड़की के माँ बाप को एक मुक़र्रर रक़म या कोई और सामान उतने ही दामों का दे देता था। इस शादी का ख़ास मतलब औलाद पैदा करना होता था और अगर इससे औलाद न होती तो बीवी का .क़ुसूर समझा जाता और पूरी रक़म या उसमें से कुछ हिस्सा वापस हो जाता था।

बच्चा पैदा होने पर कुछ रस्में अदा की जाती थीं और बच्चे को बहुत से तोहफ़े दिये जाते थे। ख़ासकर अगर लड़का पैदा होता था तो बहुत .ख़ुशी मनाई जाती थी। बच्चे का नाम रखते वक़्त इस बात का ख़्याल रखते थे कि उसका नाम ग़ैर मज़हब वालों जैसा न हो,

हालतपर ऐसे लोगों जैसा न हो जो एक .ख़ुदा को छोड़कर बहुत से .ख़ुदाओं को मानते हैं। औलाद को हमेशा अपने बाप का हुक्म मानना पड़ता था और अगर वह ऐसा न करती तो इसका जो हक़ जायदाद में होता वह उसकी माँ को मिल जाता था, अगर वह भी इस क़ाबिल समझी जाती, वरना नहीं। छोटे बच्चों को सात साल की उम्र तक ख़ुद माँ तालीम देती अगर वह मर जाती तो बाप की बहन या .ख़ुद बच्चों की जवान बहन यह काम करती थी। लड़की माँ के साथ रहती थी मगर शादी के मामले में उसके बाप की रज़ामंदी ज़रूरी होती थी और जैसे ही वह शादी के क़ाबिल हो जाती थी बाप का फ़र्ज़ होता था कि वह उसकी शादी कर दे। अगर वह पहले मर जाता तो लड़की की शादी करने का हक़ 'पादशाहज़न' को मिल जाता था और इसके बाद क़ानूनी सरपरस्त को। .ख़ुद लड़की अपना शौहर कभी नहीं चुन सकती थी और अगर ऐसा करती थी तो वह '.ख़ुदसरायज़न' कहलाती थी जिसका हाल ऊपर आ चुका है और ऐसी शादी का दर्जा सब शादियों से गिरा हुआ समझा जाता था।

ख़ानदान की परवरिश और नाम चलाने के लिये बदले की शादी (Marriage by Substitution) का रिवाज था। अगर किसी मर्द के लड़का (Male child) न होता और वह बेवह छोड़कर मर जाता तो उस बेवह की शादी किसी क़रीबी रिश्तेदार से कर दी जाती थी और अगर बेवह भी न होती तो कोई क़रीबी रिश्तेदार मरे हुये मर्द की लड़की या इसके किसी और क़रीबी रिश्ते की औरत से शादी कर लेता था और इन दोनों सूरतों में से किसी भी सूरत में इस नई शादी से जो औलाद पैदा होती इसे मरे हुये आदमी की औलाद समझा जाता था। अगर उस मरे हुये मर्द के ख़ानदान में कोई औरत शादी के क़ाबिल न होती तो मरे हुये आदमी के माल से किसी औरत को ख़रीदा जाता और फिर उस औरत से उस ख़ानदान का

कोई भी आदमी या रिश्तेदार शादी कर लेता था और इस शादी से अगर कोई लड़का (Male child) पैदा होता तो उसे उस मरे हुये मर्द की औलाद माना जाता था और उससे ख़ानदान चलता था।

गोद लेना—गोद लेने का क़ायदा बहुत सख़्त था और उसमें बहुत सी पाबन्दियाँ थीं। अगर कोई आदमी किसी ऐसे बालिग़ लड़के को छोड़े बग़ैर मर जाता जो उसकी जगह ले सके तो नाबालिग़ औलाद को किसी और शख़्स या गोद लिये हुये लड़के की निगरानी में दे दिया जाता था और अगर मरे हुये आदमी की कोई जायदाद या माल होता तो उसका इन्तिज़ाम भी इसको दे दिया जाता था। अगर कोई 'पादेशाहज़न' होती तो वह गोद लिये हुये लड़के की निगरानी में या इसके नाम से काम संभालती थी। अगर सिर्फ़ 'चागरज़न' होती तो इसका दर्जा नाबालिग़ों जैसा होता था और इस सूरत में निगरानी का काम इस औरत के बाप को दिया जाता था। अगर वह ज़िन्दा नहीं होता तो उस औरत का भाई या और कोई दूसरा क़रीबी रिश्तेदार यह काम करता था। अगर कोई 'पादेशाहज़न' न होती और औलाद में सिर्फ़ लड़की (Female Child) होती तो गोद लिये हुये लड़के की निगरानी का काम करने वाले के भाई, बहन, भाई के लड़के, लड़की या किसी और क़रीब रिश्तेदार को करना पड़ता था।

हर गोद लिये जाने वाले लड़के के लिये ज़रूरी था कि वह बालिग़ हो, ज़रतश्ती मज़हब रखता हो, समझदार हो, इसका ख़ानदान बड़ा हो (यानी इसके कई भाई हों) और इसने कोई बड़ा गुनाह न किया हो। औरत को भी लड़के की तरह गोद लिया जाता था और अगर किसी औरत को यह काम दिया जाता तो न तो उसे शौहरवाली होना चाहिये था और न उसे शौहर करने की ख़्वाहिश हो होना चाहिये थी। न वह कभी किसी की लौंडी रही होती, न उसने रंडी का पेशा किया होता और न किसी दूसरे ख़ानदान में गोद ली गई होती—यानी

निगरानी करने का काम करती होती। क्यों कि औरत सिर्फ़ एक ही खानदान में गोद ली जा सकती थी और मर्द बहुत से खानदानों में बिला किसी रोक टोक के गोद लिया जा सकता था।

जायदाद का बटवारा—*ऐसे मुआयेना करने वाले* Supervisors मुकर्रर थे जिनका काम विरासत (बटवारे) के क़ानून की देख भाल और उनको पूरा कराना होता था। यह लोग पुजारियों में से होते थे क्योंकि मोबिदों का यह फ़र्ज़ था कि मरे हुये लोगों की जायदाद को उनके रिश्तेदारों में बटवायें और अगर मरे हुये आदमी की कोई जायदाद न होती तो इनका काम यह होता कि उसके जनाज़े की रस्में अदा करें और बच्चों की निगरानी करें। साथ ही साथ उनके भविष्य के बारे में कुछ इन्तिज़ाम करें। ऐसी जायदाद या माल के बारे में पहले से तै कर लिया जाता था जो एक से ज़्यादा वारिसों का होता था। जिन वारिसों का जायज़ हक़ होता था उनका यह हक़ उनसे कोई छीन नहीं सकता था सिवाय इस सूरत के जबकि उन्हें कोई क़र्ज़ देना हो या बीवी, बच्चों, बाप या किसी ऐसे बूढ़े आदमी की परवरिश करना हो जो मरे हुये शख़्स पर आसरा रखता हो और उसके सहारे हो। ऐसी सूरत में किसी के हक़ में से भी हिस्सा निकाला जा सकता था। वसीयत करते वक़्त मरने वाले को यह ख़्याल करना पड़ता था कि अपनी बग़ैर ब्याही लड़की के लिये एक हिस्सा और 'पादेशाहज़न' के लिये दो हिस्से पहले से अलग निकाल दे।

सनअत और तिजारत—(Industries and Trade) देश की कला या सनअत और व्यापार यानी तिजारत बढ़ा हुआ था जिससे दौलत बढ़ी और लोग आराम से ज़िन्दगी बसर करने लगे। कपड़े की सनअत (Industry) बहुत तरक्की पर थी। बहुत से ऐसे कपड़े जिनमें सजावट के लिये तरह तरह के फूल और नये नये नमूने बने होते थे ईरान से योरप लाये जाते थे और इनको गिरजाघरों के अन्दर पवित्र

और पाक चीज़ें (Sacred Relics) लपेटने के लिये इस्तेमाल किया जाता था। कपड़े के बड़े-बड़े कारखाने तब्रेज़, शता, रै और मर्व जैसे बड़े-बड़े ईरानी शहरों में पाये जाते थे। जाड़ों के कपड़े परों को भरकर बनते थे। ऐसे कपड़े भी बनाते थे जिनको मोटा करने के लिये रेशम और ऊन अन्दर भर दिया जाता था। रेशम हिन्दुस्तान से समन्दर के ज़रिये आता था और ख़ुश्की का रास्ता मध्य एशिया होता हुआ आता था। इसका ताल्लुक़ चीन से भी था जहाँ रेशम बहुत ज़्यादा पैदा होता था। ईरान से अबरू (भौं) रँगने की क़ीमती स्याही या सुरमा चीन तक जाता था जिसे वहाँ की मलका के महल में बहुत क़द्र की नज़र से देखा जाता था। बाबुल की बनी चीज़ें भी चीन में बहुत क़ीमत रखती थीं जैसे कालीन या और सामान। शाम के जवाहरात, Red Sea के *मूँगे और मोती और मिस्र के कपड़े चीन तक तिजारती क़ाफ़िलों या* कारवानों (Caravans) के ज़रिये जाते थे। यह सब जगहें जिनका ज़िक्र ऊपर आया ईरान की बड़ी सल्तनत में शामिल थीं। ईरान जिन मुल्कों को लड़ाई में जीत लेता था वहाँ के बन्दी लोगों को बहुत दूर जगहों को भेजा जाता था जैसे सूसियाना वग़ैरह। यह बात ईरान ने असीरिया की सल्तनत से सीखी थी। शापूर अव्वल ने जुन्देशापुर में एक नौआबादी (Colony) क़ायम की थी जहाँ रोमन फ़ौज के इन्जीनियरों ने जो बन्दी थे शाहंशाह के लिये एक बांध बनाया था। शापूर दोयम ने दयारेबक्र के क़ैदियों को सूसियाना के दो शहरों सूसा और शूश्त्र में बांटा था जहां यह लोग तरह-तरह के रेशमी और सुनहरे कपड़े जैसे कमख़ाब, ज़रबफ़्त (Brocade) वग़ैरह तैयार करते थे।

सासानी दौर की फ़न्नी तरक़्क़ी और इमारतें
(Art and Architecture)

सासानियों में सरूस और दारायें आज़म की तरह अपने ज़माने

में बहुत गारवी की यादगारें बड़े तरह से छोड़ीं। सबसे ज़्यादा मशहूर यादगार सासानी ज़माने की इमारतें हैं। यह इमारतें अब बहुत ख़स्ता और टूटी फूटी हालत में हैं और सिवाये ख़ास लोगों के जो इमारत के फन से वाक़िफ़ हों जैसे Archaeologist और दूसरे आम लोगों के लिये उनमें दिलचस्पी का सामान कम है। उत्तरी ईरान में बहुत कम इमारतें पाई जाती हैं। मगर फ़ार्स या दक्खिनी ईरान में या मैसोपुटामिया की सरहद पर बहुत सी इमारतों के खंडहर हैं और ख़ासकर मदायन (Ctesiphon) और हथरा (Hatra) के पास उसके बहुत से नमूने मिलते हैं। मदायन जो दजले और फ़रात की घाटी में है ईरानी सल्तनत की राजधानी था। पुराने सासानी महल सब यकसां बने हैं। इमारतें Rectangular और Oblong बनी हैं और पूर्व से पच्छिम का ओर को इनकी लम्बाई फैली हुई है। बीच में एक मेहराब होती थी। अब भी ईरानी इमारतों में यह बात पाई जाती है। कमरे चौकोर होते थे और इनके ऊपर गुम्बद होते थे। एक कमरे से दूसरे कमरे को रास्ता जाता था। इमारत एक-मंज़िली होती थी। आंगन का होना ज़रूरी था। इमारत की सजावट ताक़ों, कारनसों और चौकोर खम्भों से की जाती थी जैसा कि हथरा की इमारतों से पता चलता है।

फीरोज़ाबाद का महल—शीराज़ के दक्खिन और पूर्व में जूर का मुक़ाम है जिसे फ़ीरोज़ाबाद भी कहते हैं। यहां सासानी ज़माने का सबसे पुराना महल है जो तीसरी सदी ईसवी में बनाया गया था। यहाँ कई हाल और मेहराबें हैं और इमारतों पर ईरान के सबसे पुराने गुम्बद पाये जाते हैं। पास ही सर्विस्तान का महल है। यह फ़ीरोज़ाबाद के महल से मिलता-जुलता है। एक और इमारत "ताक़े किसरा" नौशेरवां के ज़माने की है। यहाँ से बादशाह सोने के तख़्त पर बैठकर अपनी रिआया को दर्शन देता था। यह बहुत ही अजीबो ग़रीब

इमारत है। इसे सासानी ज़माने की एक बहुत बड़ी यादगार समझा जाता है। इसका बहुत सा हिस्सा अब भी बाक़ी है जिसकी बनावट बहुत उम्दा है और इसमें सजावट का काम बहुत ज़्यादा है। यह इमारत दरियाये दजला के पास बगदाद से कुछ नीचे को बनी है। इसके पास ही सलमान फ़ार्सी की क़ब्र है जिसे आजकल सलमान-पाक कहते हैं। इस पुरानी इमारत के सामने की दीवार अब भी खड़ी है। इसके पीछे एक ऐवान के आसार हैं जो कुछ दिन हुये जलजले में गिर गया था। इस इमारत में बड़ी सफ़ेद ईंटें इस्तेमाल की गई हैं। इस ऐवान के चारों तरफ़ आठ और छोटे-छोटे हाल थे जिनमें एक से दूसरे को रास्ता जाता था। यहां की मेहराबें आधी गोलाई में बनी हुई हैं मगर कहीं-कहीं नोकदार मेहराबें भी हैं।

क़सरे शीरीं—ख़ुसरो परवेज़ की बीवी के नाम का यह महल सातवीं सदी ई० की इमारत है। यह दूसरे महलों से बड़ा है। इसके चारों तरफ़ एक पार्क था जिसकी चहारदीवारी के आसार अब भी बाक़ी हैं। इसका रक़बा ३०० एकड़ था। अनार और खजूरों के पेड़ों के झुन्ड अब तक यहां पाये जाते हैं जिससे किसी बाग़ के होने का पता चलता है। यहां पानी का एक झरना भी था। अन्दर इमारत में बहुत से खम्भे थे। छतें लकड़ी की थीं। यह इमारतें हख़ामंशी दौर की इस्तख़ वाली इमारतों से कम दर्जे की हैं।

मशीता महल—इसे भी ख़ुसरो परवेज़ ने बनवाया था। यह ख़ुसरो के महल से छोटा था। मगर इसकी बनावट बहुत अच्छी थी और इसमें सजावट भी ज़्यादा थी। जगह-जगह फूल पत्तियों के नक्श पत्थरों में खोदे गये थे। इस काम में बाज़िनतीनी असर झलकता है और इसके अलावा जानवरों की तस्वीरें भी थीं। यह इमारत ख़ुसरो के काम में ज़्यादा न था सकी क्योंकि ईरान से बहुत दूरी पर थी।

नक़्शे रुस्तम—इस में जो कारीगरी पाई जाती है वह

दौर के कमाल का बेहतरीन नमूना है। यह सासानियों की जीत की यादगारें हैं जो पत्थर की चट्टानों पर खुदी हुई हैं। यह यादगारें तादाद में सात हैं और इनमें भी तीसरी या चौथी तस्वीर सबसे ज़्यादा ख़ास है इन सात तस्वीरों में अलग अलग सीन हैं जिनमें से हर एक का हाल नीचे दिया जाता है :—

(१) दो घुड़सवार शाही लिबास पहने आपस में अपने ताज बदल रहे हैं। एक के हाथ में ताज है और दूसरे का हाथ आगे फैला हुआ है। पहला कोई बादशाह मालूम होता है जिसकी पहचान उसके हाथ में जो 'असा (Sceptre) है उससे होती है। दूसरे आदमी के पीछे एक आदमी खड़ा मोरछल हिला रहा है।

(२) इसमें तीन शक्लें हैं। दो आदमी सीधी तरफ़ खड़े हैं इन लोगों की शक्ल तस्वीर नम्बर (१) में दी हुई शक्लों जैसी है और मोरछल हिलाने वाले की जगह एक देवता की शक्ल है जिसके हाथ में एक असा (Sceptre) है। यह देवता एक फूल पर खड़े हैं और इनका लिबास भी शाही है।

(३) यह तस्वीर नम्बर (१) के दाहनी तरफ़ है। इसमें शापूर अव्वल की रोमनों पर फ़तह दिखाई गई है और पहलवी ज़बान में इस पर बहुत कुछ लिखा है जो फ़तह की यादगार में है। साइक्स ने इस तस्वीर को चौथा नम्बर दिया है जैसा कि उसने बयान किया है कि इसमें सासानी बादशाह शापुर ने जब रोमन बादशाह (Valerian) को हराया था इस फ़तह का सीन दिखाया गया है। यह शिलालेख या नक़्श (Panel) ३५½' लम्बा और १६' चौड़ा है। यह ज़मीन से चार फ़ीट की ऊंचाई पर है। बीच से शापूर को घोड़े पर बैठा दिखाया गया है। इसके सामने रोमन क़ैदी लाये जा रहे हैं जिनमें रोमन बादशाह भी है। यह जीत सन २६० ई: में हुई थी।

(४) इसमें बादशाह अपने अफ़सरों से बात चीत कर रहा है जो एक जंगले के पीछे खड़े हैं। इसके सर का निशान बहराम दोयम जैसा है।

(५) इस में कुछ सिपाही घोड़ों पर बैठे लड़ रहे हैं।

(६) इसमें एक बादशाह, एक मलका, एक बच्चा और एक अफ़सर दिखाये गये हैं। बादशाह और मलका बच्चे को ताज पहना रहे हैं।

(७) इसमें शापूर को घोड़े पर सवार दिखाया गया है।

इनके अलावा एक दो नक़्श और हैं जो नक़्शे रुस्तम के सामने एक छोटे गोल दायरे में बने हुये हैं। इन सब तस्वीरों से उस ज़माने की कल्चर का पता चलता है। इन सब में सासानी बादशाहों के चेहरे मोहरे और दूसरी बातों को बहुत सफ़ाई से दिखाया गया है। तीसरे या चौथे नम्बर की तस्वीर में दिखाया गया है कि बादशाह के बाल बहुत घने हैं, सर पर ताज है और इस पर एक Globe या कुर्रा बना हुआ है जो गेंद की तरह गोल है, दा.ने में गिरह लगी है, गले में जवाहरात का हार है, तलवार के दस्ते पर, घोड़े की दुम में और खुद बादशाह के पीछे चँवरनुमा झालर लगी हुई है जो सासानी निशान है, बदन के निचले हिस्से में शलवार या पैजामा है, बायें हाथ में तलवार है और दाहिना हाथ क़ैदियों की तरह बढ़ रहा है, रोमन बादशाह घुटनों के बल खड़ा है और रहम के लिये गिड़गिड़ा रहा है, इसके सर पर एक माला लिपटी है और हाथ पाव में बेड़ियाँ हैं। इसी तरह दूसरे नक़्शों में से किसी में लड़ाई का सीन है या सासानी बादशाहों के दरबार का सीन है। सबसे पुराना नक़्श अर्दशीर की तस्वीर का है जो घोड़े पर सवार है और उसके साथ हुर्मुज़्द या अहोरा माज़्दा की तस्वीर है जो अर्दशीर को कुछ दे रहा है। अर्दशीर का पाव अर्दवान की लाश पर है।

ख़ुसरो परवेज़ के शिकार के सीन

ताक़ेबुस्तान—इसके माने हैं बाग वाली मेहराबें। यह किरमान-

शाह के पास है और इसमें दो बड़े ताक़ या मेहराबें बनी हैं जो पहाड़ में काटी गई हैं और .खुसरौ के ज़माने की यादगार हैं। सबसे बड़ी की नाप ३०' लम्बाई में, और गहराई चौड़ाई में २२' है। बाहर एक हिलाल (Crescent) बना है। यह यूनानी कारीगरों का काम मालूम होता है। इसमें हिरन और जंगली सुअर के शिकार का सीन दिखाया गया है। हाथी हकुआ करके जालदार घेरे में शिकार को ला रहे हैं और बादशाह शिकार कर रहा है। साथ ही गाने वाली औरतों की तस्वीर है जो बरबत बजा रही हैं और दूसरे गवैये भी हैं जो गाना गा रहे हैं और शिकार की कामियाबी पर .खुशी के राग अलाप रहे हैं। जंगली सुअर के शिकार की तस्वीर में हाथी हकुआ कर रहे हैं और बादशाह एक किश्ती पर से शिकार कर रहा है। गाने वाले यहां भी हैं और किश्तियों पर बैठे हैं। एक कोने में मरे सुअर दिखाये गये हैं जो साफ़ किये जाने के बाद हाथियों पर लादे जा रहे हैं।

इन तस्वीरों में जो लिबास दिखाया गया है उससे उस ज़माने के कपड़ा बुनने वालों की सनअत का पता चलता है। बादशाह के कपड़ों पर परदार सांपों के निशान हैं जिसके चारों तरफ़ ताज बने हैं एक और नमूना ऐसा है जिसमें ताज के अन्दर हिलाल (Crescent) बना है। इमारत की मेहराब बहुत ज़्यादा सजावटदार है, इसमें रोमन और यूनानी असर बहुत मालूम होता है मगर पता चलता है कि काम बनाने वाले बहुत ज़्यादा अच्छे और होशियार कारीगर नहीं थे। इन मेहराबों में कई आदमी और दिखाये गये हैं जिनमें से दो खड़े हैं और तीसरा ज़मीन में पड़ा है और उसके सीने पर खड़े हुये आदमियों के पांव हैं। इसमें कोई लिखावट नहीं है जिससे मालूम हो कि यह किस ज़माने के हैं मगर इनके पहनावे, चेहरे-मोहरे और दूसरी बातों से साफ़ पता चलता है कि यह सासानी बादशाहों की तस्वीरें हैं। इस यादगार में सबसे ज़्यादा दिलचस्प यह

हिस्सा है जिसे पत्थरों के अन्दर काटकर बनाया गया है। बाहर की मेहराब में Victory को आदमी के रूप में दिखाया है और उसको देवता बनाने के लिये उसमें पर लगा दिये हैं। इस यादगार के अन्दर की मेहराब में जो २० फ़ीट चौड़ी है कुछ और मूर्तियां बनी हैं जिनके साथ शापूर अव्वल के ज़माने की कुछ लिखावट भी पाई जाती है। इन मूर्तियों की तस्वीर के नीचे एक और तस्वीर है जिसमें एक आदमी घोड़े पर सवार दिखाया गया है। यह आदमी ख़ुसरौ दोयम परवेज़ समझा जाता है, मगर इसका कोई सुबूत नहीं है। यह मूर्ती बहुत ख़ास है और ग़ौर से देखने से इनसान पर एक असर पड़ता है कि यह शक्ल एक ऐसे सिपाही की है जिसने रोमनों को हराया और शाम, यरूशलम और मिस्र को फ़तह किया था। आदमी और घोड़ा दोनों हथियार से सजे हैं। सिपाही के सिर पर नोकदार ख़ोद है और उसका पूरा बदन लोहे की ज़िरह से ढका हुआ है और उसके घोड़े पर भी ज़िरह पड़ी हुई है। सिपाही के पास तलवार और तीर हैं मगर उसकी वह कमंद नज़र नहीं आती है जिससे ईरानी सिपाही अपने दुश्मन को घोड़े से खींचकर गिरा लेते थे।

शापूर अव्वल की मूर्ति पूरी नहीं है बल्कि कुछ टूट गई है। इसे एक बड़े पत्थर में से काटा गया था। यह चार फ़ीट ऊँचे चबूतरे पर खड़ी थी। अब वहां उसके सिर्फ़ पांव रह गये हैं और मूर्ति टूटकर नीचे गिर गई है। इसको इस टूटी फूटी हालत में भी पहचाना जा सकता है कि वह शापूर अव्वल की है। यह इसी बादशाह के नाम के शहर "जुन्देशापूर" के पास है।

सासानी ज़माने के सुनारों का चाँदी का काम

तीन तश्तरियां ऐसी पाई जाती हैं जिनसे उस ज़माने के सुनारों के काम का नमूना मिलता है। एक में बहराम गौर के शिकार का सीन

शाह के पास है और इसमें दो बड़े ताक़ या मेहराबें बनी हैं जो पहाड़ में काटी गई हैं और .खुसरो के ज़माने की यादगार हैं। सबसे बड़ी की नाप ३०' लम्बाई में, और गहराई चौड़ाई में २२' है। बाहर एक हिलाल (Crescent) बना है। यह यूनानी कारीगरों का काम मालूम होता है। इसमें हिरन और जंगली सुअर के शिकार का सीन दिखाया गया है। हाथी इकुआ करके आलदार घेरे में शिकार को ला रहे हैं और बादशाह शिकार कर रहा है। साथ ही गाने वाली औरतों की तस्वीर है जो बरबत बजा रही हैं और दूसरे गवैये भी हैं जो गाना गा रहे हैं और शिकार की कामियाबी पर .खुशी के राग अलाप रहे हैं। जंगली सुअर के शिकार की तस्वीर में हाथी हकुआ कर रहे हैं और बादशाह एक किश्ती पर से शिकार कर रहा है। गाने वाले यहां भी हैं और किश्तियों पर बैठे हैं। एक कोने में मरे सुअर दिखाये गये हैं जो साफ़ किये जाने के बाद हाथियों पर लादे जा रहे हैं।

इन तस्वीरों में जो लिबास दिखाया गया है उससे उस ज़माने के कपड़ा बुनने वालों की समझत का पता चलता है। बादशाह के कपड़ों पर परदार सांपों के निशान हैं जिसके चारों तरफ़ ताज बने हैं एक और नमूना ऐसा है जिसमें ताज के अन्दर हिलाल (Crescent) बना है। इमारत की मेहराब बहुत ज़्यादा सजावटदार है, इसमें रोमन और यूनानी असर बहुत मालूम होता है मगर पता चलता है कि काम बनाने वाले बहुत ज़्यादा अच्छे और होशियार कारीगर नहीं थे। इन मेहराबों में कई आदमी और दिखाये गये हैं जिनमें से दो खड़े हैं और तीसरा ज़मीन में पड़ा है और उसके सीने पर खड़े हुये आदमियों के पांव हैं। इसमें कोई लिखावट नहीं है जिससे मालूम हो कि यह किस ज़माने के हैं मगर इनके पहनावे, चेहरे मोहरे और दूसरी बातों से साफ़ पता चलता है कि यह सासानी बादशाहों की तस्वीरें हैं। इस यादगार में सबसे ज़्यादा दिलचस्प यह

हिस्सा है जिसे पत्थरों के अन्दर काटकर बनाया गया है। बाहर की मेहराब में Victory को आदमी के रूप में दिखाया है और उसको देवता बनाने के लिये उसमें पर लगा दिये हैं। इस यादगार के अन्दर की मेहराब में जो २० फ़ीट चौड़ी है कुछ और मूर्तियां बनी हैं जिनके साथ शापूर अव्वल के ज़माने की कुछ लिखावट भी पाई जाती है। इन मूर्तियों की तस्वीर के नीचे एक और तस्वीर है जिसमें एक आदमी घोड़े पर सवार दिखाया गया है। यह आदमी ख़ुसरो दोयम परवेज़ समझा जाता है, मगर इसका कोई सुबूत नहीं है। यह मूर्ती बहुत खास है और गौर से देखने से इनसान पर एक असर पड़ता है कि यह शख़्स एक ऐसे सिपाही की है जिसने रोमनों को हराया और शाम, यरूशलम और मिस्र को फ़तह किया था। आदमी और घोड़ा दोनों हथियार से सजे हैं। सिपाही के सिर पर नोकदार ख़ोद है और उसका पूरा बदन लोहे की ज़िरह से ढका हुआ है और उसके घोड़े पर भी ज़िरह पड़ी हुई है। सिपाही के पास तलवार और तीर है मगर उसकी वह कमंद नज़र नहीं आती है जिससे ईरानी सिपाही अपने दुश्मन को घोड़े से खींचकर गिरा लेते थे।

शापूर अव्वल की मूर्ति पूरी नहीं है बल्कि कुछ टूट गई है। इसे एक बड़े पत्थर में से काटा गया था। यह चार फ़ीट ऊँचे चबूतरे पर खड़ी था। अब यहां उसके सिर्फ़ पांव रह गये हैं और मूर्ति टूटकर नीचे गिर गई है। इसको इस टूटी फूटी हालत में भी पहचाना जा सकता है कि यह शापूर अव्वल की है। यह इसी बादशाह के नाम के शहर "नुन्दशापूर" के पास है।

सासानी ज़माने के सुनारों का चाँदी का काम

तीन तश्तरियां ऐसी पाई जाती हैं जिनसे इस ज़माने के सुनारों के काम का नमूना मिलता है। एक में बहराम गौर के शिकार का

है। उसे शेर का शिकार करते दिखाया गया है। दूसरी में शापूर दोयम हिरन का शिकार कर रहा है। बादशाहों की पहचान इनके सरों के ताजों से होती है। हर बादशाह का ताज दूसरे के ताज से अलग है। तीसरी तस्वीर में एक बहुत बड़े शिकार का सीन है जिसमें बहुत से शेर, सुअर और जंगली भेड़ें दिखाई गई हैं। यह काम बहुत अच्छा है क्योंकि इसके अन्दर जो तस्वीरें बनी हैं इनको चाँदी में ढाला नहीं गया है बल्कि अलग अलग तस्वीरें बना कर उन्हें आपस में जोड़ दिया गया है।

इन सब मूर्तियों, तस्वीरों और सुनारों के काम को देखने से सासानी बादशाहों की शानशौकत ज़ाहिर होती है। शिकार के सीन देखने से पता चलता है कि बादशाहों का लिबास बहुत उम्दा होता था और इनके घोड़े और घोड़ों का साज़ोसामान देखनेवाला होता था। सासानी दौर की यह यादगारें ईरान की क़ौमी बरतरी (National Superiority) का सुबूत है।

समाप्त